धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक

शाश्वत धर्म

जनवरी-2016 | संस्थापक-श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. | हिन्दी मासिक

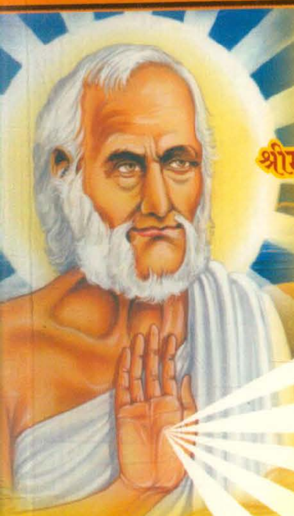

दादा गुरूदेव
श्रीमद् राजेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा.

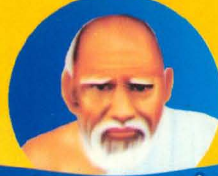

आचार्यश्री धनचंद्रसूरीश्वरजी म.सा.

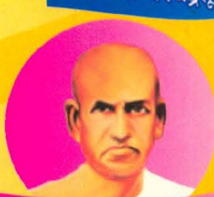

आचार्यश्री भूपेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

आचार्यश्री यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

पाट परम्परा का प्रद्योत

वर्तमानाचार्यश्री जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा.

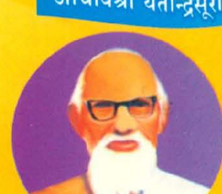

आचार्यश्री विद्याचंद्रसूरीश्वरजी म.सा.

दिशादर्शक-धर्म चक्रवर्ती राष्ट्रसंत गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.

युग प्रभावक सुविशाल गच्छाधिपति राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के सान्निध्य में शासन प्रभावना के कार्यक्रम

- गुरु सप्तमी महोत्सव पालीताना में शनिवार 16 जनवरी 2016
- पालीताना से बागरा राजस्थान के लिए विहार 30 जनवरी 2016
- गुरुदेवश्री 10 फरवरी को बागरा पहुँचेंगे-बागरा स्थित जिनालय के शताब्दी उत्सव को निश्रा प्रदान करेगें ।

विशिष्ट सहयोगी

1. श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी जैन ट्रस्ट, चैन्नई (तमिलनाडु)
2. श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट मंडल, विजयवाड़ा (आंध्रप्रदेश)
3. श्री सांचा सुमतिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मदुराई (तमिलनाडु)
4. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, त्रिचनापल्ली (तमिलनाडु)
5. श्री सुविधिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मैसूर (कर्नाटक)
6. श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्र जैन श्वे. ट्रस्ट, गुंण्टुर (आंध्रप्रदेश)
7. श्री राजेन्द्र सूरि जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट, सायला (राजस्थान)
8. श्री सायला जैन श्रीसंघ, सायला (राजस्थान)
9. श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक संघ नारोली (ता. थराद, गुजरात)
10. श्री शंखेश्वर पार्श्व राजेन्द्र जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, दावणगेरे (कर्नाटक)

श्री राजेन्द्रसूरि कीर्ति मन्दिर तीर्थ ट्रस्ट

हमारे गौरव

ट्रस्टीगण महाप्रभावक गुम्मीलेरू तीर्थ

राजस्थान

राष्ट्रसंत श्री के पूज्य माता-पिता
स्वरूपचंदजी धरू एवं पार्वतीदेवी

जैन रत्न श्री गगलदासभाई
हालचंदभाई संघवी, अहमदाबाद

शा. तगराजजी जेठमलजी हिराणी
रेवतड़ा, बैंगलोर

शा. किशोरचंदजी खिमावत
खिमेल, मुम्बई

शा. जेठमलजी लादाजी चौधरी
गढसिवाणा, बैंगलोर

शा. मिश्रीमलजी उकाजी सालेचा
धाणसा, बैंगलोर

संघवी सांकलचंदजी इन्द्रजी वेदमुथा
बैंगलोर

श्री शांतिलालजी रामाणी
गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शा. माणकचंदजी छोगाजी बालर
बैंगलोर

शा. हजारीमलजी गजाजी बंदामुथा

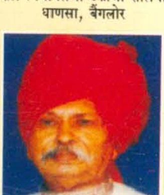
मांगीलालजी शेषमलजी रामाणी
गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शंकरलालजी आईदानजी गांधी
नेल्लोर

चंपालालजी बालचंदजी चरली

श्री घेवरचंदजी एल. जोगानी, मुम्बई
भीनमाल

श्री शेषमलजी गुलाबचंदजी जैन
बागरा

हमारे गौरव

श्री हीराचंदजी कानाजी गुंटुर (सियाणावाला)

श्री लालचंदजी सोनाजी संघवी धाणसा (राज.) विजयवाड़ा

स्व. सोलंकी चन्दनमलजी हीराजी आहोर विजयवाड़ा

श्री शांतिलालजी सोलंकी जालोर विजयवाड़ा

श्रीमती मोसंबीबाई पति स्व.श्रीचम्पालालजी तखतगढ, मुम्बई

श्री बाबूलालजी गुण्टूर

कबदी जीतमलजी कुंदनमलजी सायला

भंडारी वस्तीमलजी खीमाजी विजयवाड़ा, आहोर

शा. रिखबचंदजी सरूपाजी सोफाडीया, रेवतडा

भंडारी पीरचंदजी केवलचंदजी बागरा

स्व. शा ओटमलजी गोराजी वेदमुथा, रेवतडा

शा. पारसमलजी हस्तीमलजी भंडारी, सायला

स्व. शा. गुमानमलजी धुकाजी मोदी, धानसा

मुथा उदयचंदजी जवाजी धाणसा

शा पुखराजजी फूलचंदजी दुरगानी, मोदरा, विजयवाड़ा

शा. घेवरचंदजी हंजाजी संघवी, धाणसा

शा. सरेमलजी गेनाजी सियाणा, विजयवाड़ा

शा. छगनराजजी मांडोत गुन्टुर

शा मोहनलालजी गोवानी चोराऊ

शाा. नरसाजी आसाजी बाफणा कोरा (राज.)

शा प्रतापचंदजी किसनाजी कटारिया संघवी अमरसर, सरत

शा. कालूचंदजी हंजाजी सकलेचा

शा. दरगचंदजी हरकाजी सकलेचा

स्व. श्री मिश्रीमलजी भंडारी

शा. उत्तमचंदजी दरगाजी सकलेचा

अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद
– उद्देश्य –
समाज संगठन, धार्मिक शिक्षा प्रचार
समाज सुधार, आर्थिक विकास

32124

हमारे गौरव

शा. नरेन्द्रकुमारजी रायकचंदजी पोरवाल
बागरा

श्री चंदनमलजी जेठमलजी
बागरा

श्री सुखाराजजी केसाजी
मेंगलवा

श्री रतनचंदजी कुन्दनमलजी
मेंगलवा

श्री नथमलजी खुमाजी
बागरा

श्री जेठमलजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री सांवलचंदजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री दूधमलजी मानकचंदजी
मेंगलवा

श्री बाबुलालजी सरेमलजी
मोदरा

श्री छगनराजजी भानाजी गांधी
सियाना

शा.सुमेरमलजी वरदीचंदजी वाणीगोता
आहोर (राज.)

श्री संघवी मानमलजी बीरमाजी
दादाल

श्री कांतिलालजी मूलचंदजी नानावत
आहोर

शा. उकचंदजी हिमताजी हिराणी
रेवतड़ा

शा. ओपचंदजी जवाजी ओस्तवाल
सायला

श्री एम. फूलचंदजी शाह
दावणगिरी

शा. मोडमलजी जोईताजी बाफना
थलवाड नेल्लोर

मुथा थानमलजी कानाजी
आहोर विजयवाड़ा

स्व. सुखराजजी पिताजी कटारिया
संघवी धाणवसा विजयवाड़ा

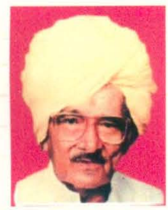
संघवी भेरमलजी जेठाजी
मारवाड में अमरसर (सरत) विजयवाड़ा

सेठ भगराजजी कुनणमलजी
सांचोर

शा. फुलचन्दजी सुखराजजी गांधी
सियाणा यादगीरी

श्री राणमलजी हिमताजी
दादाल

श्री पुखराजजी नेकाजी कटारिया
संघवी, घानसा

सा सांवलचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

हमारे गौरव

स्व.सा तिलोकचन्दजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा नरसीगमलजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा पुखराजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा परकचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता अमरसर (सरत)

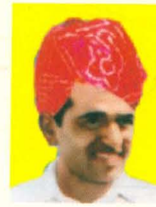

संघवी शा. मिश्रीमलजी विनाजी
पटियाल धाणसा/बैंगलोर

श्री फुलचन्दजी सांकलचन्दजी
कोशेलाव

डूंगरचंदजी सोलंकी
सायला (राज.)

मीठालाल मनोहरलालजी झोरा
दाघाल-कोयम्बतूर

श्री उम्मेदमलजी हरकचंदजी
बाफना, पाँथेड़ी

श्री भंवरलालजी कुन्दनमलजी
संघवी, मोदरा (राज.)

पातीबाई वस्तीमलजी
कबदी, सायला

श्री ओटमलजी वर्धन
सायला

श्री जुगराजजी नाथाजी कबदी
सायला

श्री हेमराजजी कबदी
सायला

श्री हस्तीमलजी गांधीमूथा
सायला

श्री घेवरचंदजी गांधीमूथा
सायला

श्री चम्पालालजी गांधीमूथा
सायला

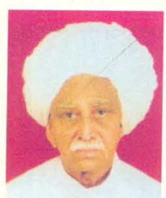

शा. धर्मचंदजी मिश्रीमलजी संघवी
आलासन

श्री देशमलजी सरेमलजी
मोदरा/बैंगलोर

शा. श्री स्व. हीराचन्द
फुलाजी गांव चुरा

श्रीमती पवनीदेवी दूधमलजी
कबदी, सायला

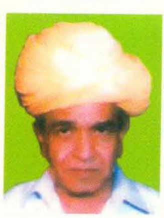

श्री दूधमलजी पूनमचंदजी
कबदी, सायला

श्री हस्तीमलजी केवलचन्दजी
फोलामुथा, सायला

श्री रमेशभाई हरण
भीनमाल, राजस्थान

श्री उगमराजजी तौलचंदजी
कटारिया संघवी, धानसा (हैदराबाद)

अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद
- उद्देश्य -
समाज संगठन, धार्मिक शिक्षा प्रचार
समाज सुधार, आर्थिक विकास

हमारे गौरव

शा. खुशालचंदजी गेबाजी
डामराणी मेंगलवा (हैदराबाद)

शा. जावंतराजजी
पाथेडी

शा. बगराजजी नरसाजी
झोटा, दाधाल

भंवरलालजी कानुगा
जालोर

श्री तिलोचन्दजी झोटा
(हैदराबाद)

सत्रु अग्रवाल
जालोर

पुखराजजी समताजी
गांधीमुथा, सायला

धर्मचंदजी चंदाजी
नानेसा, आकोली

गुजरात

वोरा अमृतलालजी डुंगरजी
अहमदाबाद

शा. तिलोकचंदजी चुन्नीलालजी छाजेड़
नैनावा

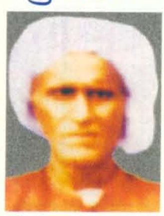
वोरा चिमनलालजी नथुचंदभाई

मोरखिया मणिलाल प्रेमचंदभाई
मुम्बई

श्री बाबूलालजी नाथाजी भंसाली
दाहोद

श्री चिमनलालजी पीताम्बरदासजी
देसाई

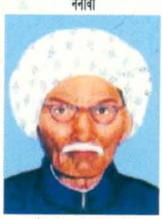
वेदलीया हालचंद भाई
भाणजी भाई, भोरडुवाला, डीसा

संघवी मुलचन्द भाई
त्रिभुवनदास, थराद

महाजनी ताराबेन
भोगीलाल सरूपचन्द, थराद

देसाई छोटालाल अमूलख भाई

संघवी धुड़ालाल अमृतलाल
(वकील)

शाह श्री राजमल भाई डूंगरजी भाई
थराद

संघवी श्री हीरालालजी कागजीभाई
थराद (लाटीवाला)

देसाई श्री हालचंदजी उजमचंदजी
थराद

श्री नरपतलाल वीरचंदजी संघवी
थराद

हमारे गौरव

वोहरा श्री प्रेमचंदभाई जीतमल भाई
थराद

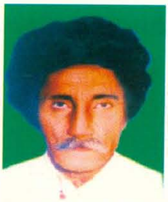
संघवी चिमनलाल खेमचंद
थराद

संघवी पूनमचंद खेमचंद
थराद

संघवी वीरचंद हठीचंद
थराद

श्री पुखराजजी ओरा
थराद

वोहेरा श्री माणकलाल
भूदरमल दूधवा (गुज.)

मोरखीया अमृतलालजी
चुन्नीलाल लाखणी

दलपतभाई खेमचंद
महाजनी

श्री मफतलालजी हंसराज
वारिया, (वड़गामड़ा) डीसा

अदाणी अमृतलाल
मोहनलाल थराद

श्री चन्दूमल मफतलालजी
वोहेरा, दुधवा (गुजरात)

मध्यप्रदेश

श्री शांतिलालजी भंडारी
झाबुआ

श्री मदनलालजी सुराना
रतलाम

श्री इन्दरमलजी दसेड़ा
जावरा

स्व.मणिलालजी पुराणिक
कुक्षी

स्व. समरथमलजी तल्लेरा
कर्मड़वाला, उज्जैन

श्री सुजानमलजी जैन
राणापुर (म.प्र.)

संघ शिरोमणी राजमलजी
तलेसरा, पारा

भण्डारी चम्पालालजी
रामाजी, पारा

श्री गट्टूलालजी
रतिचंदजी सालेचा औरा, पारा

श्री कांतिलालजी केसरीमलजी
भंडारी, पारा

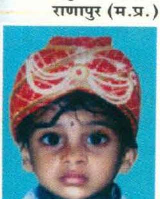
स्व. भव्य हिमांशु लुणावत
दाहोद (गुजरात)

स्व. श्री सुभाषजी भण्डारी
मनावर (मेघनगर वाले)

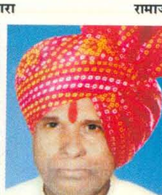
श्री समरथमलजी पगारिया
पारा जि. झाबुआ (म.प्र.)

श्री चांदमलजी वरदीचंदजी
तांतेड़, लेडगांव

स्व.श्री कन्हैयालालजी
सेठिया, कुशलगढ़

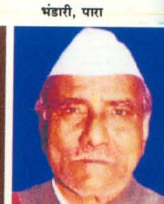
दलाल स्व. श्रीबाबूलालजी
मेहता, कुशलगढ़

अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद
- उद्देश्य -
समाज संगठन, धार्मिक शिक्षा प्रचार
समाज सुधार, आर्थिक विकास

हमारे गौरव

कर्नाटक

श्री भंवरलालजी तिलोकचन्दजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री मनोहरमलजी फूजाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री हिराचंदजी पुखराजजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री शेषमलजी ताराजी
कांकरिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री इंदरमलजी नेनमलजी
संघवी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री रूपचंदजी फूलाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.भंडारी भुरमलजी भानाजी
मेंगलवा, (बीजापुर)

स्व. श्री दिनेशकुमार भुरमलजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री प्रतापचंदजी समनाजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री सुखराज प्रतापचंदजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुंदनमलजी फुलाजी
संकलेचा, मेंगलवा (कर्नाटक)

श्री उम्मेदमलजी प्रतापजी
कंकुचौपडा, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री नागराजजी वालचंदजी
पाटनी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री मोहनलालजी मुलचंदजी
चौवाटिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुन्दनमलजी
फुलाजी सकलेचा (बीजापुर)

श्री धनराजजी नेनमलजी
संघवी, आलासन (बीजापुर)

श्री मुलचंदजी खुमाजी
बाफना, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री देवीचंदजी हजारीमलजी
काबदी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री रिखबचंदजी भभुतमलजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री डुंगरचंदजी हजारीमलजी
कबदी, बीजापुर (कर्नाटक)

शाह सोहनलाल
मित्राचंदजी बीजापुर

सुमेरमलजी अनाजी
वाणीगोथा, बीजापुर/भीनमाल

शा. श्री वस्तीमलजी सोनाजी
बाफना, बीजापुर (सायला)

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक

शाश्वत धर्म

जनवरी-2016 संस्थापक-श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. हिन्दी मासिक

संस्थापक :
स्व. गुरुदेव श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

दिशा निर्देशक :
पू. राष्ट्र संत जैनाचार्य श्रीमद्
विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा.

सम्पादक :
सुरेन्द्र लोढ़ा
E-mail : shaswatdharmajain@yahoo.in

कार्यालय :
शाश्वत धर्म
ठि. गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग
धानमंडी, मंदसौर (म.प्र.)458002

शाश्वत वर्ष 63 अंक 1
वीर सं.2541 राजेन्द्र सं.109 विक्रम सं. 2072

इस अंक का मूल्य	-	15 रु.
एक वर्ष का शुल्क	-	150 रु.
पांच वर्ष का शुल्क	-	600 रु.
दस वर्ष का शुल्क	-	1100 रु.

शाश्वत धर्म संचालन समिति

श्री शांतिलाल रामानी	(संयोजक)
श्री रमेशभाई धरू	(परिषद अध्यक्ष)
श्री सुरेन्द्र लोढ़ा	(सम्पादक)
श्री अशोक श्रीश्रीमाल	(महामंत्री)
श्री. ओ.सी जैन	(न्यासी)
श्री विनोद संघवी	(न्यासी)

भारत सरकार का पंजीयन क्र. 13067/57
स्वामी अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के लिए सुरेन्द्र लोढ़ा, गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग, धानमण्डी, मंदसौर द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।
मुद्रक -छाजेड़ प्रिन्टरी प्रा.लि., रतलाम

प्रेरक प्रसंग

तप करते हुए पांच पति प्राप्त करने का नियाणा

वर्षीतप तपस्वी धर्मरुचि को विषाक्त शाक वोहराने वाली नागश्री का जन्म सुकुमालिका के रूप में हुआ तथा सुकुमालिका का दूसरा विवाह भिखारी के साथ कर दिया गया। रात्रि शयन में भिखारी को सुकुमालिका का शरीर रक्ततप्त भट्टी सा अनुभूत हुआ अतः भिखारी भी प्रातः अपने मूल कपड़े पहिन कर भाग गया। माता-पिता निराश हुए लेकिन उन्होंने सुकुमालिका को समझाया कि 'यह पूर्व कर्मों का फल है। अब इस जीवन को दान, शील, तप, भाव रूपी धर्म पालन से सार्थक कर अगला जन्म सुधारो।'

साध्वी गोपालिका के धर्मोपदेश से सुकुमालिका ने सर्वविरति मार्ग ग्रहण कर साध्वी जीवन में कदम बढ़ाये। साध्वी सुकुमालिका अपनी गुरुणीजी के साथ चम्पा नगरी आई। उसने वहाँ छट्ठ की तपस्या कर सुभूमिभाग उद्यान में सूर्य आतापना की अनुमति गुरुणीजी से मांगी।

गुरुणीजी ने कहा कि साध्वी को खुले में आतापना की अनुमति प्राप्त नहीं होती है। प्रत्येक साध्वी को उपाश्रय में आतापना लेने की मर्यादा है।

सुकुमालिका ने गुरु आज्ञा की अवहेलना कर दी। वह उद्यान में पहुंची।

वहाँ उसने देवदत्ता वैश्या को पाँच पुरुषों का भोग करते देखा। देखते ही सुकुमालिका साध्वी का मन कलुषित हो गया।

उसकी वासना जागृत हो गई। वह व्याकुल तथा उत्तेजित हो गई। उसने नियाणा कर लिया कि यदि उसके तप व संयम में दम हो तो वह अगले जन्म में पांच पति प्राप्त करे।

-क्रमशः

- सुरेन्द्र लोढ़ा

अनुक्रम

क्र.		पृष्ठ संख्या
1.	निराकुल जीवन का रहस्य (लेखांक-7) (श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.)	11
2.	गणधरवाद (लेखांक-30) (श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.)	14
3.	स्वर्णप्रभा (लेखांक-30) (श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.)	17
4.	प्रश्नोत्तरी	20
5.	श्रीसंघ अध्यक्ष की पाती (वाघजीभाई वोरा)	21
6.	अध्यक्षीय संदेश (रमेशभाई धरू)	22
7.	सम्पादकीय (सुरेन्द्र लोढ़ा)	23
8.	गुरु सप्तमी विशेष (साध्वी रूचिदर्शना श्रीजी)	25
9.	शांति और क्रांति के अग्रदूत-दादा गुरुदेव (धीमी गतिवाला)	27
10.	गुणों से शोभित गुरुदेव (साध्वी तृप्तिदर्शनाश्रीजी)	31
11.	अध्यात्म वाद (जे.के.संघवी, थाणे)	33
12.	जैन इतिहास के अधखुले पृष्ठ (मुनिराज श्री चारित्ररत्न विजयजी म.सा.)	35
13.	अध्यात्म जगत का महासूर्य (साध्वी श्री रूचिदर्शना श्रीजी म.)	37
14.	युग चेतना के क्रांतिदृष्टा थे श्री राजेन्द्रसूरी गुरुदेव (शांतिलाल सगरावता)	41
15.	संवर भावना (साध्वी श्रुतिदर्शना श्रीजी)	42
16.	संसार श्मशान रूप है (साध्वी प्रीतिदर्शना जी)	44
17.	जिन मंदिर अहिंसा धर्म का आयतन है (शांतिलाल सगरावत)	47
18.	देव गुरु और धर्म (विजयसिंह लोढ़ा, निम्बाहेड़ा)	48
19.	वर्ग पहेली-46 (साध्वी श्रुतिदर्शना श्रीजी म.)	49
20.	जैन धर्म दर्शन में समाधिमरण आत्महत्या नहीं (लेखांक 4) (प्रो.सागरमल जैन)	50
21.	नमस्कार महामंत्र-स्वरूप अनुप्रेक्षा (श्रीमती इंदिरा जैन घोड़ावत)	52
22.	महिला शाश्वत (श्रीमती रेखा अजय कर्नावट, जावरा)	54
23.	भाग्य की रेखा बनाइए (रमेश चौपड़ा, इन्दौर)	55
24.	धर्म आत्मा की तरह है	56
25.	गुजराती संभाग	59
26.	कुमकुम सने पगलिये	75
27.	श्रीसंघ सौरभ	85
28.	परिषद् प्रांगण से	88
29.	जैन विश्व	90
30.	शाश्वत धर्म के संरक्षक	93-94

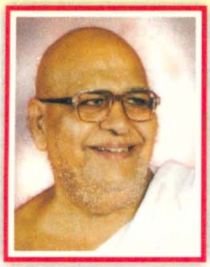

प्रवचन लेखांक 7

निराकुल जीवन का रहस्य

(सुविशाल गच्छाधिपति युग प्रभावक राष्ट्रसंत
जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.)

'भाई! उन्हें मुँह के आगे कपड़ा रखकर बोलते तो मैं भी देखता हूँ; पर उसका कारण मैं नहीं जानता।'

'महाराज! सही बात तो यह है कि ये पंडितजी आपके शरीर से आनेवाली दुर्गंध से बचने के लिए अपने मुंह के आगे कपड़ा रखते हैं। स्वयं को ये बड़ा समझते हैं और आपको तुच्छ। ये मानते हैं कि आपका शरीर गंदा है।'

राजा कान के कच्चे होते हैं। उस राजा को भी नाई की बात सत्य लगी। उसने पंडितजी को सजा देने का निर्णय कर लिया।

दूसरे दिन पंडितजी आये। कथा पूरी की। राजा ने रुक्का लिख दिया। पंडितजी रुक्का लेकर चल पड़े। रास्ते में नाई मिला। रोज के मुताबिक उस दिन भी उसने पंडितजी से रुक्के की मांग की। रोज-रोज की मांग से पंडितजी को उस पर दया आ गई। उस दिन का रुक्का उन्होंने नाई को दे दिया। नाई बड़ा प्रसन्न हुआ। रुक्का लेकर वह सीधे खजाँची के पास चला गया और रुक्का उसके हाथ में थमा दिया। खजाँची ने रुक्का पढ़ा और एक तेज छुरी से उसकी नाक काट डाली।

नाई की नाक कट गई। रोता बिलखता वह राजा के पास गया। उसने राजा से कहा- 'महाराज! आपके खजाँची ने मेरी नाक काट डाली।' नाई की बात को सुनकर राजा आश्चर्यचकित हो गया। उसने पूछा- 'तू खजाँची के पास गया ही क्यों था?' तब नाई बोला- 'महाराज! मैं हमेशा पंडितजी से रुक्का मांगा करता था; पर वे टाल देते थे। मैं भी उन्हें देख लेने की धमकी दिया करता था। आज भी मैंने उनसे रुक्का मांगा। उन्होंने आज का रुक्का मुझे दे दिया। मैं बड़ा प्रसन्न हुआ। रुक्का लेकर सीधे खजाँची के पास पहुँचा और रुक्का उसे पकड़ा दिया। खजाँची ने रुक्का पढ़ा और मेरी नाक काट डाली।'

राजा ने नाई को सांत्वना दी और समझा-बुझाकर उसे घर भेज दिया।

दूसरे दिन हमेशा की तरह पंडितजी राजमहल पहुँचे। राजा ने

पूछा– 'पंडितजी! कल का रुक्का आपने क्यों नहीं रखा? नाई को क्यों दे दिया?'

इस पर पंडितजी बोले–'महाराज! नाई हमेशा मुझसे रुक्का माँगा करता था; पर मैं देता नहीं था। इस पर वह मुझे डराता और देख लेने की धमकी दिया करता था। इसलिए कल मैंने उसे रुक्का दे दिया था।'

राजा ने कहा– 'पंडितजी! कल के रुक्के में मैंने खजाँची से आपकी नाक काटने के लिए लिखा था।'

पंडितजी बोले–'पर महाराज! आपने ऐसा क्यों लिखा था?'

राजा ने कहा 'पंडितजी! आप मुझसे घृणा करते हैं। इसलिए मैंने ऐसा लिखा था।'

पंडितजी बोले– 'महाराज! मैं तो आपसे कभी घृणा नहीं करता।'

राजा ने पूछा–'फिर आप कथा बाँचते वक्त मुंह के आगे कपड़ा क्यों रखते हैं? मेरे शरीर की दुर्गन्ध आपसे सहन नहीं होती इसीलिए न?'

यह सुनकर पंडितजी चकित रह गए। उन्होंने पुनः पूछा–'महाराज! ऐसी तो कोई बात नहीं है। आपसे ऐसा किसने कहा?'

'नाई ने, जिसे आपने रुक्का भेंट किया था।'– राजा बोला।

पंडितजी की समझ में सारी बात आ गई। उन्होंने कहा–'महाराज! उसने आपको गलत बात कह कर भड़काया। आपके शरीर से जरा भी बदबू नहीं आती। मुंह के आगे कपड़ा रखने का कारण इतना ही है कि मैं शास्त्र की विनय करता हूँ। शास्त्र पढ़ते वक्त उस पर थूक न पड़े और सुनाते वक्त आप पर थूक न उड़े, बस इसीलिए मैं मुंह के आगे कपड़ा रखता हूँ।'

पंडितजी के उत्तर से राजा संतुष्ट हुआ और बोला–'पंडितजी! आपकी बात बिल्कुल ठीक है । उस नाई ने आपको फँसाने के लिए मुझे उकसाया और आपके लिए गड्ढा खोदा; पर आपका बाल भी बाँका न हुआ। उसकी बुराई का फल उसे ही मिला।

तो जो बुरा करता है उसी का बुरा होता है। इसीलिए कहा गया है–

काँटा किसी को मत लगा, गो मिस्ले गुल फूला है तू।
वो तेरे हक में तीर है, कि बात पर भूला है तू।।
दुनियाँ अजब बाजार है, कुछ जिन्स याँ की साथ ले।
नेकी का बदला नेक है, बद से बदी की बात ले।।

जाल तोड़ो छुट्टी पाओ

इसलिए हमें कभी किसी के प्रति कोई जाल नहीं फैलाना है। किसी के लिए बुना हुआ जाल स्वयं हमें अपने में लपेट लेगा। क्रोध, मान, माया और लोभ का जाल हमने जो बिछा रखा है, उसे समेट लेना है। ये चारों संसार जेल की चहार दीवारी हैं इसे तोड़ने से ही जेल से छुट्टी मिलेगी। श्री रत्नाकरसूरिजी महाराज फरमाते हैं–

क्रोधाग्नि से मैं रात–दिन हा! जल रहा हूँ हे प्रभो!
मैं लोभ नामक साँप से काटा गया हूँ हे विभो!!
अभिमान के खलग्राह से अज्ञानवश मैं ग्रस्त हूँ।
किस भाँति हो स्मृत आप माया जाल से मैं व्यस्त हूँ।।

क्रोध आग है; क्षमा का जल छिड़ककर इसे बुझाना चाहिए। लोभ साँप है; संतोष का गारुड़ी मंत्र पढ़कर इसे निर्विध करना चाहिए। अभिमान अजगर है; नम्रता और विनय को अपनाकर इससे छुटकारा पाना चाहिए। माया जाल है; सरलता की कैंची से इसे काट देना चाहिए।

सीधी बात–सीधा मार्ग

परमात्मा ने तो सीधी बात बताई है, सीधा मार्ग बताया है। इस सीधी बात को हमें अपने जीवन में उतारना है और सीधे मार्ग पर हमें चलना है। क्षमा, नम्रता, संतोष और सरलता का मार्ग सीधा है और सरल भी। जीवन जीने का यह निष्कंटक मार्ग है। इस मार्ग पर चलने से ही जीवन का कल्याण होगा। क्रोध, मान, माया और लोभ का मार्ग विषम है और खतरनाक भी। यह सर्वनाश का मार्ग है। इसे छोड़कर हमें आत्मकल्याण के मार्ग में लगना चाहिये।

अब तो चेतना है

मनुष्य जन्म प्राप्त होना बहुत कठिन है; उससे भी दुर्लभ है, सुधर्म की प्राप्ति। मनुष्य जन्म प्राप्त होने पर भी ; धर्म प्राप्त नहीं होता है। हमें ये दोनों बातें प्राप्त हुई हैं। अतः इनसे लाभ उठाना चाहिये। मिथ्यात्व का त्याग करके आत्महित के मार्ग में आगे बढ़ना चाहिये। यदि अब भी नहीं चेते; तो सब कुछ हार जायेंगे। 'दुविधा में दोनों गये, माया मिली न राम' ऐसी स्थिति न हो, इसलिए हमें सदा सावधान रहना है।

–समाप्त

लेखांक - 30

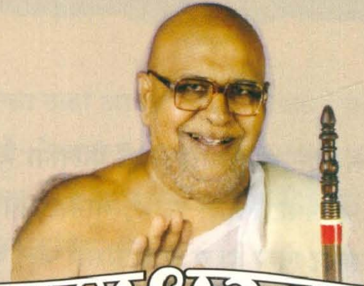

गणधरवाद

प्रवचनकार

सुविशाल गच्छाधिपति राष्ट्रसंत आचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

महावीर– जीव एवं शरीर शब्द की पर्यायें पृथक–पृथक होने से जीव पद का अर्थ शरीर नहीं माना जा सकता। क्योंकि शब्दों की पर्यायों में भेद होने से उनके अर्थ में भी भेद होता है। जैसे कि घट और आकाश शब्द की पर्यायें पृथक–पृथक हैं, तो उन दोनों शब्दों के अर्थ भी भिन्न भिन्न हैं। वैसे ही शरीर और जीव के पर्याय भी पृथक पृथक हैं। जैसे कि जीव के इतर नाम जन्तु, प्राणी, सत्व, आत्मा आदि हैं और शरीर के देह, वपु, काय, कलेवर आदि। इस प्रकार पर्यायों का भेद होने पर भी यदि अर्थ में अभेद हो, तो संसार में वस्तु भेद रहेगा ही नहीं। सभी को एक रूप मानना पड़ेगा। जीव शरीर के प्रायः सहचारी एवं शरीर में अवस्थित होने के कारण उक्त शास्त्र वचन में उपचार से शरीर को जीव कहा गया है। वस्तुतः जीव और शरीर दोनों अलग–अलग हैं। यदि वैसा न हो, तो 'जीव तो चला गया। अब शरीर का अग्नि संस्कार कर डालो' जैसा लोक प्रयोग संभव नहीं होगा।

दूसरी बात यह है कि शरीर और जीव के लक्षण भी अलग–अलग हैं। जीव ज्ञान आदि गुणयुक्त है, जबकि शरीर जड़ है। इससे भी शरीर को जीव मानना कैसे संभव है? और यह तुम्हें पहले ही बताया जा चुका है कि शरीर के मूर्त होने से ज्ञान आदि गुण उसमें संभव नहीं हैं इत्यादि। अतः दोनों को पृथक–पृथक मानना चाहिये।

आयुष्मन्! इस प्रकार वाला जीव प्रत्यक्ष आदि प्रमाणों से सिद्ध मान लेना चाहिये एवं मेरे वचन (सर्वज्ञ वचन) से भी तुम जीव के अस्तित्व पर विश्वास कर सकते हो। प्रत्यक्षादि प्रमाण सिद्ध उस उपयोग लक्षण वाले जीव के संसारी और सिद्ध तथा संसारी के त्रस और स्थावर ये दो–दो भेद हैं। तथा सूक्ष्म

बादर, पर्याप्त, अपर्याप्त आदि के भेद से संसारी जीव अनेक हैं।

इन्द्रभूति– आप तो अनेक जीव कहते हैं, परन्तु वेदान्त की मान्यता है कि जीव और ब्रह्म एक ही है। सर्वत्र एकत्व की प्रतीति होने से आत्मा को अनेक मानना असिद्ध है। जैसे कि पृथक-पृथक् भूतों में एक ही आत्मा प्रतिष्ठित है, लेकिन जल में चन्द्रमा के प्रतिबिंब की तरह वह एक और अनेक रूपों में दिखती है।

आकाश एक और विशुद्ध है, लेकिन तिमिर रोग वाला व्यक्ति उसे अनेक मात्राओं-रेखाओं से चित्र-विचित्र देखता है। इसी प्रकार ब्रह्म भी विकल्प शून्य एक और विशुद्ध है, किन्तु अविद्या द्वारा उसके कलुषित हो जाने से वह भिन्न-भिन्न अनेक भासित होता है।

जिसका मूल ऊर्ध्व आकाश में है और शाखाएँ अधः जमीन में हैं, ऐसे अश्वत्थ वृक्ष को अव्यय शाश्वत कहा गया है। छन्द उसके पत्ते हैं। जो उसको जानता है, वही वेदज्ञ, ब्रह्मज्ञ है।

वेदों व उपनिषदों में भी कहा है- जो था और होगा, वह सब पुरुष रूप ही है। वह पुरुष ही अमृत का स्वामी है, जो अन्न से वृद्धिगत होता है, जो सकम्प है, जो निष्कम्प है, जो दूर है, जो निकट है, जो सभी के अन्तर में व्याप्त है और जो सर्वत्र बाह्य में विद्यमान है, वह सब पुरुष ही है।

इस प्रकार यह सब एक ब्रह्म रूप मानें तो उसमें क्या बाधा है?

महावीर– हे गौतम! यही आशय है न तुम्हारे प्रश्न का कि यदि नारक, देव, मनुष्य, तिर्यंच इन सभी में आकाश की तरह एक ही आत्मा मानी जाये तो क्या दोषोत्पत्ति होगी?

इन्द्रभूति– हाँ।

महावीर–आयुष्मन्! आकाश की तरह सभी शरीरधारियों में एक आत्मा सम्भव नहीं है। क्योंकि आकाश का सर्वत्र अवगाहन रूप लिंग-लक्षण दिखने से आकाश सभी स्थानों पर एक ही है, किन्तु जीव के विषय में वैसा दिखता नहीं है। प्रत्येक शरीर पिंड में वह विलक्षण है। अतएव जीव को सर्वत्र सर्वथा एक नहीं माना जा सकता। यह एक सामान्य नियम है कि लक्षण भेद होने पर वस्तुभेद माना ही जाता है। अतः जब प्रत्येक शरीर पिंड में पृथक-पृथक जीव लक्षण अनुभव होते हैं, तो प्रत्येक शरीर में पृथक-पृथक जीव ही मानना चाहिये।

उक्त कथन का साधक अनुमान इस प्रकार है-

जीव नाना-अनेक, भिन्न हैं, क्योंकि उनमें लक्षण भेद हैं। घटादि सदृश जो वस्तु भिन्न नहीं होती, उसमें लक्षण भेद नहीं होता जैसे कि आकाश।

इसके साथ ही यह भी विचारणीय है कि यदि जीव एक ही हो, तो सुख-दुःख, बन्ध-मोक्ष आदि की व्यवस्था बन नहीं सकती। अतएव जीवों को अनेक मानना चाहिये। हम देखते हैं कि संसार में एक जीव सुखी है और दूसरा दुःखी, एक बंधनबद्ध है और दूसरा बन्धन मुक्त सिद्ध है। परन्तु परस्पर विरुद्ध ये दोनों अवस्थाएं सुखी और दुःखी एक ही समय में सम्भव नहीं है। अतः एक ही जीव एक ही समय में बद्ध और मुक्त भी सम्भव नहीं है, क्योंकि इन दोनों में विरोध है।

इन्द्रभूति- आपने जीव का लक्षण ज्ञान-दर्शन रूप उपयोग बताया है। और वह सभी जीवों में समान रूप से पाया जाता है, फिर प्रत्येक शरीर पिण्ड में आप लक्षण भेद क्यों मानते हैं ?

महावीर - सभी जीवों में उपयोग रूप सामान्य लक्षण होने पर भी प्रत्येक शरीर में उपयोग का वैशिष्ट्य अनुभव होता है। अर्थात् जीवों के उपयोग के अपकर्ष और उत्कर्ष का तारतम्य अनन्त प्रकार का होने से जीवों को भी अनन्त मानना चाहिये।

- क्रमशः

व्यसन मुक्ति

- श्री नोरतन रामपुरिया

हो व्यसन मुक्त तन-मन और धन,
मत व्यसन युक्त चेतन तुम बन ।
जब-जब जकड़ा तन-मन इसने,
खो गया सुखद जीवन, तन में।
फिर नष्ट हुई निधियाँ सारी,
पीड़ित मन ने ली सिसकारी।
बन गया यहाँ जीवित शव सा,
रो उठा अगोतर उस भव का।
बाबा के सपने टूटे हैं,
ये भाग्य जरा में रूठे है ।।
इस व्यसन पूतना ने जाने सूनी कर दी कितनी माँगे।
इसकी डयोढ़ी पर पैर धरा, सर्वस्व सदा उसका बिखरा।
कुत्ते जिव्हवा से चाट-चाट, जब होश ठिकाने लाते हैं।
बोझिल पलकें मन में ग्लानि, कीचड़ में खुद को पाते हैं।
पर नशा टूट जब जाता है,
पग उसी डगर बढ़ जाता है।
कुछ क्षण का लगता है गोता,
यह मजा सदा दो पल होता।
फिर लौट सत्य में आवोगे,
कुछ और लुटे ही पाओगे।
मन फूट-फूट ढ़ह जायेगा,
जीवन का रस बह जायेगा।
तन व्याधि से भर जायेगा,
मन बिखर, बिखर हो जायेगा।
उन्नति खुद की तो जायेगी,
बच्चों का भाग्य डहायेगी।।
कौड़ी-कौड़ी मोहताज बने, कितने धनवान किये इसने ।
जाने कितने रणसिंधों को पौरूष की दीप्ति करी फीकी ।
मत अंधकार में तुम जाओ मत दिशा हीनता को पावो।
सपनों को दो अन्जाम सफल, कहीं हो न जाय जीवन निष्फल।
कुछ दृढ़ भाव से थामो मन,
तुम नशा छोड़ दो रे ! चेतना ।।

लेखांक 30

स्वर्णप्रभा

सुविशाल गच्छाधिपति राष्ट्रसंत जैनाचार्य
श्रीमद् विजयजयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

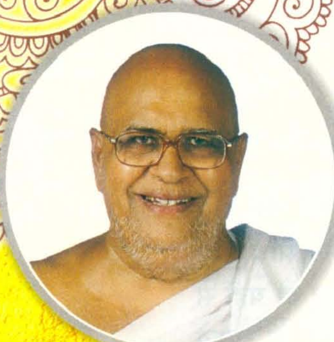

'ठीक है। आपके प्रस्ताव पर विचार किया जाएगा। अभी कल तक तो आपको रुकना ही है।' श्रेष्ठी शांतिदास ने कहा।

'क्यों भला? कल तक क्यों रुकना है? हम तो कल प्रस्थान करने का सोच रहे थे।' नगर श्रेष्ठी लक्ष्मीधर ने पूछा।

'इसलिए कि कल मैं नगर के प्रमुख श्रेष्ठियों को आमंत्रित कर आपसे उनका परिचय करवाना चाहता हूँ। हमारा जो नया व्यापारिक सौदा हुआ है, उस उपलक्ष्य में स्वामी वात्सल्य का आयोजन भी रखा गया है।' श्रेष्ठी शांतिदास ने बताया।

'ऐसा आयोजन करने से पूर्व मुझसे चर्चा तो कर ली होती। खैर! अब जबकि आपने कार्यक्रम रख ही लिया है तो रुकना ही होगा।' नगर श्रेष्ठी लक्ष्मीधर ने कहा।

श्रेष्ठी शांतिदास कुछ कहता इसके पूर्व ही कक्ष में एक सेवक ने प्रवेश किया और सादर अभिवादन करने के पश्चात् निवेदन किया- 'अन्नदाता! असमय, बिना आज्ञा प्रवेश करने के लिए क्षमा चाहता हूँ। किन्तु मैं भी मजबूर हूँ। कुछ सूचना ही ऐसी है कि आपको तत्काल बताना अनिवार्य है।' इतना कहकर सेवक मौन होकर श्रेष्ठी शांतिदास की ओर देखने लगा। वह अपनी बात की प्रतिक्रिया जानना चाहता था।

अरिहंत की शरण ग्रहण करने वाला और महामंत्र नवकार का उपासक किसी खतरे की बात सुनकर अपना कार्यक्रम स्थगित नहीं करता।

'ठीक है। अब जो भी सूचना हो तत्काल सुनाओ। तुम मौन क्यों हो गए।' श्रेष्ठी शांतिदास ने कहा।

'अन्नदाता! नगर में ऐसी चर्चा है कि विन्ध्य अटवी की चोरपल्ली में रहने वाले दस्यु अयोध्या जाने वाले मार्ग पर लूटपाट कर रहे हैं। इन दस्युओं को वहाँ के राजा ने अपनी सेना के द्वारा मार भगाया है।' सेवक ने कहा।

'ठीक है। तुम जा सकते हो।' श्रेष्ठी शांतिदास ने कहा। सेवक जिधर से आया था, उधर ही चला गया। उसके जाने के पश्चात् श्रेष्ठी शांतिदास ने नगर श्रेष्ठी लक्ष्मीधर को संबोधित कर कहा– 'अब आप ही बताइए कि ऐसी विषम परिस्थिति में आपका जाना कैसे हो सकता है?'

'इधर कोई गहन अटवी नहीं है। ये दस्यु अधिक समय तक इधर नहीं रह पावेंगे। फिर मेरे साथ रक्षा सैनिक भी हैं। जरूरी हुआ तो यहां से भी कुछ सैनिक और लिये जा सकते हैं, किन्तु इस समाचार की सत्यता ज्ञात करनी चाहिए।' नगर श्रेष्ठी लक्ष्मीधर ने कहा।

जिसके पास ये दो अनमोल रत्न हों,उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। आगे तो फिर कर्मों की रेखा के आधार पर जो होना है, वह होकर ही रहेगा।

'वह तो हो जाएगी, किन्तु जब तक मार्ग निष्कंटक नहीं हो जाता, तब तक मैं आपको जाने नहीं दूँगा।' श्रेष्ठी शांतिदास ने कहा।

'आप भी कैसी बातें करते हैं। दस्युओं के भय से क्या हम यहाँ बैठे रहेंगे? अरिहंत की शरण ग्रहण करने वाला और महामंत्र नवकार का उपासक किसी खतरे की बात सुनकर अपना कार्यक्रम स्थगित नहीं करता। कल का आपका कार्यक्रम सम्पन्न कर लीजिए। हम उसके पश्चात् यहाँ से प्रस्थान करेंगे। ये सांसारिक दस्यु हमारा कुछ नहीं बिगाड़ पाएंगे।' स्वर्णप्रभा ने दृढ़ आत्मविश्वास से कहा।

उसकी बात सुनकर श्रेष्ठी शांतिदास ने कुछ बोलने का प्रयास किया किन्तु नगर श्रेष्ठी लक्ष्मीधर ने उसे संकेत कर चुप रहने के लिए बाध्य कर दिया।

दूसरे दिन नगर के श्रेष्ठियों से नगर श्रेष्ठी लक्ष्मीधर और उसकी पत्नी स्वर्णप्रभा का परिचय करवाया गया। नगर श्रेष्ठी लक्ष्मीधर और स्वर्णप्रभा का सबने सार्वजनिक रूप से अभिनंदन किया। नगर श्रेष्ठी लक्ष्मीधर ने अपने अभिनंदन के उत्तर में सबका आभार मानते हुए नगर में निर्मित हो रहे जिनालय के निर्माण में सहायता स्वरूप एक लाख स्वर्णमुद्राएं देने की घोषणा की। उनकी इस घोषणा का नगर के समस्त श्रेष्ठियों व प्रमुख श्रावकों ने हृदय से आभार माना।

दस्युओं के आगमन का समाचार चारों ओर फैल गया था। जब नगर श्रेष्ठी लक्ष्मीधर के जाने का समाचार श्रेष्ठियों और श्रावकों ने सुना तो वे श्रेष्ठी शांतिदास के आवास पर एकत्रित हुए और सभी ने एक स्वर से नगर श्रेष्ठी लक्ष्मीधर को अपनी यात्रा कुछ दिनों के लिए स्थगित रखने का आग्रह किया। नगर श्रेष्ठी लक्ष्मीधर दृढ़ संकल्प वाला व्यक्ति था। भय तो उसको छू तक नहीं पाया था। उसने सबकी बातें ध्यान से सुनीं और हल्के से मुस्कराते हुए कहा–

'आप लोग किसी प्रकार की चिंता न करें। ये दस्यु हमारा कुछ भी नहीं बिगाड़ पाएंगे। हमें अपने आप पर विश्वास है और सबसे बड़ी बात यह है कि हम अरिहंत प्रभु की शरण ग्रहण कर तथा नवकार महामंत्र का रक्षा कवच धारण कर यहां से प्रस्थान करेंगे। जिसके पास ये दो अनमोल रत्न हों, उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। आगे तो फिर कर्मों की रेखा के आधार पर जो होना है, वह होकर ही रहेगा। आज दस्युओं के भय से यहां बैठ जावें और कल ही यहाँ अथवा हमारे नगर में कोई तूफान आ जावे और सब कुछ तहस-नहस कर दे तो फिर क्या करोगे? इसलिये आप लोग अनावश्यक चिंता और आग्रह का त्याग कर हमें यहां से प्रस्थान करने दें। फिर हमारे साथ भी रक्षा सैनिक हैं। कुछ सैनिक हम यहाँ से भी साथ ले लेंगे। आप लोग अपने मन में समाये अज्ञात भय को निकाल दें और सबकी कुशलता के लिए नवकार महामंत्र की आराधना करें।'

नगर श्रेष्ठी लक्ष्मीधर के उक्त कथन का अनुकूल प्रभाव पड़ा। लोग शांत हो गए और फिर एक-एक करके सब अपने-अपने घर चले गए।

अपने निर्धारित कार्यक्रमानुसार नगर श्रेष्ठी ने प्रस्थान की तैयारी करने का आदेश दे दिया। आदेश पाते ही सेवक काम में जुट गए। यात्रा की तैयारी और सैनिकों की व्यवस्था में श्रेष्ठी शांतिदास भी व्यस्त रहा। उसने पचास चुने हुए सशस्त्र अश्वारोहियों की व्यवस्था कर दी। दूसरे दिन प्रातः यहां से नगर श्रेष्ठी का अपने परिवार सहित प्रस्थान हुआ, उसे बिदाई देने के लिए श्रेष्ठी शांतिदास के परिवार के अतिरिक्त नगर के और भी अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। सभी ने नगर श्रेष्ठी को सजल नेत्रों से विदा किया।

(क्रमशः)

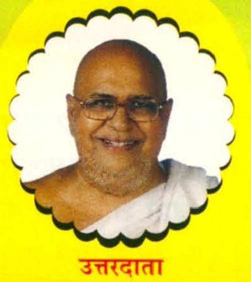

उत्तरदाता

प्रश्नोत्तरी

भाव प्राण के कितने भेद हैं?

प्रश्नकर्त्ता

पू. श्रीमद् विजयजयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.

पू. मुनिराज श्री नित्यानंद विजयजी म.सा.

प्र. अभव्यत्व गुण किसे कहते हैं?

उ. जिस शक्ति के निमित्त से आत्मा के सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र प्रगट होने की योग्यता न हो, उसे अभव्यत्व गुण कहते हैं।

प्र. जीवत्व गुण किसे कहते हैं?

उ. जिस शक्ति के निमित्त से आत्मा प्राण धारण करे, उसे जीवत्व गुण कहते हैं।

प्र. प्राण किसे कहते हैं?

उ. जिनके संयोग से जीव, जीवन अवस्था को प्राप्त हो, और वियोग से मरण अवस्था को प्राप्त हो, उसे प्राण कहते हैं।

प्र. प्राण के कितने भेद हैं?

उ. दो हैं- द्रव्य प्राण और भाव प्राण।

प्र. द्रव्य प्राण के कितने भेद हैं?

उ. दस हैं- मन, वचन, काय, स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, चक्षुरिन्द्रिय, श्रोत्रेन्द्रिय, श्वासोच्छवास और आयु।

प्र. भाव प्राण किसे कहते हैं?

उ. आत्मा की जिस शक्ति के निमित्त इन्द्रियादिक अपने कार्य में प्रवर्त्तें हों, उसे भाव प्राण कहते हैं।

प्र. भाव प्राण के कितने भेद हैं?

उ. दो हैं- भावेन्द्रिय और बल प्राण।

प्र. भावेन्द्रिय के कितने भेद हैं?

उ. पांच हैं- स्पर्शन, रसन, घ्राण, चक्षु और श्रोत्र।

प्र. बल प्राण के कितने भेद हैं?

उ. तीन हैं- मनोबल, वचनबल और काय बल।

प्र. किस जीव के कितने प्राण होते हैं?

उ. एकेन्द्रिय जीव के चार प्राण- स्पर्शनेन्द्रिय, कायबल, श्वासोच्छवास और आयु। द्वीन्द्रिय के छह प्राण- स्पर्शनेन्द्रिय, कायबल, श्वासोच्छवास, आयु, रसनेन्द्रिय और वचनबल। त्रीन्द्रिय के सात प्राण- पूर्वोक्त छह और घ्राणेन्द्रिय। चतुरिन्द्रिय के आठ प्राण - पूर्वोक्त सात और चक्षुरिन्द्रिय। असंज्ञी पंचेन्द्रिय के नौ प्राण पूर्वोक्त आठ और श्रोत्रेन्द्रिय। संज्ञी पंचेन्द्रिय के दस प्राण-पूर्वोक्त 9 और मनोबल।

गुरु जयंती पर स्पर्श करें हम आलोक पुञ्ज को

वाघजीभाई वोरा
राष्ट्रीय अध्यक्ष
श्रीसंघ

तपोनिधि दादा गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरिश्वरजी म.सा. ने सकल श्रीसंघ एवं समाज पर अनन्य उपकार किये हैं। उन्हीं ने हमें धर्म का वास्तविक अर्थ सिखाया है। हमें धर्मानुसार आचरण करने का मार्गदर्शन देकर धर्म पर आस्था और श्रद्धा बनाए रखने का मार्ग प्रशस्त किया है। हमारा जीवन भौतिक/पौद्गलिक साधनों के विस्तार या उनके विकास के लिए ही नहीं है। हम अर्थात् नश्वर देह या उसके अभिकर्ता ही नहीं हैं। हम अदृश्य शक्ति हैं जो हमारे अन्दर ही है, जिसका परिचय हमें आत्मा शब्द से स्पष्ट है। पूज्य दादा गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरिश्वरजी म.सा. ने हमें अंधकार से प्रकाश की ओर आने के लिए स्वयं आत्मा का परिचय कराने तथा अनुभूति करने के लिए हमें उपदेश प्रदान किया। वही उपदेश वर्तमान में दादा गुरुदेव के षष्टम् पट्टधारी सुविशाल गच्छाधिपति राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरिश्वरजी म.सा. अपने दिव्य वचनामृतों में हमें प्रदान कर रहे हैं। पूज्य गुरुदेवों के उपकार एवं उनके आत्मदर्शन से ही हममें आत्मबोध होता है। भटकाव से शुद्ध निर्मल मार्ग पर लौटने और इस पर बढ़ने की प्रेरणा मिलती है। इस उपकार का ऋण चुकाने हेतु सच्चे गुरुभक्त बनकर दादा गुरुदेव के नियमित मंत्र जाप एवं वर्तमान गुरुदेवश्री की आज्ञा का पालन कर नित्य आचरण का अंग बनाना अति आवश्यक है।

गुरु के बिना जीवन निराधार है। गुरु ही हमें पूर्ण करते हैं, वे ही हमारे सर्वस्व होते हैं। उन्हीं के दिग्दर्शन का परिपालन हमारा ध्येय होता है। वे हमें हर पल प्रेरणा देते हैं तथा जीवन के वास्तविक रहस्यों से अवगत कर हमारे जीवन को सार्थक करने का प्रयत्न करते हैं। हम जो कुछ भी हैं, उन्हीं की कृपा का परिणाम हैं। पूज्य दादा गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरिश्वरजी म.सा. की जयन्ति माह आ रहा है। यह हमारा पुण्योदय ही है कि उनका गुरुत्तर आलोक हमें स्पर्श कर रहा है। यदि पूज्य दादा गुरुदेव ने हमारे आत्मकल्याण का मार्ग अपनी चिंतन शक्ति के माध्यम से हमें मूल्य धरोहर के रूप में नहीं बताया होता तो हम न जाने कहाँ होते? शायद हमें हमारी आत्मकल्याण की भावना का कोई मार्ग भी नहीं मिलता। अतः हमारा कर्तव्य है कि हम सच्चे एवं निष्ठावान गुरुभक्त बनें। हमारे लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण और सार्थकता वाली बात हमारी गुरुभक्ति है और सत्यनिष्ठ गुरुभक्त में परिणित होने में ही है।

आइये, गुरु जयंती के पावन अवसर पर हम गुरुदेव के प्रति श्रद्धा को और अधिक सुदृढ़ एवं अडिग बनाने एवं सच्चे गुरुभक्त बनने की साधना में सम्पूर्ण मनोयोग एवं निष्ठा के साथ जुड़ जाएं।

कदम कदम बढ़ाए जा....

रमेशभाई धरू
राष्ट्रीय अध्यक्ष
नवयुवक परिषद

सुविशाल गच्छाधिपति राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरिश्वरजी म.सा. की पावन प्रेरणा से सभी परिषद् इकाइयाँ समाजोत्थान के कार्य में अग्रणी रूप से सक्रिय हैं। पूज्यश्री ने अपने आशीर्वचन में परिषद् के कार्यों की प्रशंसा भी की है। यही हमारे लिए दिव्याशीष स्वरूप है। परिषद् एवं समाज इसी शुभ भावना से हमेशा अग्रणी रहे, इस हेतु अपने-अपने स्तर पर निम्न गतिविधियों को संपादित करें :-

वैयावच्चः- चातुर्मास पूर्णता के पश्चात् कार्तिक पूर्णिमा से साधु-साध्वीजी भगवंतों के विहार आरम्भ हो गए हैं। परिषद् परिवार निश्चित रूप से वैयावच्च का अनुपम लाभ प्राप्त कर रहे होंगे। साथ ही विहार के दौरान उनकी सुरक्षा का विशेष ध्यान रखें।

चयन प्रक्रिया :- अभी तक शाखाओं में चयन प्रक्रिया सम्पन्न हो गई होंगी। अगर नहीं हुई हैं तो शीघ्र सम्पन्न करावें। यदि हो गई है तो नवनियुक्त कार्यकारिणी को केन्द्रीय परिषद् की ओर से बधाई। नव चयनित कार्यकारिणी व पदाधिकारियों के मोबाइल नम्बर, पते एवं सदस्यों की सूची केन्द्रीय कार्यालय पर भिजवाएं। साथ ही प्रति सदस्य 10 रु. के हिसाब से संबद्धता शुल्क भी प्रेषित करें।

शाश्वत धर्म सदस्यताः- केन्द्रीय परिषद् के तत्वावधान में शाश्वत धर्म प्रसार वृद्धि अभियान संचालित है। ज्ञान पंचमी को आराधना स्वरूप प्रत्येक शाखा परिषद् स्थानीय स्तर पर 'शाश्वत धर्म' के कम से कम 10 नवीन सदस्य बनाने के लक्ष्य की पूर्ति करें।

जनकल्याण :- परिषद् शाखा स्थानीय स्तर पर अपनी सुविधानुसार स्वास्थ्य से संबंधित सामाजिक गतिविधियों यथा रक्तदान शिविर, नेत्र शिविर, रक्त परीक्षण शिविर, स्वास्थ्य जनरल चेकअप, हृदय रोग निदान शिविर, विकलांगता निवारण शिविर, पशु चिकित्सा शिविर, हॉस्पिटल में मरीजों को दवाई, वस्त्र, भोजन, फल वितरण आदि कोई भी सेवा कार्य कर सकती है। इस हेतु श्रीसंघ व परिषद् की चारों इकाइयों से सहयोग लेवें। अभी से प्रचार-प्रसार व कार्यवाही आरंभ करने का आग्रह है।

पाठशालाः- आपके यहां पाठशाला का विधिवत संचालन चल रहा होगा। यदि नहीं चल रहा हो तो शीघ्र ही इस ओर ध्यान देवें।

राष्ट्रीय सम्मेलन में प्राप्त प्रगति पत्रक के आधार पर विभिन्न पुरस्कारों से शाखाओं को पुरस्कृत किया गया है। सभी पुरस्कृत शाखाओं को बधाई। कुछ शाखाएं अच्छे कार्य कर रही हैं किन्तु उनके प्रगति पत्रक प्राप्त नहीं होने से वे पुरस्कार से वंचित रही हैं। उनसे भी आगामी सम्मेलन में पत्रक प्रस्तुत करने का आग्रह है।

संपादकीय

धार्मिकता का विकास किया जाना आवश्यक

युग तेजी से बदल रहा है। प्रतिदिन जीवन किसी नये आयाम से जुड़ रहा है। इनमें विकृति के आयाम अधिक हैं। जीवन की पवित्रता खतरे में है तथा नई पीढ़ी पर कुसंस्कार अपने मायावी प्रभाव दिखा रहे है। धर्म सदैव राजनैतिक सत्ता को मार्गदर्शन देता रहा है। हजारों वर्षों के इतिहास में किसी भी साम्राज्य या वंश की बात हो अनगिनत पेज धर्माचार्यों के नियामक होने से रंगे हुए हैं। सत्ता तथा सत्ता की राजनीति अथवा समग्र राजनीति के अपने ढंग के पैतरे होते हैं। उन पैतरों की अमानवीयता, अनियंत्रण व निरंकुशता पर धर्म तथा धर्माचार्य लगाम लगाते रहे हैं। लेकिन आज स्थितियाँ विपरीत हो गई हैं। अब राजनीति के पैंतरे धर्म एवं धार्मिक संस्थाओं में आ रहे हैं। धार्मिक व्यक्ति भी अपना कार्य संचालन राजनीतिक सोच व शैली के अनुसार करने लगा है। कथित प्रजातंत्र में सर्वत्र यही व्याप्त है। चूंकि प्रजातंत्र में राजनीति में भाग लेने की गुंजाइश प्रत्येक व्यक्ति को प्राप्त है अतः वह राजनीतिक पैंतरों के अनुसार जीवन निर्वाह करने लगा है। यहां तक कि उसका हलन-चलन और परिवार का संचालन भी इसी के अनुरूप होने लगा है। स्वाभाविक है ऐसी स्थिति में धर्मक्षेत्र भी इससे अछूता न रहे, थोड़ा प्रभावित हो। स्थिति यह है कि वर्तमान में धार्मिक संस्थाओं में ही धार्मिकता का अभाव बना हुआ है। धार्मिक संस्थाओं में जैन जीवन शैली दूर की कौड़ी हो गई है। अधिकांश धार्मिक संस्थाएँ क्लब संस्कृति की ओर बढ़ने लगी हैं। उनके कार्यक्रमों में दिखावा और आडम्बरों की भरमार है। इन कार्यक्रमों में जैन धर्म के बुनियादी सिद्धान्तों यथा 'रात्रि भोजन त्याग' से भी कोई परहेज नहीं है। कार्यक्रमों की सार्थकता फोटो खिंचवाने, उन्हें समाचार पत्रों या पत्रिकाओं में प्रकाशित करवाने में निहित होती जा रही है।

सुरेन्द्र लोढा
सम्पादक

याने समग्र जैन समाज की पचहत्तर प्रतिशत संस्थाएँ अहंकार के पोषण का माध्यम बनती जा रही हैं। उनके माध्यम से रचनात्मक उपलब्धियों की अपेक्षा न्यून होती जा रही हैं। इसका एक परिणाम यह आ रहा है कि हमारी वर्तमान एवं भावी पीढ़ी में कुसंस्कारों एवं धर्मविहीनता के कारण आचरण में विकृति के नए उदाहरण बन रहे हैं और समाचार पत्रों में 'जैन' सरनेम से प्रचारित हो रहे हैं। यह स्थिति समाज का मखौल उड़ा रही है तथा मजाक वाली स्थिति बन गई है। इसमें तभी सुधार हो सकता है जब संस्थाओं और व्यक्तिगत कार्यपद्धति में धार्मिक आचरण को प्रभुत्व प्राप्त रहे।

अव्वल तो तीर्थ स्थानों की ओर भी देखे जाने की आवश्यकता है। संस्थाएं अपने टूर में तीर्थों की सुविधाओं और भोग को प्राथमिकताएँ दे रही हैं। बहुत कम ऐसी संस्थाएं हैं जो अपने कार्यक्रमों में सामूहिक पूजन या सामूहिक स्नात्र पूजा, सायंकाल सामूहिक आरती, रात्रि को भक्ति के उत्साहपूर्ण आयोजन को महत्ता देती हैं। अन्यथा भगवान के नाम मात्र के दर्शन, घूमने, फिरने, खाने, पीने, ताश या शतरंज या अन्य अमर्यादित मनोरंजन करने में ही जुटे रहते हैं। यात्रा का उद्देश्य धर्मध्यान से अधिक आमोद-प्रमोद या आनन्द मनाना हो गया है। तीर्थों पर निजी यात्राओं में जोड़े भी ठहरते हैं, जिनका ध्यान मात्र कहने को धार्मिक होता है। इनके कारण तीर्थों की स्थिति की भी आलोचना होने लगी है।

धार्मिक संस्थाओं का कर्तव्य है कि वे अपनी स्थानीय बैठकों में भी धार्मिकता को स्थान दें। जैसे बैठक प्रारंभ होने व समापन पर नवकार मंत्र का सामूहिक जाप करें। धार्मिक त्यौहारों पर ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन हो जो दान, अनुकम्पा, करुणा को साकार करते हों। माह में कम से कम एक बार सामूहिक सामायिक में सभी सम्मिलित हों। संस्थाओं में खर्चीले कार्यक्रमों के स्थान पर प्रभातफेरी जैसे आयोजन सम्मिलित हों जिन पर व्यय कुछ नहीं हो पर जनचेतना भरपूर बने। वैचारिकता को परिपक्व करने वाले विषयों पर संगोष्ठियाँ आयोजित की जा सकती हैं। इनमें सभी अपने विचार प्रकट करें। नगर में पूज्य मुनिगण या साध्वीजी के होने पर सप्ताह में एक बार उनके सान्निध्य में बौद्धिक शिविर किया जा सकता है। कुल मिला कर धार्मिकता को बढ़ावा देना आवश्यक है।

आशा है धार्मिक तथा सामाजिक संस्थाएं इन बातों पर ध्यान देंगी जिनसे व्यक्ति मात्र को प्रेरणा मिले और वे धार्मिक सुसंस्कारों की ओर अपने जीवन को अग्रसर कर सकें।

-सुरेन्द्र लोढ़ा

श्री अभिधान राजेन्द्र कोष

स्तुति अष्टक

(सा. रूचिदर्शनाश्री जी)

1. अमरकृति हैं कालजयी, अभिधान राजेन्द्रकोष सही
सप्त भागों में विभक्त है, ज्ञान राशि अथाह रही
महाकोष का आरंभ हुआ, सियाणा की भूमि खरी
ज्ञानी-ध्यानी तपोनिधि,श्री राजेन्द्रसूरि ने रची।

2. प्रथम भाग 'अ' से शुरू हो, अहोहिम पर पूर्ण हुआ
आठ सौ त्रैसठ पृष्ठ में, पिपासुओं को अमृत दिया।
त्रैसठ बरस की वय में, यह पुरुषार्थ की गंगा बही,
ज्ञानी-ध्यानी-तपोनिधि, श्री राजेन्द्रसूरि ने रची।

3. 'आ' से शुरू हुआ भाग दूसरा, ऊंहा शब्द पर है खत्म किया
ग्यारह सौ सित्यासी पत्र में, शब्द सागर लहरा दिया।
चौदह बरस की थी साधना, अप्रमत्त दशा सतत रही,
ज्ञानी-ध्यानी तपोनिधि, श्री राजेन्द्रसूरि ने रची।

4. 'ए' से प्रारंभ छोह शब्द पर, तृतीय भाग समाप्त है
तेरह सौ त्रैसठ पृष्ठ में, अथक परिश्रम व्याप्त है।
साढ़े चार लाख श्लोक का, दुर्लभ आलेखन जिसमें वही
ज्ञानी-ध्यानी तपोनिधि, श्री राजेन्द्र सूरि ने रची।

5. 'ज' से लेकर नौर्माल्या तक, चतुर्थ भाग अभिराम है
चौदह सौ चौदह पृष्ठ में, विद्वद्जन को वरदान है।
कहां क्या आगमों में लिखा है, आगमों की चाबी कही,
ज्ञानी-ध्यानी तपोनिधि, श्री राजेन्द्र सूरि ने रची।

6. 'प' शब्द से शुरू पंचम भाग है, मोह शब्द पर सम्पूर्ण हुआ,
ग्यारह सौ चालीस पृष्ठों में, संकलन अलौकिक किया।

मनीषियों की मनीषा भी देख जिसे चकरा गई,
ज्ञानी-ध्यानी तपोनिधि, श्री राजेन्द्र सूरि ने रची।

7. 'म' से लेकर व्यासु शब्द में, षष्टम भाग को वंदना,
चौदह सौ पैंसठ पत्र में, अतिसुंदर है अभिव्यंजना।
जैन दर्शन की समग्रता, साठ हजार शब्दों में कही,
ज्ञानी-ध्यानी तपोनिधि, श्री राजेन्द्र सूरि ने रची।

8. 'श' शब्द से सप्तम भाग शुरू, 'ढ' शब्द जहां पर चरम रहा,
ग्यारह सौ उनसित्तर पृष्ठों में, प्रखर पांडित्य झलक रहा।
अनमोल धरोहर जिन शासन की, स्खलना न कहीं कोई रही,
ज्ञानी-ध्यानी तपोनिधि, श्री राजेन्द्र सूरि ने रची।

गुरु भक्ति गीत

(साध्वी श्री रूचिदर्शनाश्रीजी)

तर्ज-ऐ मेरे प्यारे वतन

भोले-भोले हैं निराले, आचार्य हमारे हैं मतमाले
संत हैं निग्रन्थ ओ गुरु जयंत.....

भक्त ने जब भी की पुकार, आपने सहज ली स्वीकार
सर्दी-गर्मी का न विचार, किया है नित उग्र विहार
सेहत की परवा न की, हर एक सांस लुटा दी
दुख का जहां अंतओ गुरु जयंत.....

संघ की कठिन समस्याएं, समाधान को पा जाएं
बैर-विरोध-विपदाएं, पड़े चरण मिट जाएं
आपके प्रभाव में, शांत-शीतल छांव में
समता का है मंत्र, ओ गुरु जयंत.....

चतुर्विध संवरथ के सारथी, दृढ़ बना है संघ आज
उन्नत बनाया श्री संघ को, आपपे करते हैं नाज
संघ का आबाल नर, सबकी रखते हैं खबर
प्रेम का दिया पंथ, ओ गुरु जयंत....

गच्छ को दिपाया जैन-जगत में, जय कीर्ति चहुँ फैलाई है
न मांगा बदले में कुछ कभी, निष्कामी गुरु बलिहारी हैं
त्रिस्तुतिक संघ की है शान, भक्तों के जो हैं भगवान
रूचि रखे अरिहंत, ओ गुरु जयंत......

शांति और क्रांति के अग्रदूत

दादा गुरुदेव

(धीमी गतिवाला)

शुभ्र भाव हों, कर्मठता हो, ज्ञान की सच्ची प्यास हो, तब योग भी अच्छे उपस्थित होते हैं। महापुरुष अवसरों की प्रतीक्षा नहीं करते। उनके लिए तो उनका जीवन ही खुद सुनहरा अवसर होता है और वे उसका लाभ उठा लेते हैं। जिनके लिए जीवन ही सुनहरा अवसर है, ऐसे पुण्यात्माओं के सामने अच्छे अवसर भी सहज ही उपस्थित हो जाते हैं और वे इन अवसरों का सदुपयोग कर अपना आत्मोत्थान साध लेते हैं। महापुरुषों का लक्ष्य कभी महापुरुष बनने का नहीं होता। उनका लक्ष्य आत्मशुद्धि या आचरण शुद्धि का रहता है। इसके लिए वे विनम्र भाव से अवसरों का सदुपयोग करते जाते हैं। हमारे कथानायक दादा गुरुदेव, जिन्होंने मुनिराज के पावन वेश और उत्कृष्ट आचार को धारण कर लिया है,ऐसे मुनिराज रत्नविजयजी की ज्ञानप्राप्ति की अबूझ प्यास ने विद्वान यति श्री सागरचंद्रजी की सन्निकटता उन्हें प्राप्त करवाई थी। वही अबूझ प्यास अब पुनः उनके पास एक महान आगम ज्ञानी व्यक्तित्व को खींच कर ला रही है।

'स्नातस्या' स्तुति की तीसरी गाथा आगम शास्त्रों का सटीक यशोगान करती है। उसमें बताया गया है कि आगम आश्चर्यचकित करने वाले अनेक अर्थों से युक्त है। श्रेष्ठ बुद्धिमान मुनिगणों के नायकों द्वारा धारित है, मोक्ष का द्वार रूप है, व्रत चारित्र का भाव दृढ़ करने वाले हैं, ज्ञेय यानी जानने योग्य भावों को प्रस्तुत करने में श्रेष्ठ दीपक के समान है, सर्वलोक में सारभूत हैं। आचार्यश्री प्रमोदसूरिश्वरजी उदयपुर में स्थिरता किए हुए हैं और अहोनिश इस विचार में लगे हैं कि अपने श्रेष्ठ शिष्य रत्नविजय को आगमों का गहन अध्ययन करवाने के लिए किसके पास भेजा जाए। वैसे उन्होंने स्वयं ने भी अपने शिष्य को आगमों का अध्ययन करवाया था लेकिन आगम तो समुद्र सा गहन है जिसमें जितने गहरे गोते लगाते जाएं उतने आश्चर्यचकित करने वाले रत्न प्राप्त होते रहते हैं।

तभी योगानुयोग से विहार करते हुए ग्रामानुग्राम धर्मज्योति प्रज्ज्वलित करते हुए तपागच्छ के 68 वें गादीधर

आचार्य श्री देवेन्द्रसूरिजी जिनका अपर नाम दिणेन्द्रसूरिजी भी था और जो श्री पूज्य पदवी के धारक थे, उदयपुर पधारते हैं। वे आगम पंचांगी के गहन गंभीर ज्ञान के धारक, समर्थ ज्ञानी हैं। यह निर्णय होता है कि आगमों के अध्ययन के लिए, आगम अर्थों को, आगम रहस्यों को आत्मसात करने के लिए मुनिराज रत्नविजय को इनके ही सान्निध्य में रखा जाए। श्री पूज्य देवेन्द्रसूरिजी भी रत्नविजय जी की शुद्ध प्रज्ञा, उत्कृष्ट प्रतिभा को महसूस करते हैं, जिनशासन के प्रति उनके समर्पित भाव को पहचानते हैं, जिनशासन की महद् सेवा कर सकने की उनकी योग्यता का अपनी ज्ञान दृष्टि से आकलन करते हैं और उन्हें अपने शिष्य के रूप में स्वीकार कर लेते हैं। उनका मार्गदर्शन, उनका साथ, उनकी सेवा में अपना समर्पित भाव आगे चलकर मुनिराज रत्नविजयजी को शांति और क्रांति के अग्रदूत की महान भूमिका निभाने में बहुत सहायक बनता है।

आगे के घटनाक्रम से पहले यहां अंतराल में जो कुछ हुआ वह देखें। मुनिराज रत्नविजयजी बड़ी दीक्षा के लिए जिन योग्यताओं की प्राप्ति आवश्यक है, उसमें निपुण हो गए थे। एतदर्थ श्रीमद् विजयप्रमोद सूरिश्वरजी के मार्गदर्शन में मुनिराज हेमविजयजी ने सन् 1852 संवत् 1909 पावन तिथि अक्षय तृतीया को झीलों की प्रशान्त नगरी उदयपुर में ही मुनिराज रत्नविजयजी को बड़ी दीक्षा भी प्रदान की, जिसका महोत्सव उदयपुर के धर्मालुजनों ने अत्यन्त धूमधाम से किया। तदनन्तर श्रीमद् प्रमोद सूरिजी एवं श्रीमद् देवेन्द्रसूरिजी ने मुनिराज रत्नविजय जी की ज्ञान की विविध विधाओं से अलंकृत विद्वत्ता का सम्मान करते हुए उन्हें 'पंडित' के पद से अलंकृत किया। मुनिराज रत्नविजजी इस सारे मान-सम्मान से अलिप्त हैं। वे मात्र साक्षीभाव के साथ कि जो हो रहा है, उससे मैं अलग हूँ, मैं तो देखने और जानने वाला हूँ। पद को गुरु आज्ञा के कारण विनम्रतापूर्वक स्वीकार करते हैं। उनके लिए पद प्राप्ति या मान सम्मान का कोई महत्व नहीं है। उनका ज्ञान अभ्यास जिनशासन का विनीत सेवक बन सकने की योग्यता प्राप्त करने के लिए था। उन्हें यह दृढ़ प्रतीति थी कि आत्मोत्थान का राजमार्ग जिनशासन की सेवाभक्ति ही है।

पांच वर्षों के गुरु विरह के बाद कुछ समय साथ रहकर पुनः गुरु विरह सहने के लिए मुनिराज रत्नविजयजी तैयार हो रहे हैं। रत्नविजयजी के संवेदनशील मानस के लिए यह सब कितना कठिन रहा होगा, इसकी कल्पना कर पाना भी कठिन है। सैनिक, सेनापित की आज्ञा को देशसेवा के लिए जैसे हंसते हंसते स्वीकार कर लेता है, वैसे ही रत्नविजयजी ने भी गुरु आज्ञा को

जिनशासन की सेवा के लिए स्वीकृत किया। श्रीपूज्य देवेन्द्रसूरिजी के साथ आगमों के अभ्यास के लिए उनका विहार हो जाता है।

साधु की वास्तविक आँख कौन सी है? कहा गया है कि आगम चक्षु साधु। साधु भगवंत सत्स्वरूप को, तत्व स्वरूप को, संसार स्वरूप को, आत्मस्वरूप को शास्त्र चक्षुओं से देखते हैं, सम्यक् दृष्टि से देखते हैं। शास्त्रों के आधार पर उनका आचरण होता है, उपदेश होते हैं। शास्त्रों के गहन अध्ययन के प्रकाश में उन्हें अगम अगोचर आत्मतत्व का अनुभव रस भी प्राप्त होने लगता है।

मुनिराज रत्नविजयजी अपनी विचक्षण प्रज्ञा से आगम चक्षु का विचक्षण महत्व जानते थे। एतदर्थ वे आगमों का विधिवत अध्ययन करने के लिए प्रमादरहित हो जुट गए। अपने गुरु के प्रति उनके हृदय में पूर्ण विनीत, समर्पित एवं अहोभाव था। अंतर के भावों के साथ गुरुभक्ति करते हुए, गुरुसेवा करते हुए वे ज्ञानार्जन कर रहे थे। गुरुभक्ति वो अनमोल बीज है जो पल्लवित और विकसित हो शिष्य को ज्ञानवृक्ष की छाया प्रदान करता है। गुरु देवेन्द्रसूरिजी अपने शिष्य की अन्तस्थः विनयशीलता का अनुभव कर रहे थे। उन्हें अपने ऐसे विनीत और बुद्धिमान शिष्य को शिक्षादान करने में अतीव प्रसन्नता का अनुभव हो रहा था। उन्होंने अपने सुपात्र शिष्य के लिए अपना सम्पूर्ण ज्ञान घट समर्पित कर दिया।

मुनिराज रत्नविजयजी आगमों के गूढ़ रहस्यों को आत्मसात करते जा रहे थे। वे नितप्रति आगम सागर में गहरे उतरते जाते, नित नये अर्थों को प्राप्त करते। ऐसा करने में उन्हें अतीव ज्ञानानन्द की प्राप्ति होती थी। वे जिनशासन के प्रति और निःस्पृह गुरुदेव के प्रति कृतज्ञ भाव से भर उठे थे। उनकी अन्तरात्मा में धन्य गुरुदेव, धन्य जिनशासन का नाद गूंजता था। आगम समुद्र में अवगाहन का उन्हें अवसर मिला, इसके लिए वे अपने आपको धन्यभाग मानते थे। तीन वर्षों तक अनवरत गहन परिश्रमपूर्वक अध्ययन करके वे आगम पंचांगी में निष्णात हो जाते हैं। श्रीपूज्य देवेन्द्रसूरिजी ने मुनिराज रत्नविजय जी की योग्यता को देखकर जिनशासन की प्रभावना में काम आ सके, ऐसी अनेक दुरूह विद्याएं भी उन्हें प्रदान की थीं।

अध्ययन की समाप्ति पर श्रीमद्विजय देवेन्द्रसूरिजी, मुनिराज रत्नविजयजी की विरल प्रतिभा और ज्ञान ग्रहण कर सकने की तीव्र प्रज्ञा की बहुत अनुमोदना करते हैं और उन्हें 'पन्यास' यानी 'प्रज्ञांश' का पद प्रदान करते हैं। एक तरह से देखें तो पन्यास पद गीतार्थता का प्रतीक माना जा सकता है। गीता गीत यानी आगम और उसके अर्थ यानी रहस्यों को जो आत्मस्थ कर लेते हैं, वे गीतार्थ

होते हैं। आचार्यश्री देवेन्द्रसूरिजी, मुनिराज रत्नविजयजी को उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं देते हैं, हृदय से आशीष देते हैं कि सर्वजीवों के लिए अमृत सम कल्याणप्रद जिन शासन के महान् सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार करके खूब-खूब धर्म प्रभावना करना।

मुनिराज रत्नविजयजी आगम चक्षु प्रदाता गुरुदेव को अत्यन्त कृतज्ञ भाव से कहते हैं कि कभी भी मेरे योग्य कुछ सेवा हो तो मुझे अवश्य याद करना। मैं प्राण पण से उसे स्वीकार करूंगा। यह वादा करके और खमत खामणा करके वे अपने गुरुदेव श्रीमद्विजय प्रमोदसूरिजी के पास लौट आते हैं।

आगे हम देखेंगे कि अपना वादा निभाने के लिए उन्हें वापस श्रीमद् विजय देवेन्द्रसूरिजी के पास जाना पड़ता है और तब घटनाचक्र ऐसा मोड़ लेता है जिससे मुनिराज रत्नविजयजी का शांति एवं क्रांति स्वरूप निखर कर सामने आता है। यह सब क्रमशः...

सुभूम चक्रवर्ती

सुभूम चक्रवर्ती नामक आठवें चक्रवर्ती अरनाथ भगवान के बाद हुये । पूर्वभव में विशाला नामक नगरी में भूपाल राजा थे । एक बार शत्रु से पराजय होने के कारण वैराग्य हुआ व दीक्षा ली, लेकिन पराजय का दुःख भुला नहीं पाये आगे जाकर किया नियाणा कि मेरे संयम व तप के प्रभाव से मैं चक्रवर्ती बनूँ। आयुष्य पूर्ण होते ही सातवें देवलोक में देव हुए । वहां से मरकर कृतवीर्य राजा, तारा राणी के सुपुत्र सुभूम चक्रवर्ती बने । अपने पिता व दादा अनंतवीर्य की हत्या करने वाले परशुराम ने सात बार पृथ्वी के सर्व क्षत्रियों का नाश किया था, इस वैर का बदला लेने के लिये सुभूम ने परशुराम का वध कर दिया और इक्कीस बार जगत के सर्व ब्राह्मणों का नाश करवाया । इस प्रकार के रौद्र ध्यान से सातवीं नरक का कर्म बंधन किया । अंत में भरत क्षेत्र के छः खंड के राज्य को जीतने पर भी संतोष न होने पर धातकी खंड के छःखंड का राज्य जीतने निकले । तब रास्ते में चक्रवर्ती संपूर्ण सैन्य पालकी उठाने वाले 16 हजार देवों ने एक साथ ही सोचा कि अगर मैं न उठाऊँ तो क्या होगा? और सभी देवों ने समुद्र में एक साथ पालकी छोड दी। उसी समय सैन्य सहित चक्रवर्ती मरकर सीधे नीचे सातवीं नरक में पहुँचे ।

- उद्देश्य -
समाज संगठन, धार्मिक शिक्षा प्रचार
समाज सुधार, आर्थिक विकास

गुणों से शोभित गुरुदेव

(साध्वी तृप्तिदर्शना श्रीजी)

गुरुदेव!!!

आपके गुणों का वर्णन करना यानि आकाश के तारे गिनने का प्रयास करना। आपका मेरे जीवन में अनन्य उपकार है, क्योंकि आपने मुझे डूबते हुए संसार में से तिराया है। आपके उपकारों का, आपके गुणों का वर्णन करना अशक्य है फिर भी, गुरुदेव आपके कुछ गुणों का वर्णन इस मंद बुद्धि ने किया है–

1. गुरुदेव दीपक के समान हैं:– मेरे गुरुदेव दीपक के समान हैं। दीपक जैसे अंधेरा दूर करना सिखाता है वैसे ही गुरुदेव हमारे जीवन में रहे अज्ञान रूपी अंधकार को दूर करना सिखाते हैं। ज्ञान रूपी प्रकाश से हमारी आत्मा को प्रकाशित करते हैं। जैसे दीपक स्वयं के प्रकाश से स्वयं को और दूसरों को भी प्रकाशित करता है, उसी प्रकार गुरुदेव भी रत्नत्रय के द्वारा मोहरूपी अंधकार का नाश करते हैं। दुःख का सबसे बड़ा कारण अज्ञानता है, और हम इसी कारण से संसार में घूम रहे हैं। अब हमें सद्गुरु का शरणा मिला है, वो हमारी अज्ञानता को शनैः शनैः दूर करके अवश्य ही हमारी आत्मा को परम पवित्र और पावन बनायेंगे। जैसे दीपक सबको प्रकाश देता है, वैसे गुरुदेव भी हमें ज्ञान रूपी अमृत का प्रकाश देते हैं। अगर हमारे गुरु नहीं होते तो हमारा जीवन भी शुरु नहीं होता है।

2. गुरुदेव भगवान के समान हैं:– मेरे गुरुदेव भगवान के समान हैं। इस पंचम काल में गुरुदेव ही हमारे प्राणाधार हैं। हम शिष्यों के लिए गुरुदेव प्रभु तुल्य हैं। क्योंकि प्रभु के मार्ग पर चलने वाले गुरुदेव हमें सद्मार्ग बताते हैं, सद्ज्ञान देते हैं। जो गुरु को इस भव में भगवान के समान मानते हैं, उनकी पूजा करते हैं, उनकी सेवा करते हैं, उन्हें भवान्तर में अवश्य ही साक्षात् भगवान मिलते हैं। सद्गुरु के उपदेश के बिना सर्वज्ञ प्रभु की पहचान नहीं होती है। गुरु के प्रति उत्तम कोटि के बहुमान भाव रखने पर अवश्य केवलज्ञान की प्राप्ति होती है। जैसे चंडरूद्राचार्य के शिष्य को केवलज्ञान की प्राप्ति हुई थी। गुरु के प्रति बहुमानभाव रखने से हमारे अंदर रहा हुआ अहं भाव, मिथ्याभाव, ममत्वभाव आदि का नाश होता है। गुरु के प्रति समर्पणभाव लाने के लिए 'मैं' को हटाना होगा। 'मैं कुछ भी नहीं हूँ' और 'सब कुछ तू ही' जैसे भाव जब आएंगे तब हमको गुरु के प्रति सच्चा समर्पण भाव महसूस होगा। हमारे दिमाग में यह बात सदा स्थिर रहनी चाहिए कि गुरुदेव हमेशा सही होते हैं। जब हमको ऐसा

लगेगा, हमें गुरु की कोई भूल नहीं दिखेगी, कोई दोष नहीं दिखेगा। कहते हैं- 'प्रभु कृपा से गुरु मिले और गुरु कृपा से प्रभु मिले।'

3. गुरुदेव सूरज और चांद के समान हैं:- मेरे गुरुदेव सूर्य और चन्द्रमा के समान हैं। आप सूर्य के समान तेजस्वी हैं। जैसे सूर्य अपने तेज से सबको प्रकाशित करता है, वैसे ही आपकी तेजस्वी वाणी, आपका तेजस्वी चेहरा सबको उज्ज्वलता प्रदान करता है, सबको प्रकाशित कर देता है। आप चन्द्रमा के समान शीतल हैं। आपकी शीतल छत्रछाया में रहने से सबको ही शीतलता और शांति मिलती है। आपके मुख से निकले हुए वचन हमें किसी के भी प्रति क्रोध नहीं करने व चंद्रमा की भांति शांत व शीतल रहना सिखाते हैं। आप भी चन्द्रमा की भांति सदा शांत रहते हैं। शांत मन से सबकी बातें सुनते हैं, लेकिन किसी के ऊपर गुस्सा नहीं करते हैं, बल्कि मुस्कराते हैं। कोई कितना ही परेशान करे, निंदा करे, कष्ट दे, प्रशंसा करे फिर भी आप शांत मन से सहन करते हैं, मन में शीतलता बनाए रखते हैं।

4. गुरुदेव आँखों के समान हैं:- मेरे गुरुदेव आँखों के समान हैं। जैसे सारी इन्द्रियाँ हों और आँखें न हों तो? शेष इन्द्रियों का कोई मूल्य नहीं होता क्योंकि आँखों की उन पर नियंत्रण करने और उपयोग करने में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। ऐसे ही हमारे पास सभी प्रकार की सामग्री हो और जीवन में गुरुदेव न हों तो सब व्यर्थ है, सब मूल्यहीन हैं। गुरुदेव आप हमारे जीवनाधार, प्राणाधार, रक्षणहार, तारणहार हैं, आपके बिना हम निराधार हैं। हमें संसार रूपी अटवी में गिरने से बचाने के लिए आप सारणा, वारणा, चोयणा, पडिचोयणा के द्वारा हमारी रक्षा करते हैं। हम सबका हित सोचते हैं। हमें वाचना देकर हमारे अन्दर छिपे हुए दुर्गुणों को दूर करते हैं। दोष रूपी कचरे को बाहर निकाल फेंकते हैं और हमें प्रभु के मार्ग पर चलने की योग्यता और प्रेरणा देते हैं।

5. गुरुदेव दिग्दर्शक के समान हैं:- मेरे गुरुदेव दिग्दर्शक के समान हैं। गुरुदेव हमें सही दिशा दिखाकर हमारी दशा को सुधारते हैं। संसार में परिभ्रमण करते हुए जीवों को मुक्ति की सच्ची राह बताते हैं। अनादि काल से भटकते जीवों की अज्ञानदशा को दूर करते हैं। हमें सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन और सम्यग्चारित्र से परिचित कराते हैं। जिन आज्ञानुसार चलने का निर्देशन देते हैं। गुरुदेव कहते हैं कि सीधा चल यानि इधर-उधर ना भटकते हुए एक ही दिशा में सीधा चलें। गुणों की खान गुरुदेव हमें उपदेश देकर दिशा बतला हमें धन्य बनाते हैं।

गुरुदेव आपके जन्मदिन पर हम सबकी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ... आप स्वस्थ रहें... आप चिरायु हों... और आपके सद्गुण हमें भी स्पर्श हों... हम भी आपके जैसे बनें। यही कामना....।

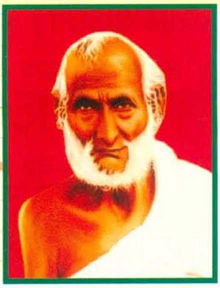

अध्यात्म योगी

श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरिश्वरजी म.सा. रचित

अध्यात्म-पद

(श्री जे.के. संघवी, थाने)

राग-कुबजाने जादू डारा, ए राह

सद्गुरु ने बाण मारा, मिथ्या भरम विदारा रे।। ।।सद्गुरु0।।
ब्रह्म एक छे लक्षण लक्षित, द्रव्य अनंत निहारा।
सर्व उपाधि से वर्जित शिव ही, विष्णु ज्ञान विस्तारा रे। ।।सद्गुरु1।।
ईश्वर सकल उपाधि निवारी, सिद्ध अचल अविकारा।
शिव शक्ति जिनवाणी संभारी, रूद्र है करम संहारा रे। ।।सद्गुरु 2।।
अल्ला आतम आपहि देखो, राम आतम रमनारा।
कर्मजीत जिनराज प्रकासे, नयथी सकल विचारा रे। ।।सद्गुरु 3।।
स्याद्वाद सर्वांगी जाणो, तीरथ तारण हारा।
मोक्षसाधक ते साधु समझो, सत्य बोल मुनि धारा रे। ।।सद्गुरु 4।।
शुभ योगे वरते ते योगी, जति इन्द्रि जीतारा।
संवर रक्षक सो संवेगी, भगत जैन भजनारा रे। ।।सद्गुरु 5।।
ग्रन्थ रहित निर्ग्रन्थ कहीजे, फकीर फिकर फकनारा।
ज्ञान वास में बसे संन्यासी, पंडित पाप निवारा रे। ।।सद्गुरु 6।।
सत्-चित् आनंद रूप निवासी, परम हंस पदवारा।
'सूरिराजेन्द्र' सो केवली सच्चा, आतम जास उजारा रे। ।।सद्गुरु 7।।

भावार्थ :- सद्गुरु ने ज्ञानरूपी बाण छोड़कर मिथ्या भ्रम को छेद दिया है। अनन्त द्रव्य को निहारने वाला एक ही 'ब्रह्म' यानि आत्मा है। जो लक्षण से जाना जा सकता है। सर्व उपाधि से रहित 'शिव' और ज्ञान का विस्तार करने वाला 'विष्णु' कहलाता है।।1।।

सकल उपाधि का निवारक ही 'ईश्वर', अचल एवं अविकारी 'सिद्ध', जिनवाणी ही 'शिवशक्ति' एवं कर्म का संहार करने वाला 'रूद्र' कहलाता है।।2।।

आत्मा स्वयं 'अल्ला' है, आत्मा में रमण करने वाला 'राम' है, कर्मों को

जीतने वाले 'जिनराज' हैं, जो नय से सम्पूर्ण वस्तु स्वरूप को प्रकाश करने वाले हैं।।3।।

सर्वांगी 'स्याद्वाद' जानो, तारने वाला 'तीर्थ' है। मोक्ष साधक 'साधु' को समझो। सत्य बोलने वाले 'मुनि' पद धारक हैं।.4।।

शुभ योग में रहने वाला 'योगी', इन्द्रिय को जीतने वाला 'यति', संवर का रक्षक वह 'संवेगी', जिनेश्वर की आज्ञा पालने वाला 'भक्त' है।।5।।

बाह्य-अभ्यंतर ग्रंथि से रहित 'निर्ग्रन्थ', चिन्ता रहित 'फकीर', ज्ञान रूपी घर में बसने वाला 'संन्यासी' एवं पाप से दूर रहने वाला 'पंडित' है।।6।।

सत्-चित्-आनंद में निवास करने वाला 'परम हंस' पद धारक है। 'राजेन्द्रसूरि' कहते हैं कि वही सच्चे केवली हैं, जिनकी आत्मा अनंत ज्ञान से सदैव प्रकाशमान है।।7।।

अचूक मुहूर्त निर्णय

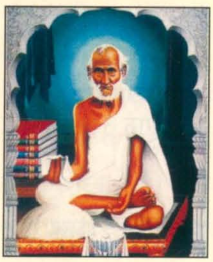

आहोर में पूनमियाँ गच्छ के अनुयायियों ने श्री ऋषभ जिनालय के लिए कुछ नये जिन बिम्बों की अंजनशलाका का उत्सव आयोजन रखा था। फाल्गुन वदी पंचमी सम्वत् 1955 का दिन आयोजन के लिए शुभमुहूर्त रखा गया । चूँकि पूनमियाँ गच्छ के लोग श्रीमद् विजयराजेन्द्र सूरिजी के प्रति श्री पूज्य को अंजनशलाका का विधि विधान सम्पन्न करने के लिए बुलाया था। श्री गुरुदेव के अन्तर में तो सदैव सबके हित की कामना निवास करती थी। वे सबके भले की बात सोचते थे । गच्छ, पंथ, मजहब सब उनके लिए गौण थे। उन्होंने जयपुर से आये श्री पूज्य को कहला भेजा- "ऋषभदेव जी का मंदिर उत्तराभिमुख है। निर्धारित मुहूर्त उसके अनुकूल नहीं है। सदोष है। इससे हानि होने की सम्भावना है । आप कोई अन्य उपयुक्त मुहूर्त निश्चित करके कार्य सम्पन्न करेंगे तो उत्तम रहेगा ।"

कहावत है, 'बिना माँगी सीख किसी को सुहाती नहीं ।' स्वार्थ से बुद्धिभ्रम पैदा हो जाय तो कौन ध्यान दे। जयपुर से आये श्री पूज्यजी ने गुरुदेव की बात का प्रत्युत्तर देते हुए कहला भेजा- "क्या किया जाय, कोई सलाह मानने को ही तैयार नहीं है फिर, अभी यह कार्य टल गया तो हमारी ठहराई गई भेंट पूजा भी हमें नहीं मिलेगी ।"

श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरि जी की चेतावनी भरी सलाह को नजरअंदाज करके पूर्व निर्धारित मुहूर्त पर अंजनशलाका महोत्सव पूरा करने की ठानी गई । परिणाम यह निकला कि उत्सव में कई विघ्न पड़े । उधर श्री पूज्य जिनमुक्तसूरिजी वापिस जयपुर नहीं पहुँच पाये। आहार में ही उनका देहावसान भी हो गया। उपयुक्त काल निर्णय और मुहूर्त आदि के सम्बन्ध में तो गुरुदेव की वाणी अक्षरशः सच होती थी ।

- भगवान सराय वरिष्ठ

जैन इतिहास के अधखुले पृष्ठ

ओसवाल जाति और उसकी उत्पत्ति-4

(मुनिराज श्री चारित्ररत्नविजयजी म.सा.)

जैन धर्म विषय प्रश्नोत्तर नामक पुस्तक के अनुसार जैनाचार्य श्री विजयानंदसूरिजी ने जैन धर्म की प्राचीनता बतलाते हुए व भगवान पार्श्वनाथ के होने का प्रमाण देते हुए उपकेश गच्छाचार्यों से श्री रत्नप्रभसूरिजी ने निर्वाण से 70 वर्ष में उपकेश नगरी में ओसवाल बनाया लिखा है।

यदि जैन धर्म के ग्रन्थों व इतिहास संबंधी अनेक पुस्तकों को आधार मानकर देखा जाये तो भी श्री रत्नप्रभसूरिजी ने ही विरात 70 वर्ष में ओसवाल जाति की स्थापना की है।

प्राचीन जैन शिलालेखों को देखा जाये तो ओसवाल जाति के नाम से पुकारी जाती है। इसका कारण है कि जिस नगरी ओसिया में इस जाति की स्थापना हुई, उस नगर के नाम पर ही यह जाति ओसवाल हो गई। आज भी कई जातियाँ नगरों के नाम से हैं, जैसे महेश्वर नगरी में माहेश्वरी, खंडवा में खंडेलवाल, पाली से पालीवाल आदि नाम नगरों व ग्रामों के नाम पर आधारित हैं।

ओसवाल जाति की उत्पत्ति को लेकर इतिहासकार व पुरातत्व विद्वानों के अलग मतों को जानने के प्रयासों में इस जाति की प्राचीनता को लेकर कुछ नकारात्मक व सकारात्मक बातें सामने आ रही हैं। हम यह बताना चाहते हैं कि कुछ समय के लिए यदि यह मान भी लिया जाय कि ओसवाल जाति के प्राचीन शिलालेख न मिलने पर उस जाति को अर्वाचीन मान लें पर यह तो निश्चित ही मानना पड़ेगा कि विक्रम की दसवीं सदी के पहले जैन श्वेताम्बर के हजारों आचार्य, लाखों लोग जैन धर्म का पालन करते थे। हजारों जैन मंदिर थे। ऐसे में उनके उपासकों का विशाल क्षेत्र में होना स्वाभाविक बात है। यदि हम शिलालेखों को ही आधार मानें तो किसी भी जैन धर्म पालने वाली जाति का शिलालेख नहीं मिलता है। इस आधार पर हम यह नहीं कह सकते हैं कि जिस समय के शिलालेख नहीं मिले, उस समय जैन धर्म को पालने वाली कोई जाति नहीं थी या किसी ने जैन मंदिर-मूतियाँ नहीं बनवाई थीं। यहाँ तात्पर्य यह है कि किसी जाति का प्राचीन-अर्वाचीन होने का आधार केवल शिलालेख की उपलब्धता पर नहीं होता है।

दूसरे भी अनेक प्रमाण होते हैं जिसके

जरिए इस बात का निर्णय कर सकते हैं।

हालांकि ओसवाल जाति की उत्पत्ति को लेकर इतिहासकार व पुरातत्व विद्वानों में कहीं-कहीं एकमतता तो कहीं समयकाल को लेकर भिन्न-भिन्न राय भी जरूर हैं। लेकिन फिर भी उपरोक्त दिए गए तथ्यों व घटनाक्रम उल्लेख को यदि मानें तो इस जाति की प्राचीनता लगभग वि.सं. से करीब 400 पूर्व की या इन वर्षों के आसपास हो सकती है। फिर भी यदि कोई इतिहासकार या पुरातत्व विद्वान इस जाति की प्राचीनता को लेकर पूर्णतः आश्वस्त नहीं हैं तो वे अपनी खोज को आगे जारी रख सकते हैं। यह एक चुनौती भरा और जटिल कार्य है।

अन्त में यही कहा जा सकता है कि किसी भी जाति का गौरव उसकी प्राचीनता से नहीं बल्कि उसके विकास और उत्कर्ष में निहित होता है। फिर भी प्राचीनता को लेकर जिज्ञासा होना स्वाभाविक है।

(समाप्त)

काव्यकुंज

कभी भी किसी तरह का अभिमान मत करो

गुणीजनों का आप सदैव गुणगान करो,
संत कोई भी पधारे, उनका सम्मान करो।
एक बात यह सदैव याद रखकर के चलो
कभी भी किसी तरह का अभिमान मत करो।

अन्याय के आगे हम कभी झुक नहीं सकते,
घबराकर कभी भी हम रूक नहीं सकते।
विश्वास हिमालय सा अचल है हमारा
तूफान कितने ही हों, कदम डिग नहीं सकते।

कभी भी किसी पर व्यंग्य मत करो,
इज्जत पर दाग लगे वह संग मत करो।
मिल जुलकर है रहना, यह युग का तकाजा
बेवजह किसी से भी जंग मत करो।

जो अच्छे हैं, उन्हें अच्छाई में रस आता है
कइयों को बात परायी में रस आता है।
अपने घोड़े को सभी छाया में बांधते हैं, किन्तु
धन्य हैं वे, जिन्हें भलाई में रस आता है ।

आपसे किसी का अच्छा हो सके तो कीजिये
किसी को सहयोग दे सकें तो दीजिये।
कुछ भी नहीं कर पायें तो यह तो करें-
लोगों को लड़ाने/भिड़ाने में ना रस लीजिए।

-कमल

अध्यात्म जगत का महासूर्य

पू. आचार्य यतीन्द्र सूरीश्वरजी म.सा.

(साध्वी श्री रूचिदर्शनाश्रीजी)

(पूर्व अंक से आगे)

इस अल्पावधि में भी आपने अपने महायोगी गुरुराज से ज्ञान-ध्यान-अनुभव एवं अचिंत्य शक्ति को पाया तथा अपने मन को दृढ़तापूर्वक समाधि की अवस्था में सुस्थिर किया। आपकी प्रवचन शैली बहुत आकर्षक थी, जो श्रोतागण को जगाने, उनमें कर्तव्यबोध कराने में सफल रहती थी। आपकी वाणी अनुभूतियों से संश्लिष्ट थीं और प्रस्तुतिकरण में एक नवीन पद्धति थी। आपकी वचन संपदा का सौन्दर्य पाकर प्रबुद्ध जनमानस भी अभिभूत हुए बिना नहीं रहता था। प्रवचन शैली की प्रबुद्धता, स्पष्टोक्ति एवं निर्भिकता से प्रभावित होकर बागरा में आचार्यदेव श्रीमद् विजय धनचन्द्रसूरिजी म.सा. ने आपको 'व्याख्यान वाचस्पति' पद से विभूषित किया। आपके अप्रतिम ज्ञान एवं अनूठी प्रतिभा से प्रभावित होकर जैन श्रीसंघ ने जावरा में उपाध्याय पद से अलंकृत किया।

'तित्थयर समो सूरि'

गुरुदेव छोटी उम्र में ही निर्माता की गरिमामयी अर्हता हासिल कर चुके थे। अतः श्रमण से उपाध्याय और उपाध्याय से आचार्य हुए। संवत् 1995 में आहोर में आपको श्रीसंघ के नायक के रूप में आचार्य पद से समालंकित किया गया। आपने ज्ञान और चारित्र की जीवनस्पर्शी साधना के बल पर कितनी ही सिद्धियाँ हस्तगत कीं। आपकी संयम साधना निर्मल, कठोर और उच्चतम थी। आपने कभी भी सुविधावाद को प्रश्रय नहीं दिया। आपमें आचारनिष्ठा का अजस स्रोत प्रवाहित था। समाधि को अक्षुण्ण रखने में आप पूर्णतः निष्णात थे।

एक बार की बात है जब आपके शरीर के किसी भाग में शल्यक्रिया करनी थी। डॉ. ने आपको बेहोश करना चाहा तो आपने मना कर दिया तथा आत्मभावों में स्थिर होकर पूरी तरह से जाग्रत अवस्था में ही आपने आपरेशन करवाया। समता की उच्चतम स्थिति आप में दृष्टिगोचर होती थी। सत्य की प्रतिष्ठा के लिये आपके चरण अविराम रूप से आगे बढ़ते रहे। कई

बार आपको शास्त्रार्थ भी करने पड़े। एक बार शास्त्रार्थ में रतलाम के ठाकुर साहब श्री सज्जनसिंहजी के द्वारा आपको पीताम्बर विजेता के अलंकरण से सम्मानित किया गया था। आपकी वाणी अमोघ थी। आपने कभी भी पराजय का सामना नहीं किया। ध्यान से निर्मित आपके अप्रतिम प्रभामंडल में पहुंचकर तथा तप से दीप्त मुखकमल के दर्शन कर लोग धन्यता का अनुभव करते थे। विश्वपूज्य दादा गुरुदेव के चतुर्थ पट्ट पर विराजमान होकर आपने गच्छ की धूरी का अत्यन्त ही कुशलता से वहन किया। आपकी शासना में संघ ने प्रत्येक क्षेत्र में विकास के नए आयाम उद्‌घाटित किए।

संघ समाज के प्रति योगदान

मालवा, निमाड़, मेवाड़, गुजरात, कच्छ, सौराष्ट्र, मरूधर आदि आपके विहार क्षेत्र रहे। आपके पावन पुनीत चरण बार-बार यहाँ अंकित हुए और जनमानस को जाग्रत किया। कष्टों के बीच अविचल रहते हुए आप परोपकार के प्रसंग में नदी की तरह थे। नदी जिस तरह प्रसन्नता से कल-कल करते हुए बहती हुई तृषातुर प्राणियों को तृप्त करती है, वैसे ही बहना आप जानते थे। समाज के उत्थान के लिए आप अहर्निश चिंतनशील रहते थे। आपने अपने विलक्षण चिंतन से मानवीय समस्याओं के समाधान की दिशाएं खोलीं। संगठित समाज ही उन्नति के पथ पर अग्रसर हो सकता है, इस बात को महसूस करते हुए वि.सं.2016 कार्तिक पूर्णिमा के दिन श्री सौभाग्यमलजी की अध्यक्षता में आपने श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् की स्थापना की। यह आपकी नवोन्मेषीय प्रतिभा की ही निष्पत्ति है। युवाओं में उत्पादक ऊर्जा होती है, कुछ कर गुजरने की चाह होती है, किन्तु उसकी स्थिति ऊँचाई से आने वाले जलप्रपात की तरह होती है जिसे यदि सही दिशा न मिले तो विध्वंसक भी बन सकता है। अतः इस परिषद् में आपने युवकों को विशेष रूप से जोड़कर उन्हें सही दिशा और दशा प्रदान की। इससे युवाओं को नैतिक उत्थान मिला। परिषद् के माध्यम से सामाजिक एवं धार्मिक विसंगतियों का निर्मल कायाकल्प हुआ। परिषद् की स्थापना से आज तक 62 वर्ष के अंतराल में कितनी ही संस्थाएँ आईं और काल कलवित हुईं किन्तु परिषद् अपनी अस्मिता को उत्तरोत्तर निखारती जा रही है।

धन्य हुई कलम भी – जिनवाणी की गहनता को जनसाधारण भी सरलता से समझ सके इस दृष्टि से आपने 1 जनवरी 1954 को शाश्वत धर्म मासिक पत्रिका की स्थापना की। पत्रिका सामाजिक गतिविधियों, तत्व ज्ञान, जैन इतिहास, प्रवचन, प्रेरणास्पद लेख, कविताओं, प्रभु स्तवन आदि से सज्जित होकर पाठकों के हाथ में पहुँचती है। पाठकगण की अत्यन्त प्रिय एवं रुचिकर पत्रिका है, जिसका वे बेसब्री से हर महीने इंतजार करते हैं।

आज शाश्वत धर्म पत्रिका निर्विघ्न निरंतर गतिशील रहते हुए अपनी 62 वर्ष की यशस्वी यात्रा सम्पन्न कर चुकी है।

किसी भी समाज के वातावरण को निर्मल बनाने में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इस हेतु आपने दो गुरुकुल की स्थापना की। श्री राजेन्द्र गुरुकुल बागरा एवं श्री आदिनाथ राजेन्द्र जैन गुरुकुल मोहनखेड़ा तीर्थ। कोई भी राष्ट्र, संघ अथवा समाज सद्साहित्य के बिना उन्नति को प्राप्त नहीं कर सकता है। आपने अप्रतिम साहित्य का सृजन करके साहित्य के क्षेत्र में एक स्वर्णिम अध्याय जोड़ा है। विषय और भाषा की दृष्टि से आपकी रचनाओं में विविधता रही है। आपकी लेखनी का अत्यन्त असाधारण और अद्वितीय कार्य है विश्वपूज्य राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. द्वारा रचित अभिधान राजेन्द्रकोष का संपादन करना। आपके जीवन में गुरुभक्ति एवं ऋणमुक्ति का यह आनन्ददायी अवसर था। कुल 10749 पृष्ठों से युक्त सप्तखंडात्मक श्री अभिधान राजेन्द्रकोष का संपादन कार्य बहुत ही सत्वपूर्ण, पांडित्यपूर्ण एवं साहसिक था, जिसे आपने एवं मुनि दीपविजयजी म. (बाद में आचार्य भूपेन्द्र सूरिजी) ने मिलकर बड़ी लगन के साथ पूर्ण किया। जिनागम में निहित जिन सिद्धान्तों को विश्वपूज्य दादा गुरुदेव ने प्रतिपादित किया था आपकी लेखनी ने उसका पुनरुच्चार एवं संरक्षण किया। इस हेतु तीन थुई की प्राचीनता पीत पटाग्रह मीमांसा, कुलिंगी वदनोद्गार मीमांसा, गुरुपूजा आगम विहित आदि कृतियां अस्तित्व में आईं। इन कृतियों में आपने आगमिक संदर्भ देकर प्रांजल अभिव्यक्ति के द्वारा भ्रांति के कुहासे को दूर किया है।

यतीन्द्र विहार दिग्दर्शन (भाग 1 से 4), मेरी नेमाड़ यात्रा और गोड़वाड़ यात्रा ये कृतियां इतिहास की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं उपयोगी सिद्ध हुईं। इनमें अनेकानेक ग्राम-नगरों के ऐतिहासिक जिनमंदिरों, उनमें अवस्थित प्राचीन, अर्वाचीन जिन प्रतिमाओं के शिलालेख एवं उन स्थलों की भौगोलिक संरचना का रचनात्मक ढंग से उल्लेख किया गया है। कलम के कीर्तिपुरुष पू. गुरुदेव ने साध्वीव्याख्यान समीक्षा एवं स्त्री शिक्षा प्रदर्शन पुस्तक का आलेखन कर महिला जागृति की गरिमा को प्रतिष्ठित किया। संस्कृत भाषा के विज्ञ पू. गुरुदेव ने बृहद विद्वदगोष्ठी, जगड़ुशाह चरित्रम् आदि अनेक संस्कृत ग्रन्थ साहित्य का भी सृजन किया। गद्य और पद्य दोनों ही रूपों में आपने 55 महत्वपूर्ण ग्रंथों की रचना की। आपकी सशक्त लेखनी आध्यात्म जगत की अमूल्य संपदा सिद्ध हुई हैं।

सवीजीव करूं शासन रेसि- नमस्कार महामंत्र के तृतीय पद पर आरूढ़ होकर आपने अनेक मुमुक्षु आत्माओं को सुख का दान एवं दुख का क्षय किया अर्थात् उन्हें दीक्षा प्रदान की। जैसे वृक्ष का

आलंबन लेकर लताएं ऊपर चढ़ती हैं, वैसे ही आप जैसे महान गुरु के आलंबन से शिष्य-शिष्याओं ने अपने जीवन को उन्नत बनाया। आपने माली बनकर अपने शिष्य एवं शिष्याओं के संयम रूपी बाग में सारणा-वारणा-चोयणा-पडिचोयण के माध्यम से ज्ञान-ध्यान, तप-त्याग के विभिन्न पुष्प विकसित किए। आपकी शिष्य संपदा में से दो मुनि आचार्य पद पर आरूढ़ हुए 1. आ. विद्याचन्द्रसूरिजी, 2. राष्ट्रसंत गच्छाधिपति वर्तमानाचार्य श्री जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.।

आपकी अमोघ वाणी से प्रेरित होकर आपकी निश्रा में 9 छःरि पालित पैदल तीर्थयात्रा संघ का आयोजन हुआ। 8 उपधान तप की आराधनाएं हुईं। पंचम काल में भव्य जीवों के लिए जिन प्रतिमा एक पुष्ट आलंबन है। वीतराग भाव से युक्त भगवान को देखते ही वीतरागता के भाव उद्दीप्त होने लगते हैं। अतः आपके शुभ हाथों से कुल 52 लघु एवं वृहद प्रतिष्ठाएं निष्पन्न हुईं। आपने जंगम तीर्थ के रूप में स्थावर तीर्थ को मजबूत किया। श्रीस्वर्ण गिरि तीर्थ जालोर, श्री भांडवपुर तीर्थ, श्री कोरटाजी तीर्थ, श्री मोहनखेड़ा तीर्थ, श्री तालनपुर तीर्थ, श्री लक्ष्मणी तीर्थ के आप उद्धारक एवं कहीं संस्थापक भी रहे हैं। इस प्रकार जीवन की झंझावातों के बीच सुदृढ़ रहकर आपने शासन की प्रकृष्ट प्रभावना की।

अद्वितीय शिल्पी :- प्रभु शासन एवं गुरुगच्छ के गौरव में उत्तरोत्तर अभिवृद्धि हो, भावी उज्ज्वल बने इस हेतु आप सदैव चिंतनशील रहते थे। वि.सं.2016 के राजगढ़ चातुर्मास से आपके शारीरिक स्वास्थ्य की प्रतिकूलता बढ़ने लगी। आपको घटनाओं का पूर्वाभास हो जाता था। संघ और समाज के भविष्य को निर्विवाद और सुनिश्चित करने हेतु आपने अपने रत्न के पिटारे में से दो अत्यन्त तराशे हुए रत्न बाहर निकाले। वि.सं. 2017 मोहनखेड़ा तीर्थ में आपके अंतिम चातुर्मास में कार्तिक पूर्णिमा के मंगल दिन आपने पूज्य मुनिराज श्री विद्याविजयजी को भावी आचार्य एवं मुनिराज श्री जयंतविजयजी को उपाचार्य घोषित किया। शाश्वत धर्म एवं श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् का उत्तरदायित्व मुनिराज श्री जयंतविजयजी के रचनात्मक हाथों में सौंपकर निश्चिन्त हुए। वर्तमान आचार्य राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. के दिव्य व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व को देखकर आज लोग सोचते हैं कि जब शिष्य ही ऐसे अद्भूत हैं तो गुरु कैसे रहे होंगे? पू. गुरुदेव ने अपनी प्रज्ञा की किस पैनी छेनी से अपने शिष्य जयंतविजयजी को तराशा कि सामान्य व्यक्ति हो या असामान्य, अज्ञ हो कि प्राज्ञ, उनके दर्शन पाकर सभी अभिभूत हो जाते हैं।

महाप्रयाणः-पू. गुरुदेव का स्वास्थ्य दिनों दिन गिरता जा रहा था, किन्तु आपके जैसे आत्मप्रज्ञ को शारीरिक कष्ट कहाँ विचलित कर सकता था। आप तो अपनी आराधना-साधना-उपासना में लीन रहे। आपने अपने संयम जीवन के 64 यशस्वी चातुर्मास निष्पन्न किए। 77 वर्ष का आयुष्य पूर्ण कर वि.सं.1932 पौष सुदी 3 को आपका महाप्रयाण हुआ। जीवन के अंधेरे पथ में सूरज बनके सदैव रोशनी करने वाले प्यारे गुरुदेव सभी को छोड़कर चले गए। आपने संघ और समाज को जो धरोहर सौंपी है, युगों-2 तक आपके ऋणों को नहीं चुकाया जा सकता है। आपका गुणोत्कर्तन हमारी संयम यात्रा को अप्रमत्त बनाने वाला है। आपके पावन चरणों में शत् शत् नमन।

- क्रमशः

युग चेतना के क्रान्तिदृष्टा थे- श्री राजेन्द्रसूरि गुरुदेव

(श्री शांतिलाल सगरावत)

राजस्थान के भरतपुर नगर में सन् 1827 ई. की पौष शुक्ला सप्तमी गुरूवार 3 दिसम्बर को जन्में तथा 21 दिसम्बर 1906 को 79 वर्ष की आयु पूर्ण कर राजगढ़ शहर में स्वर्गवासी हुए श्वेताम्बर जैन तपोगच्छ के प्रभावक आचार्य श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरिजी का जीवन भावी पीढ़ियों के लिये प्रेरणास्त्रोत है । आपने सन् 1947 ई. में बीस वर्ष का उम्र में यति श्री प्रमोदविजयजी के प्रवचन से प्रभावित हो, अपने म.सा. की अनुमति प्राप्त कर उदयपुर (राजस्थान) में यति श्री हेमविजयजी म.सा. के सान्निध्य में अपनी शिखा पर वासक्षेप प्राप्त कर वि.सं. 1903 की वैशाख शुक्ल 5 को यति रूप में दीक्षित हुए और नाम 'रत्न विजयजी' रखा।

श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरिजी ने गच्छ में व्याप्त अन्धविश्वास एवं परम्पराओं को समाप्त करने हेतु नौ सूत्रीय सुधार योजनाओं को श्रीसंघ से स्वीकृत करवाकर युग चेतना के क्रान्तिदृष्टा के रूप में अपने को प्रतिष्ठित किया । आपश्री ने सांसारिक उपाधियों का त्याग कर पंच महाव्रतधारी के सफल साधक बनकर सम्पूर्ण क्रियोद्धार द्वारा सच्चे साधुत्व का सच्चा स्वत्व समाज में स्थापित करने में सफलता प्राप्त की। आत्मशुद्धि हेतु आपने अभिग्रह परम्परा को अपनाया । आपने पर्वत श्रेणियों में विहार कर नवकार की साधना की । इस तरह आपने अमूल्य आध्यात्मिक शक्ति का संचय किया ।

संवर भावना

–साध्वी श्रुतिदर्शनाश्रीजी

बारह भावनाओं में संवर भावना आठवीं है। आश्रव का निरोध संवर है। वह संवर तीन गुप्ति, पांच समिति, दस यतिधर्म, बारह भावना, बाईस परीषहजय और पांच प्रकार के चारित्र से 57 प्रकार का होता है। नौ तत्व में इसे समझा जाता है। नौ तत्व में एक संवर तत्व आता है। संवर भावना से भावित होने पर संवर तत्व आता है। अतः दोनों में करण–कारण संबंध है। संवर भावना कारण है एवं उसका कार्य संवर तत्व है।

ज्ञान और वैराग्यपरक चिन्तनपूर्वक अपने को मन–वचन–काया से हटाकर जो अपने आप में स्थिर होते हैं, अपने आप का चिन्तन करते हैं उन्हें संवर भावना होती है। और वह चिन्तन इस प्रकार है–

कर्म के आने के द्वार को बंध करना 'संवर' है। जैसे आत्मा शरीर से भिन्न है, वैसे कर्म से भी भिन्न है। क्रोधादि कषाय, रागादि भाव भी आत्मा से भिन्न ही हैं। वैसे तो आत्मा और कर्मों का संबंध क्षीर–नीर की तरह एक–मेक है किन्तु फिर भी भिन्न है, क्योंकि कर्म–कर्मरूप ही रहते हैं। वे पुद्‌गल हैं, जड़ हैं, नाशवान हैं और आत्मा - आत्मारूप है, चेतन है, ज्ञानवान है, नित्य है, आनंदधन है।

आत्मा असंख्य प्रदेशी है एवं अनंतगुणों की पिंड है। उसमें से एक भी प्रदेश या एक भी गुण कम या अधिक नहीं होता है। अनादिकाल से संसारी आत्मा पर कर्मों का आवरण है और अनंत काल हो गया फिर भी कर्म कभी चेतन या ज्ञानरूप नहीं हुए और न ही आत्मा जड़ या पुद्‌गल रूप हुई। अतः आत्मा और कर्म एक–मेक होते हुए भी परस्पर भिन्न हैं। रागादि भाव भी आत्मा से भिन्न हैं, क्योंकि रागादि भाव आकर चले जाते हैं, किन्तु उनको जानने वाला सदैव रहता है।

इस प्रकार भेदज्ञान करना कर्म, रागादिभाव से भिन्न अपनी शुद्धात्मा का चिन्तन करना। मैं पूर्ण हूँ, शुद्ध हूँ, अजर–अमर हूँ। मैं नित्य हूँ। मैं गुणों का पिंड हूँ, मैं आनन्दमय हूँ, मैं ज्ञानवान हूँ। मुझमें जन्म–जरा–मरण नहीं है, रोग–शोक–क्लेश नहीं हैं, रागादिभाव भी नहीं हैं। मैं कषायरूप नहीं हूँ, मैं पापरूप नहीं हूँ, मैं पुण्यरूप भी नहीं हूँ। मैं परिग्रहरूप नहीं हूँ। मैं मिथ्यात्वरूप नहीं हूँ। मैं संक्लेशरूप नहीं हूँ। मैं तो स्व–स्वभाव रूप हूँ। अर्थात् रागादि की उपस्थिति में भी उनको जानने वाला हूँ। जानना मेरा स्वभाव है। स्वभाव कभी

मिटता नहीं। जैसे मिश्री का स्वभाव मीठापन है, नमक का स्वभाव खारापन है। मिश्री की मिठास को मिश्री से कभी अलग नहीं किया जा सकता,क्योंकि यह उसका स्वभाव है। नमक से खारेपन को अलग नहीं कर सकते क्योंकि वह उसका स्वभाव है। वैसे ही आत्मा को जाननेपन से अलग नहीं किया जा सकता क्योंकि जानना उसका स्वभाव है। राग-द्वेष करना मेरा स्वभाव नहीं है, किन्तु ज्ञान प्राप्त करना, जानना मेरा स्वभाव है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि आश्रव और संवर परस्पर विरोधी भाव हैं। आश्रव दुःखमय है और संवर सुखमय। आश्रव दुःखदायक है, दुःख का कारण है और संवर सुखदायक अर्थात् सुख का कारण है। अतः संवर आश्रव का प्रतिद्वंद्वी है, निषेधक है।

रागभाव, विकारीभाव, द्वेषभाव, क्रोधभाव आदि आश्रव हैं। इनके अभाव में होने वाला वीतरागभाव संवर है। शुभ भाव, अशुभभाव रूप आश्रवभावों के निरोधरूप संवर होता है।

संवर भावना संबंधी उक्त समग्र चिन्तन का सार यही है कि पर पुद्गल और बाह्यभाव से भिन्न निज शुद्ध आत्मा के सम्मुख होना, स्व का ही चिन्तन करना, मनन करना, स्वात्म में ही लीन होना एवं स्वयं में ही समा जाना है।

साध्वी श्री मोक्षपूर्णाश्रीजी का देहावसान

जोधपुर,

श्री सौधर्म बृहत्तपोगच्छीय राजेन्द्र सूरि जैन त्रिस्तुतिक संघ के आचार्य राष्ट्रीय संत श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरिजी म.सा. की सुशिष्या साध्वीजी मोक्षपूर्णाश्रीजी का रविवार 6 दिसंबर 2015 को प्रातः 4 बजे देवलोकगमन हो गया ।

पौषधशाला के सचिव श्री हीराचंद भंडारी ने बताया कि लगभग 80 वर्षीया साध्वी श्री मोक्षपूर्णाश्रीजी पिछले कुछ दिनों से बीमार थीं और उनका ईलाज संचेती अस्पताल में चल रहा था। 6 दिसम्बर, रविवार को तड़के 4 बजे उन्होंने अंतिम सांस ली । यह समाचार ज्ञात होने पर राजेन्द्र सूरि संघ के लोगों में शोक की लहर दौड़ गई ।

उनकी पार्थिव देह दोपहर 2 बजे ओसवाल श्मशाम घाट पर पंचतत्व में विलीन हुई।

दिनांक 7-12-2015 को 9.30 बजे देववन्दन

दिनांक 8-12-2015 से 16-12-2015 तक नवान्हिका महोत्सव के तहत रोजाना दोपहर 12 बजे पूजाएँ पढ़ाई गईं ।

अध्यात्म शाश्वत

'संसार श्मशान रूप है'

–साध्वी प्रीतिदर्शना

महाक्रोधों ग्रधोऽनुपरति शृगाली च चपला।
स्मरोलूको यत्र प्रकट कटु शब्दः प्रचरति।।
प्रदीप्तः शकाग्निस्तततमपयशो भस्म परितः।
श्मशानं संसारस्तदभिरमणीयत्वमिह किम्।।

अनुवादः– जहाँ भयंकर क्रोध रूपी गिद्ध उड़ रहे हैं, जहाँ अरति रूपी चंचल सियारिन घूम रही हो, काम रूपी उल्लू प्रकटरूप से कटु आवाज कर रहे हो, शोक रूपी अग्नि जल रही हो, चारों ओर अपयशरूपी राख के ढेर लगे हुए हों, ऐसा श्मशान रूपी यह संसार है। इसमें रमणीयता कैसे हो सकती है?

विस्तारः– प्रस्तुत श्लोक में उपाध्याय यशोविजयजी म.सा. ने संसार को श्मशान की उपमा दी है। यह संसार ऐसा है जहाँ सुख के एक पुष्प के आसपास दुःख के सौ कांटे हैं। यह संसार ऐसा है जहाँ सुख केवल आशा में ही है वास्तविकता में दुःखों के सिवाय और कुछ भी नहीं है। यह संसार ऐसा है जहाँ सुख का प्रमाण बिंदु जितना और दुःख का प्रमाण सिंधु जितना है। यह संसार नमक के ढेले जैसा है जिसे कहीं से भी चखो स्वाद खारा का खारा है। क्रोध, द्वेष, काम की आग में यहाँ जीव जलते रहते हैं। जैसे श्मशान में गिद्ध उड़ते दिखाई देते हैं, क्योंकि मृतदेह का भक्षण गिद्ध को अत्यन्त प्रिय होता है, वैसे ही इस संसार में अनंतानुबंधी महाक्रोध गिद्ध के समान है। क्रोध स्वयं का तथा अन्य का मांस खाने वाला होता है, क्योंकि क्रोध के कारण शरीर का मांस और खून सूख जाता है। क्रोध करने से शारीरिक एवं मानसिक अनेक व्याधियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। क्रोध वह गिरता हुआ मकान है जो स्वयं तो नष्ट होता ही है, साथ ही जिस पर गिरता है, उसे भी हानि पहुँचाता है। क्रोध माचिस की वह तिली है जो स्वयं जलकर दूसरे को जलाती है। त्रिपृष्ठ वासुदेव क्रोधाग्नि में प्रवेश कर सातवीं नरक के मेहमान बन गए। संन्यासी शिष्य पर क्रोध करने के कारण सर्प बन गए।

'साधु घणो तपियों हतो धरतो मन वैराग।
आ क्रोध थकी थयो चंडकोशियो नाग।'

श्मशान में सियारन भी मृतदेह के भक्षण के लिए घूमती रहती है, वैसे ही संसार में अरति–द्वेष बुद्धि रूपी सियारन भी व्यक्ति को अन्दर ही अन्दर जलाती है। जहां द्वेष है, वहाँ प्रेम नहीं है और बिना प्रेम का जीवन शुष्क वृक्ष के ठूँठ जैसा है जिसमें न नमी, न हरापन, न ताजगी होती है। बिना प्रेम का जीवन सूर्य के प्रकाश बिना अंधकारमय धरती जैसा है। इस संसार में प्रायः घर–घर में पिता–पुत्र, सास–बहु, पति–पत्नी, भाई–भाई आदि में कलह होता रहता है। एक दूसरे की कमी निकालते हुए एक दूसरे पर तिरस्कार का एसिड बरसाते रहते हैं और स्वयं भी दुःखी होते रहते हैं। एसिड जिसके ऊपर डाला जाता है उससे

अधिक जिस बर्तन में भरा होता है उसे ज्यादा हानि पहुँचाता है।

श्मशान में रात के समय उल्लू कर्कश आवाज करते रहते हैं, वैसे ही संसार में कामदेव रूपी उल्लू है। कामेच्छा प्रायः रात्रि में प्रबल रूप से उत्पन्न होती है। यह शरीर के राजा वीर्य को खत्म करके मन को निःसत्व बना देता है। विषय सेवन इन्द्रियों के भोग की लालसा, मैथुन सेवन आदि काम के पर्यायवाची हैं। राम और रावण के युद्ध में मुख्य कारण रावण की कामवासना ही थी। कामान्ध व्यक्ति विवेक से भ्रष्ट होता है। काम, क्रोध, लोभ, मद आदि अन्तरंग शत्रु आत्मा के वास्तविक शत्रु हैं। चार संज्ञाओं में नारक जीवों में भय संज्ञा, तिर्यंचों में आहार संज्ञा, देवों में परिग्रह संज्ञा और मनुष्यों में मैथुन संज्ञा का प्राबल्य रहता है। रूपसेन सुनंदा राजकुमारी के रूप में आसक्त बना। उसी के विचार, उसी का चिंतन करते हुए उसे भोगने के लिए गुप्त रूप से राजमहल में जा रहा था परन्तु एक दीवार गिर जाने से वह वहीं मर गया। इधर रात्रि के अंधेरे में एक चोर रूपसेन के लिए लटकाई हुई रस्सी से ऊपर चढ़ गया और राजकुमारी को भोगकर उसके गहने आदि लेकर चला गया। रूपसेन मरकर राजकुमारी के गर्भ में आ गया। राजकुमारी ने गर्भ को गिरवा दिया। वहाँ से मरकर रूपसेन सर्प बना, हंस, कव्वा, हिरण और हाथी बना। हर बार राजकुमारी में आसक्त बनकर प्राण गंवाता रहा और दुर्गति में जाता रहा। वासनाओं का शिकार बना होने के कारण आज के युवा की सृजन शक्ति समाप्त होती जा रही है। रूप के राग ने अनेक जीवों के जीवन को बर्बाद किया।

श्मशान में अग्नि की ज्वालाएं उठती रहती हैं–वैसे ही संसार में शोक रूपी अग्नि प्रज्वलित रहती है। संसार में इष्ट के वियोगजन्य शोक और अनिष्ट के संयोगजन्य संताप हमेशा बने रहते हैं।

एक सेठजी भोजन कर रहे थे। सेठानी हवा कर रही थी। सेठजी कह रहे थे–अपना परिवार इस गांव में सबसे अधिक सुखी है। एक पुत्र है परन्तु विनयवान, आज्ञाकारी है, धन–वैभव की कोई कमी नहीं है। सेठजी फूले नहीं समा रहे थे। इतने में फोन की घंटी बजी। सेठजी ने रिसीवर उठाया–कौन? जवाब मिला–आपके पुत्र का एक्सीडेंट हो गया है.... सेठजी के हाथों से रिसीवर गिर जाता है। एक क्षण पहले जो अपने आपको सबसे अधिक सुखी मान रहे थे वे ही एक क्षण में गम के सागर में डूब जाते हैं।

श्मशान में चारों तरफ राख बिखरी हुई होती है। संसार में यश के साथ अपयश भी चारों ओर बिखरा हुआ है। राख क्षुद्र है, उसी तरह अपयश भी क्षुद्र होती है। किसी को यह अच्छी नहीं लगती। परन्तु संसार में अच्छे कार्यों में भी कोई न कोई दोष निकालने वाले व्यक्ति होते ही हैं। स्वजन आदि के लिए व्यक्ति कितने ही पापकर्म करते हैं। उनको सुख–सुविधा देने के लिए मोहवश स्वयं कष्ट सहन करते हैं। फिर भी अगर उनकी इच्छा के विरुद्ध कुछ घटित हो जाए तो स्वजनों की ओर से भी उसे अपयश ही मिलता है।

राम के साथ सीता वन में गई। इतना कष्ट सहन किया। इसके बावजूद गर्भवती पवित्र सीता को राम ने जंगल में छुड़वा दिया। लोगों ने सीता को असति का कलंक दिया।

इस प्रकार श्मशान जैसे इस संसार में कहीं भी रमणीयता, सुन्दरता दिखाई नहीं देती है। सारांश यही है कि संसार में सच्चे सुख का अनुभव नहीं हो सकता है। भौतिक सुख, दुःख मिश्रित हैं, अनित्य हैं, अपूर्ण हैं, पराधीन हैं, दुःखानुबंधी हैं और दुखों की परंपरा को खड़ी करने वाले हैं। इसलिए जंबूस्वामी जिनके चारों ओर भौतिक वैभव बिखरा पड़ा था। आठ-आठ सुन्दर अप्सराओ के समान पत्नियाँ हाथ जोड़कर विनती कर रही हैं। फिर भी जंबूस्वामी को 7 दूषणों से युक्त ऐसे भौतिक सुख से प्रीति नहीं होती है। प.पू. गुरुदेव जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. द्वारा रचित सज्झाय में जंबूस्वामी कह रहे हैं- 'अंजलि जल जिम आउखो, प्राण पलक मां जाय जी।'

करवु साधन निज आत्मनु, शाणी समझो दिल मांय जी
विषय सुख दुःख मोटका, संयम सुखद सार जी
तन धन यौवन पानी ने, तरवो जलधि संसार जी...जंबू कहे सुणो कमिनी....

प्रवृत्ति का बोझ

सरिता पूर्ण वेग से उफनती बह रही थी। तट पर नाव खड़ी थी। कई यात्री अपनी गठरियों के साथ उस पार जाने को उत्सुक थे । नाविक ने यात्रियों से कहा-'यदि आप पार जाना चाहते हैं तो इन गठरियों को इसी किनारे पर छोड़ना पड़ेगा । मेरी नाव में इतनी क्षमता नहीं कि इनका भार वहन कर सके।'

नाविक की यह बात यात्रियों को अरूचिकर अवश्य लगी लेकिन जिन यात्रियों ने उस पार जाना श्रेयस्कर समझा उन्होंने अपनी गठरियां इसी किनारे छोड़ दीं । जिन यात्रियों को अपनी गठरियों का मोह था, वे इसी किनारे दर्शक बने खड़े रहे । निवृत्ति की भावनावालों ने उस पार जाने में सफलता प्राप्त कर ली । मैं भी तटस्थ भाव से इस दृश्य का मूक साक्षी बना खड़ा था । मन में विचार आया-

संसार एक सरिता है, संयम नाव है, जीव यात्री है, यदि वह परिग्रह के पापों की गठरियां साथ लेकर उस पार जाना चाहेगा तो यह कैसे संभव होगा ? इष्ट सिद्धि कैसे हो सकेगी ? तभी तो ज्ञानियों ने अपनी गठरियों को यहीं छोड़ जाने को कहा है-लघुतृण संसार-सागर में तैरता रहेगा-और पत्थर एक क्षण में डूब जाएगा । यही प्रवृत्ति और निवृत्ति है ।

जिन मंदिर अहिंसा धर्म का आयतन है

श्री शांतिलाल सगरावत, मन्दसौर

जिन मंदिर अहिंसा धर्म का आयतन है। वह ग्रहस्थ जिसने आरम्भ करने का त्याग कर दिया तथा जिसके परिणाम वीतरागरूप होकर धन उपार्जन आदि करने से विरक्त हो गये हैं, उसे मंदिर बनवाना योग्य है। पापारम्भों को त्यागकर जिन मंदिर बनवाने का आरम्भ करो। उसके प्रभाव से अशुभ राग घट जाएगा, परिणाम वीतरागता मुखी हो जाएंगे। अहिंसा धर्म का प्रवर्तन बढ़ जाएगा। अनेक जीव स्वाध्याय करके, शास्त्र श्रवण करके, वीतराग जिनेन्द्र देव के दर्शन करके, शील-संयम-ध्यान की वृद्धि सह उत्तम कार्य सम्पादित कर धर्म में भी वृद्धि करेंगे।

अनेकानेक पापाचार छोड़कर जिनमंदिर में आते हैं। जिन धर्म के शास्त्र श्रवण से अपना तथा पर द्रव्यों के भेद विज्ञान का बोध उत्पन्न होता है। मिथ्या देव-गुरु और धर्म की उपासना त्याग कर सर्वज्ञ वीतराग के बताये धर्ममार्ग में प्रवर्तन करते हैं।

ऐसा निश्चित जानना कि जिन मंदिर के निमित्त बिना मोक्ष मार्ग प्रवर्तता ही नहीं है। जिसने जिनमंदिर बनवाया, उसने बहुत से जीवों पर उपकार किया। उसके स्वयं के परिणाम भी सीधे सही मार्ग में लग जाते हैं। सभी साधर्मियों में वात्सल्यता दिन-प्रतिदिन बढ़ती चली जाती है। उनमें धर्मानुराग भी उत्तरोत्तर प्रादुर्भावित होता जाता है।

मंदिर बनवाने वालों को हिंसा परिणाम नहीं है। अहिंसा धर्म में ही प्रवृत्ति करने का परिणाम है। मुनिश्वरों को क्रियाओं, उपदेश देना, गमन, शयन, उठना, बैठना, आहार, वंदना, कायोत्सर्ग आदि कार्य करने में हिंसा के परिणाम बिना जीव की विराधना होने से भी हिंसा नहीं होती। हिंसाकृत बंध नहीं होता।

जिन दर्शन करने वाले ने मंदिर में प्रवेश करते ही गृह सम्बन्धी हिंसा से आरम्भ घटाकर परिणामों में दया रूप प्रवर्तन का यत्न किया है। वह मंदिर में पग धरते ही ईर्यापथ सोधकर चलता है। मंदिर में प्रवेश के बाद जैन धर्मावलंबी भोजन, पीने का पानी, विकथा, गाली आदि पापबंध की क्रियाओं से विरक्त हो जाता है। जिन मंदिर में तो सभी तरह के अहिंसा धर्म का प्रवर्तन जिसमें आरम्भ, विषय, कषायों के त्याग करने की ही महिमा है। इसीलिये यह मन्दिर है, जो महान धर्म का आयतन है।

देव, गुरु और धर्म

–श्री विजयसिंह लोढ़ा 'विजय', निम्बाहेड़ा

देव, गुरु और धर्म इन तीनों को जिसने पूर्ण रूप से सच्ची निष्ठा से अपना लिया उसका जीवन धन्य हो गया। बिना गुरु जीवन शुरू नहीं होता है। गुरु की शिक्षा–दीक्षा से देव और धर्म ग्रहण किया जा सकता है। गुरु हमारे मार्गदर्शक होते हैं। वे ही नई दिशा दिखाकर हमारी सोच में परिवर्तन लाते हैं। पाप कर्मों से मुक्त कराने वाले भी गुरु ही होते हैं। देव, गुरु और धर्म का झण्डा जिसने पकड़ लिया, उसे जीवन में कभी हार का मुँह नहीं देखना पड़ता।

एक समय की बात है कबीरदासजी किसी गांव का भ्रमण करते हुए जा रहे थे। एक बुढ़िया उन्हें चक्की चलाते हुए मिली। विचारक और कवि कबीर रुक गए और चलती चक्की देखकर रोने लगे। कबीर ने कहा–

'चलती चक्की देखकर दिया कबीरा रोय।
दो पाटन के बीच में साबुत बचा न कोय।।'

कबीर का आशय था कि जैसे चक्की के दो पाटों के बीच में जो भी अन्न आता है वह पिस जाता है उसी तरह धरती और आकाश, जीवन और मृत्यु के दो पाटों के बीच रहने वाला हर प्राणी मृत्यु को प्राप्त होता है। चतुर अनुभवी बुढ़िया ने कहा–'रोने की आवश्यकता नहीं'। कबीरदास जी की आँखें खोलते हुए उसने कहा–

चक्की चले तो चलन दे, पिस पिस आटा होय।
जो कीली से सटा रहे, बाल न बांका होय।।

बुढ़िया का मंतव्य यह था कि चक्की चलते हुए जो दाने बीच की धूरी (कील) से सटे रहते हैं, उनका बाल भी बांका नहीं होता है। यहाँ धूरी से अभिप्राय स्पष्ट ही– देव, गुरु और धर्म से है।

जिस प्राणी ने जीवन में देव, गुरु और धर्म को अपना लिया उसका कभी अहित नहीं होगा और वह संसार सागर से मुक्त होकर मोक्ष गति को प्राप्त करेगा। मरने के बाद भी अपने पुण्य उपार्जन से उसकी सद्गति निश्चित होगी। देव, गुरु और धर्म ही अबलों को सबल, अधर्मी को धर्मी, कुमार्ग पर चलने वालों को सुमार्गी बनाते हैं, इसमें संशय नहीं है।

---

* वस्तुपाल तेजपाल ने गिरनार तीर्थ पर 12 करोड़ 80 लाख द्रव्य खर्च किया, तथा सब मंदिरों में स्वर्णालंकार भेंट किये।
* महामंत्री विमलशाह ने वि.सं. 1088 में आबु पर 'विमलसहि' जिनालय का निर्माण करवाया।
* पेथडशाह ने भगवती सूत्र श्रवण के समय प्रत्येक प्रश्न पर एक सोना मोहर से पूजा की। कुल 36,000 सोना मोहरों का उपयोग किया।

वर्ग पहेली - 46

1	2	3		4	5	
6				7		
8			9			10
		11		12	13	
14	15			16		
17						
			18			

साध्वीश्री- श्रुतिदर्शनाश्रीजी म.

दाएं से बाएं

1. भगवान महावीर स्वामी के प्रथम श्रावक का नाम क्या था? (3.1/2)
4. इस अवसर्पिणी में बारह चक्रवर्ती में दूसरे चक्रवर्ती का नाम? (3)
6. बलवान, सैन्ययुक्त? (3)
7. सोचना, विचारना आदि कौन से ज्ञान से होता है? (2)
8. मनुष्य, आदमी, इन्सान का पर्यायवाची? (2)
11. छः आवश्यक में चौथे आवश्यक का नाम बताइये? (5)
14. साधु की संस्कृत में तृतीया विभक्ति क्या होगी? (3)
16. विशाल, बड़ा? (3)
17. लिखने के साधन को कहते हैं? (30
18. नवकार मंत्र के प्रभाव से अग्निकुंड का सिंहासन किसने बनाया? (3)

ऊपर से नीचे

1. साधु के 14 उपकरणों में से एक का नाम बताइए? (3)
2. संख्या को कहते हैं? (3.1/2)
3. टुकड़ा, झुण्ड, मंडली का पर्यायवाची? (2)
4. सम्यक्त्व के 5 लक्षणों में से प्रथम लक्षण? (2)
5. स्वस्तिक किसका प्रतीक है? (2)
9. आठ प्रकार के मद में से एक ? (2)
10. प्रवचन सुनकर उसका क्या करना चाहिए? (3)
11. मंदिरजी में पालन होने वाली दस त्रिक में से एक? (3)
12. चौदह गुणस्थानक आत्मविकास का क्या है? (2.1/2)
13. साढ़े बारह वर्ष तक साधना करने के पश्चात् कौन से भगवान को केवल ज्ञान हुआ? (4)
14. आयुष्य कर्म किसके समान है? (3)
15. रज, पांसु ? (2)

उत्तर सीट-45

1 वि	2 न	य		3 सं	4 तो	ष
5 र	त		6 टा	प	र	
ति		7 सा	प		8 न	9 स
	10 नी	व		11 वा		र
12 द	म	न		13 चा	व	ल
श			14 आ	ल		ता
15 मी	न		ठ		16 सौ	

लेखांक 4

जैन धर्म दर्शन में समाधिमरण आत्महत्या नहीं

(प्रो. श्री सागरमल जैन)

वैदिक परम्परा में जड़भरत का कथानक भी यही बताता है कि इतने महान साधक को भी मरण वेला में हरिण पर आसक्ति रखने के कारण पशु योनि में जाना पड़ा। ये कथानक हमारे सामने मृत्यु का मूल्य उपस्थित कर देते हैं। मृत्यु जीवन की साधना का परीक्षाकाल है। इस जीवन में लक्षोपलब्धि का अंतिम अवसर और भावी जीवन की साधना का आरम्भ बिन्दु है। इस प्रकार वह अपने में दो जीवनों का मूल्य संजोए हुए है। मरण जीवन का अवश्यम्भावी अंग है। उसकी अवहेलना नहीं की जा सकती। वह जीवन का उपसंहार है, जिसे सुन्दर बनाना एक आवश्यक कर्त्तव्य है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि सम्प्रति युग के प्रबुद्ध विचारक भी समाधिमरण को अनैतिक नहीं मानते हैं। अतः जैन धर्म पर लगाये जाने वाला यह आक्षेप कि वह जीवन के मूल्य को अस्वीकार करता है, उचित नहीं है। वस्तुतः समाधिमरण पर जो आक्षेप लगाये जाते हैं, उनका सम्बन्ध समाधि-मरण से न होकर आत्महत्या से है। कुछ विचारकों ने समाधिमरण और आत्महत्या के वास्तविक अन्तर को नहीं समझा और इसी आधार पर समाधिमरण को अनैतिक कहने का प्रयास किया, लेकिन समाधिमरण या स्वेच्छामरण आत्महत्या नहीं है और इसलिए उसे अनैतिक भी नहीं कह सकते। जैन आचार्यों ने स्वयं ही आत्महत्या को अनैतिक माना है लेकिन उनके अनुसार आत्महत्या, समाधिमरण से भिन्न है।

डॉ. ईश्वरचन्द्र ने जीवनमुक्त व्यक्ति के स्वेच्छामरण को तो आत्महत्या नहीं माना है, लेकिन उन्होंने संथारे को आत्महत्या की कोटि में रखकर उसे अनैतिक भी बताया है। इस संबंध में उनके तर्क का पहला भाग यह है कि स्वेच्छामरण का व्रत लेने वाले सामान्य जैन मुनि जीवनमुक्त एवं अलौकिक शक्ति से युक्त नहीं होते हैं और अपूर्णता की दशा में लिया गया आमरण व्रत (संथारा) नैतिक नहीं हो सकता। अपने तर्क के दूसरे भाग में वे कहते हैं कि जैन-परम्परा में स्वेच्छा मृत्युवरण (संथारा) करने में यथार्थता की अपेक्षा आडम्बर अधिक होता है, इसलिए वह

अनैतिक भी है। जहाँ तक उनके इस दृष्टिकोण का प्रश्न है कि जीवनमुक्त एवं अलौकिक शक्ति सम्पन्न व्यक्ति ही स्वेच्छामरण का अधिकारी है, हम सहमत नहीं हैं। वस्तुतः स्वेच्छामरण उस व्यक्ति के लिए आवश्यक नहीं है जो जीवनमुक्त है और जिसकी देहासक्ति समाप्त हो गई है वरन् उस व्यक्ति के लिए है जिसमें देहासक्ति शेष है, क्योंकि समाधिमरण तो इसी देहासक्ति को समाप्त करने के लिए है। समाधिमरण एक साधना है, इसलिए वह जीवनमुक्त (सिद्ध) के लिए आवश्यक नहीं है। जीवन्मुक्त को तो समाधिमरण सहज ही प्राप्त होता है। जहाँ तक उनके इस आक्षेप की बात है कि समाधि मरण में यथार्थता की अपेक्षा आडम्बर ही अधिक परिलक्षित होता है, उसमें आंशिक सत्यता अवश्य हो सकती है, लेकिन इसका सम्बन्ध संथारे या समाधिमरण के सिद्धान्त से नहीं, वरन् उसके वर्तमान में प्रचलित विकृत रूप से है, लेकिन इस आधार पर उसके सैद्धान्तिक मूल्य में कोई कमी नहीं आती है। यदि व्यावहारिक जीवन में अनेक व्यक्ति असत्य बोलते हैं तो क्या उससे सत्य के मूल्य पर कोई आँच आती है? वस्तुतः स्वेच्छामरण के सैद्धान्तिक मूल्य को अस्वीकार नहीं किया जा सकता।

स्वेच्छामरण तो मृत्यु की वह कला है जिसमें न केवल जीवन ही सार्थक होता है, वरन् मरण भी सार्थक हो जाता है। काका साहब कालेलकर ने खलील जियान का यह वचन उद्धृत किया है कि 'एक आदमी ने आत्मरक्षा हेतु खुदकुशी की, आत्महत्या की'। यह वचन सुनने में विचित्र सा लगता है। आत्महत्या से आत्मरक्षा का क्या संबंध हो सकता है? वस्तुतः यहाँ आत्मरक्षा का अर्थ आध्यात्मिक एवं नैतिक मूल्यों के संरक्षण से है और आत्महत्या का मतलब है शरीर का विसर्जन। जब नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों के संरक्षण के लिए शारीरिक मूल्यों का विसर्जन आवश्यक हो तो उस स्थिति में देह-विसर्जन या स्वेच्छा मृत्युवरण ही उचित है। आध्यात्मिक मूल्यों की रक्षा, प्राणरक्षा से श्रेष्ठ है। गीता ने स्वयं अकीर्तिकर जीवन की अपेक्षा मरण को श्रेष्ठ मानकर ऐसा ही संकेत दिया है। काका साहब कालेलकर के शब्दों में जब मनुष्य देखता है कि विशिष्ट परिस्थिति में जीना है तो हीन स्थिति और हीन विचार या सिद्धान्त मान्य रखना ही जरूरी है, तब श्रेष्ठ पुरुष कहता है कि जीने से नहीं, मरकर ही आत्मरक्षा होती है।

वस्तुतः समाधिमरण का व्रत हमारे आध्यात्मिक एवं नैतिक मूल्यों के संरक्षण के लिए ही लिया जाता है और इसलिए पूर्णतः नैतिक भी है।

– समाप्त

नमस्कार महामंत्र-स्वरूप अनुप्रेक्षा

प्रस्तुति-श्रीमती इंदिरा 'इन्द्र' जैन घोड़ावत

जैन आस्था के अनुसार 'नमोक्कारसुत्त' शाश्वत मंत्र है, मंत्राधिराज महामंत्र है, क्योंकि समस्त श्रुत महोदधि का परम् अर्थगर्भित नवनीत है। अतः उसके उपदेष्टा अरिहंत भगवान् उससे सिद्धि को प्राप्त सिद्ध भगवान, उनके संघ के नियंता आचार्यदेव, उनके प्रवचन के शिक्षक उपाध्याय प्रभु और उनके प्रवचन निर्ग्रन्थ प्रवचन के आराधक साधु महाराज भी शाश्वत हैं। अर्थात् ये पाँचों ही पद में स्थित आत्मा सदैव विद्यमान रहते हैं। परमेष्ठी शाश्वत हैं, तो उनके उपासक भी शाश्वत् हैं।

जैन साधक को बचपन से लगाकर मरण पर्यन्त नमोक्कारसुत्त का आलम्बन ग्राह्य है। अतः उसका पुनरपिपुनः चिन्तन आत्मा के लिए उपादेय है। जैन धर्म में पंचपरमेष्ठियों को नमस्कार करने के लिए संरचित वचनावली को 'नमोक्कारसुत्त', 'नवकार मंत्र', 'नमस्कार महामंत्र' आदि संज्ञाओं से पुकारते हैं।

जिनेश्वर देव ने स्वाध्याय के पाँच भेद बताये हैं-1. वाचना, 2. पृच्छना, 3. परिवर्तना, 4. अनुप्रेक्षा और 5. धर्मकथा। सूत्रोपलब्धि, अर्थोपलब्धि, श्रद्धोपलब्धि और अनुभवोलब्धि होने पर महामंत्र आत्मा में अभिव्यक्त होता है।

महामन्त्र-स्वरूप अनुप्रेक्षा

स्वरूप अनुप्रेक्षा में परमेष्ठियों के स्वरूप का चिन्तन करते हुए उन्हें नमस्कार किया गया है।

1. अरिहन्त शब्दानुप्रेक्षाः- जो समस्त इन्द्रों के द्वारा पूजे गए हैं, जो समर्थ हैं, जो शक्ति के अपार पुँज हैं और जिनके राग-द्वेष रूपी भवांकुर जलकर नष्ट हो गए हैं, उन अरिहंत भगवन् को मेरा नमस्कार है। अरिहंत संसारी आत्मा की सर्वोत्कृष्ट अवस्था है। अरिहंत मनुष्यभव में स्थित आत्मा ही बन सकता है। अरिहंत शब्द के प्रसिद्ध चार अर्थ हैं- 1. पूजा के योग्य, 2. सामर्थ्यवान, 3. शक्तिमान, 4. भावशत्रुओं के नाशक।

2. सिद्ध शब्दानुप्रेक्षा :- शुक्ल ध्यान रूपी महाअग्नि के द्वारा जिनका आठ कर्म रूपी मैल जल गया है और जिनकी चेतना शुद्ध हो गई है- उन सभी सिद्ध भगवन्तों को मेरा नमस्कार हो। जीव ही परमात्म स्वरूप को प्राप्त करता है और उसके लिए उसका स्वयं का पुरुषार्थ ही सफल हो सकता है। जो भी सिद्ध हुए हैं, होते हैं, या होंगे, सभी के लिए यही प्रक्रिया है। सिद्ध भगवान् अनादि अनन्त हैं। शुक्ल ध्यान में राग-द्वेष के क्षय की प्रक्रिया आरम्भ हो जाती है

और समस्त कर्मफल का विनाश हो जाता है और आत्मा परम् विशुद्ध बन जाती है। 'जाया सुद्धा च चेयणा' अर्थात् जिनकी चेतना शुद्ध हो गई है, ऐसे सभी सिद्धों को नमस्कार हो।

3. आयरिय शब्द की अनुप्रेक्षा :- जो दुराचारों के निवारक, पंचाचारों में आगे बढ़ाने वाले, प्रबुद्ध-विशिष्ट ज्ञानी, सदा सजग रहने वाले और संघ के रक्षक हैं- उन आचार्यों को नमस्कार हो।

आचार्य के तीन प्रमुख कार्य हैं- 1. अनुग्रह- कृपा, करुणा दृष्टि और उपकार। आचार्य की साधकों के प्रति करुणा की दृष्टि रहती है। आचार्य देव स्वयं मोक्ष मार्ग के पथिक होते हैं। वे पंचाचार में प्रवृत्ति को जैसा अपना कर्त्तव्य समझते हैं, वैसे ही अपने आश्रित साधकों को मोक्ष मार्ग पर लगाए रखना भी अपनी साधना का ही एक अंग समझते हैं। 2. निग्रह - रोकना या दंडित करना। आचार्य देव साधकों को अनाचार में प्रवृत्त होने से रोकते हैं। उनका निग्रह दयालु शल्य चिकित्सक के कार्य जैसा है। 3. संघ का रक्षण। ऐसे गुण सम्पन्न आचार्यों को नमस्कार।

4. उपाध्याय शब्द की अनुप्रेक्षा:- जो स्वकीय-जिनशासन के और परकीय अन्य तैर्थिकों के शास्त्रों के पारगामी हैं, जो आत्मानुशासित, योग्य पात्र हो, श्रुतदान देने में कुशल हैं, उन उपाध्यायों को नमस्कार है। उपाध्याय महाराज के तीन प्रमुख गुण या विशेषताएं हैं। 1. स्व-आगम-पारगता, 2. पर-आगम-पारगामिता, 3. स्व-तंत्र-निपुणता। इस प्रकार श्रुतदान करते हुए साधक को उसके योग्य श्रुत स्वामी बना देते हैं। ऐसे उपाध्याय महाराज को सदा-सदा नमस्कार हो।

5. 'साधु' शब्द की अनुप्रेक्षा :- जो आत्मसाधक हैं, जो सदैव आराधनात्रय में तत्पर रहते हैं और जो जिनेश्वर देव की आज्ञा में रंग गये हैं, लोक में स्थित उन सभी साधुओं को नमस्कार हो। साधु के तीन प्रमुख विशेषण कहे गये हैं-1. आत्म साधक, 2. आराधना-पर और 3. जिन आज्ञा से रंजित भाव वाले। 'यः स्वहितं साधयति सः साधुः।' साधक ज्ञान, दर्शन और चारित्र आराधनाओं में तत्पर रहता है। मनुष्य लोक अर्थात् ढाई द्वीप के सभी साधुओं को नमस्कार हो।

नमस्कार महामंत्र समस्त जैन धर्मानुयायियों का इष्ट मंत्र है। यह मन्त्र मात्र पढ़ने का नहीं, आराधना का भी माध्यम है। साधक वर्ग अनुप्रेक्षा आलोक से भावान्वित हो, यही इसका परम उद्देश्य है। परमेष्ठियों के चिंतन से उनके स्वरूप का ज्ञान होता है, जिससे उनके प्रति प्रमोद भाव उत्पन्न होता है। भव्य आत्माएं नमस्कार अनुप्रेक्षा के चिंतन-मनन के द्वारा मोक्ष-मार्गानुसारिणी बने, यही मंगल कामना है।

सदा अपने से कमजोर लोगों की ओर देखें

-श्रीमती रेखा अजय कर्नावट, जावरा

जिसे हम दुनिया का सबसे सुखी व्यक्ति समझते हैं, वह भी शायद अन्दर से छटपटाता रहता है कि फलां सेठ, फलां उद्योगपति जो खूब इज्जतवाले हैं, मैं उन सबको पीछे छोड़ जाऊँ। मुझसे बढ़कर दौलत, शोहरत, नाम, प्रतिष्ठा किसी ओर के पास न हो। सब मेरी ही बढ़ाई करें और मेरा ही गुणगान करें। ये सोच उस बड़े आदमी की है जिसे ईश्वर ने धन दौलत, मान प्रतिष्ठा सब कुछ दे रखी है, मगर वो तो अपने खुद से बढ़कर किसी और को देखना नहीं चाहता।

यही ईर्ष्या उसे बिना जल की मछली की तरह छटपटाती रहती है तथा इसी अंधकार के वशीभूत होकर ईश्वर द्वारा दिये गये सारे सुखों का वह नाश कर लेता है। उसके मन के अन्दर की इसी सोच ने उसे कभी अपने से कमजोर, छोटे, अशक्त करोड़ों लोगों की तरफ देखने की फुर्सत ही नहीं दी। उसे कभी विचार ही नहीं आया कि इतना सब कुछ होते हुए भी मेरा मन शान्त क्यों नहीं है? जो है उससे और अधिक पाने की मेरी लालसा बढ़ती ही क्यों जाती है?

सच्चाई यह है कि भाग्य से ज्यादा कुछ मिल नहीं सकता फिर भी दिन-रात दूसरों से कमतर होने का प्रलाप क्यों कर रहा है? क्यों नहीं उन भाइयों के परिवारों की तरफ देखता है, जिनके पास कुछ नहीं है? और जो भगवान से जो कुछ भी मिल रहा है, उसे ही पाकर संतुष्ट हैं। क्यों नहीं सोचते कि क्यों मुझे ही भूख ज्यादा लगती है? क्या मुझे ही सारे संसार के सुख-सुविधाओं के सामान की जरूरत है? मेरे उन कमजोर भाइयों को कुछ नहीं चाहिए? मध्यम श्रेणी के परिवारों में भी जिनकी मानसिकता उस धनपति की तरह ही है, वे भी अपने सुख को ठोकर मार रहे हैं।

चाहे बहुत अधिक धन वाले हों या मध्यम श्रेणी के लोग। सबको अपनी सोच को सदा अपने से कम साधन सम्पन्न या मजबूर लोगों की अवस्था पर केन्द्रित करनी चाहिए। जहाँ तक हो सके उन भाइयों को ऊपर उठाने का प्रयास करना चाहिए, जिनके पास आज हर तरह का अभाव है। आप आज यदि सब तरह से समर्थ हैं। आपके पास खूब धन हो या मध्यम श्रेणी के परिवार के हों, सदा अपनी स्थिति में संतुष्ट रहने का प्रयास करें। अपने से ऊपर वालों की तरफ न देखकर सदा अपने से कमजोर असमर्थ लोगों के प्रति सोचें।

भाग्य की रेखा बनाइए

–श्री रमेश चौपड़ा, इन्दौर

यकीनन चाहे प्रकृति ने किसी व्यक्ति के हाथ में भाग्य की रेखा नहीं दी हो, लेकिन कर्म और अनवरत परिश्रम से कोई भी व्यक्ति अपने हाथ में भाग्य की चमकीली रेखा का निर्माण कर सकता है। यहाँ पर विश्व प्रसिद्ध नेपोलियन का उदाहरण उल्लेखनीय है।

शुरूआत में नेपोलियन एक साधारण सैनिक ही थे। एक दिन राह में एक ज्योतिषी कुछ लोगों का हाथ देख रहे थे। नेपोलियन भी वहाँ ठहर गए और उन्होंने भी अपना हाथ ज्योतिषी के आगे कर दिया। वह काफी देर तक हाथ देखता रहा और अचानक उसका चेहरा उदास हो गया। नेपोलियन उसके मनोभाव समझ गए और बोले, क्या हुआ महाराज! क्या कोई अनहोनी बात लिखी है, मेरी रेखाओं में, जिससे आप चिंतित हो उठे हैं? ज्योतिषी ने अपनी गर्दन उठाई और बोले- जिसके हाथ में भाग्य रेखा ही न हो, उसका भाग्य प्रबल कैसे हो सकता है? ज्योतिषी की बात सुनकर नेपोलियन दंग रह गए। वह बहुत ही महत्वाकांक्षी थे। ज्योतिषी की बात से उन्हें बहुत आघात पहुँचा। वे ज्योतिषी से बोले- महाराज, मैं अपने कर्म से अपना भाग्य ही बदल दूँगा। जीवन हाथ की रेखाओं पर नहीं, कर्म की रेखा पर निर्भर करता है। हमारे कठिन प्रयासों और आत्मविश्वास की रेखा जितनी बड़ी होगी, सफलता भी उसी हिसाब से मिलेगी। ज्योतिषी बोले-बेटा! काश तुम्हारी ही बात सच साबित हो।

चूँकि नेपोलियन को अपने अदम्य साहस और आत्मबल पर पूरा विश्वास था, इसलिए उन्होंने तय कर लिया कि जो सफलता उसके भाग्य में नहीं है, उसे वे कर्म के बल पर मेहनत से पाकर दिखाएंगे और सचमुच अनेक बाधाओं का सामना करते हुए नेपोलियन एक साधारण सैनिक से फ्रांस के सम्राट बने। उन्होंने अपने कर्म से कर्म रेखा को भाग्य रेखा में बदला और दुनिया को एक नई दिशा प्रदान करते हुए दिखा दिया कि कर्म की ताकत से बड़ी कोई ताकत नहीं होती। निश्चित रूप से सफलता के लिए कर्म की ताकत के साथ निरंतर प्रयासों की भी जरूरत होती है।

यहाँ पर फ्लाईंग सिख मिल्खा सिंह के द्वारा हमेशा कहे जाने वाला एक शेर उल्लेखनीय है- 'हाथ की लकीरों से जिन्दगी नहीं बनती, मेरा भी हिस्सा है जिन्दगी बनाने में।'

आप भी परिश्रम और निरंतर प्रयासों की रणनीति के साथ अपनी हथेली में अपनी भाग्य रेखा का निर्माण कर इच्छित सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

धर्म आत्मा की तरह है

धर्म मनुष्य का अत्यन्त परिचित और निकटवर्ती सखा (मित्र) है। वह मनुष्य के लिए संजीवनी बूटी है। चारों ओर से आफतों के बादल गरज रहे हों, विपत्तियों की बिजलियाँ चमक रही हों, ऐसे समय में आश्वासन और विश्वास देने वाला, टिके रहने की शक्ति फूंकने वाला अगर कोई है तो वह धर्म ही है। धर्म चाहे आँखों से दिखाई न देता हो, लेकिन उसके काम दिखाई देते हैं। उसी तरह जैसे तारों में बहती बिजली दिखाई नहीं देती किन्तु सारे कामों को अंजाम देती है। धर्म के द्वारा भी किए गए कार्यों के ही दर्शन होते हैं। अमूर्त और अदृश्य धर्मभाव शरीर धारण करके जब धर्मात्मा के जीवन में आ जाता है तब उसके कार्यों को देखकर दांतों तले अंगुली दबानी पड़ती है। धर्म का सुफल जब धार्मिक को मिलता है, तब धर्म को ढकोसला कहने वाले लोगों को भी मानना पड़ता है कि धर्म, मानव जीवन के लिए कितना जरूरी है?

धर्म का स्वरूप

सोचना यह है कि ऐसे धर्म का वास्तविक स्वरूप क्या है? क्योंकि धर्म के साथ कई क्रियाकाण्ड और आडम्बर जुड़ गए हैं। इससे साधारण जनता चक्कर में पड़ जाती है कि वास्तविक धर्म क्या है?

कई लोग वेद, पुराण, गीता, बाइबिल, कुरान या आगम को रट लेने या कंठस्थ कर लेने में धर्म को मान लेते हैं। कई पूजा, अर्चना, प्रार्थना, नमाज, संध्या आदि बाह्य क्रियाओं के संपादन को धर्म समझते हैं। कोई दाढ़ी, चोटी, जनेऊ, तिलक, मुंहपत्ति आदि नियमों के पालन को ही धर्म का चिन्ह समझकर इसे ही धर्म मान बैठे हैं।

इसी प्रकार कई संप्रदाय के भक्त, अपने संप्रदाय से भिन्न संप्रदायों या पंथों के लोगों से द्वेष रखने, उन्हें नीचा दिखाने, उनसे लड़ाई करने, उन्हें मार डालने तक को धर्म समझते हैं। कई पंडे-पुजारी श्रद्धालुओं को उनके पितरों को स्वर्ग में भेजने व सुखी करने का लालच देकर दान-दक्षिणा लेने, रूपए ऐंठने में धर्म मानते हैं। पादरीगण यहाँ रुपए लेकर स्वर्ग की हुंडी लिख देने में धर्म मानते हैं। इसी प्रकार बहुत से लोग संप्रदाय, पंथवाद या मजहब को ही वास्तविक धर्म कहते हैं। कोई यज्ञ, होम आदि धार्मिक क्रियाओं में लाखों रुपए उड़ा देने को धर्म कहते हैं।

परन्तु गहराई से सोचा जाये तो ये शुद्ध धर्म नहीं, धर्म के लिए साधन ही हो सकते हैं बशर्ते कि उनमें मानवता, न्याय, नीति, अहिंसा, सत्य आदि धर्म तत्व निहित हों। अगर धर्म के ये तत्व किसी क्रियाकाण्ड में नहीं हैं तो वे निस्सार ही हैं। अग्नि में से कोई उष्णता निकाल दे या घी में से स्निग्धता को अलग कर दे तो कोई उसे अग्नि या घी

नहीं कहेगा। इसी तरह जिन क्रियाकाण्डों, पंथों या चिन्हों में से शुद्ध धर्म के तत्व निकल चुके हों और जिनसे शुद्ध धर्म की प्रेरणा न मिलती हो तो कोई उन्हें धर्म तो क्या धर्म का साधन भी नहीं कहेगा। योगी आनंदघनजी ने धर्मनाथ भगवान की स्तुति करते हुए कहा है-

'धर्म धर्म करतो जग फिरे।
धर्म का न जाने मर्म, जिनेश्वर।'

इसलिए शुद्ध धर्म का लक्षण प्राचीन आचार्यों ने किया है-

'दुर्गतौ प्रयन्तात्मानं धारवतीति मर्मः।'

जो दुर्गति में पड़ती हुई आत्मा को धारण करे। यानि बुरे कार्यों से बचाए और अच्छे कार्यों, निःस्वार्थ कार्यों में प्रेरित करें और जो सारे संसार के लिए तीनों कालों में हितकर और सुखकर हो, वही धर्म है।

यदि कोई कहे कि शराब पीना धर्म है, तो उसे सर्वत्र सर्वहितकारिता की कसौटी पर कसा जाय कि सभी शराब पी लें और समाज में अव्यवस्था पैदा करें तो सर्वहित भंग होगा या नहीं? शीघ्र ही पता चल जाएगा कि शराब पीना धर्म नहीं है। चोर अगर चोरी करने को धर्म कहे तो उसे भी सार्वकालिक सर्वहित की कसौटी पर कसे जाने पर ऐसा करना धर्मसिद्ध नहीं होगा।

मतलब यह है कि जो वस्तु सबके लिए, सब जगह और सब काल में हितकर न हो, एक-दो के लिए अनुकूल हो, भूत, भविष्य या वर्तमान में से एक या दो जगह के लिए ही हितकर हो तो वह धर्म नहीं हो सकता।

धर्म और सम्प्रदाय में अन्तर

धर्म और सम्प्रदाय में अन्तर यह है कि धर्म आत्मा की तरह है, जबकि पंथ और संप्रदाय उसके शरीर तुल्य हैं। पंथ और संप्रदाय गुणों की वृद्धि या चरित्र वृद्धि की बजाय केवल क्रियाकाण्डों के भंवरजाल में ही उलझाते रहे हों तो वे प्राणहीन मृत कलेवर बन जाते हैं। शुद्ध धर्म तो मनुष्य के गुणों में वृद्धि करता है। उसके कठोर ह्रदय को सुसंस्कारी और कोमल बनाता है। चित्त की शुद्धि करता है, शरीर को निःस्वार्थ और निरासक्त भाव से विविध सत्कार्यों में लगाता है, जबकि जो पंथ और संप्रदाय धर्मतत्वहीन होते हैं, वे मनुष्य को मिथ्याभिमानी बना देते हैं। रागद्वेष में वृद्धि करना सिखा देते हैं। गुणों में वृद्धि करने की बजाय प्रायः अवगुणी बना देते हैं। धर्म, मनुष्य, मनुष्य के बीच वात्सल्य संबंध जोड़कर भेदभाव की दीवारें तोड़कर अभेदभाव की ओर ले जाता है, जबकि पंथ और संप्रदाय जब धर्मतत्वरहित हो जाते हैं तो भेदभाव की दीवारें खड़ी कर देते हैं। आपस में लड़ाने-भिड़ाने का काम करने लगते हैं। धार्मिक क्रियाकाण्डों को अधिक महत्व देने लगते हैं। वे उनमें तो लाखों रुपयों का धुंआ उड़ा देंगे, लेकिन उन रुपयों को बचाकर जनहितकारी प्रवृत्तियों में लगाने से हिचकिचाएंगे, बहाने बनायेंगे। दीन, दुःखी भाइयों की सेवा और सहायता करना ऐसे संप्रदाय या पंथ नहीं सिखायेंगे। जबकि शुद्ध धर्म जनहितकारी प्रवृत्तियों में पड़ने की प्रेरणा देता है। दीन-दुःखीजनों की सेवा और सहायता करना सिखाता है।

धर्म आचरण की वस्तु है

यही कारण है कि धर्म केवल बोलने से नहीं हो जाता, न धर्म कहीं दुकान में बिकता है कि दूसरे द्वारा किया हुआ धर्म खरीदने से मिल जाए और न ही धर्म किसी खेत में पैदा होता है। वह तो आचरण की वस्तु है। जो आचरण करता है, अहिंसा-सत्य आदि धर्म-तत्वों को जीवन में उतारता है, उसी का धर्म है। धार्मिक क्रियाएं करते रहने पर भी आपका मन लोभ से भरा हो, क्रोध की ज्वालाएं हृदय में उठती हों, अहंकार का सर्प फुफकारता हो, कपट का धुंआ उठ रहा हो, दुर्भावों का राक्षस हृदय का राजा बन बैठा हो। दुर्गुणों के दैत्य जीवन में उछलकूद मचा रहे हों, दीनदुखियों को देखकर हृदय में करुणा के बजाय क्रूरता या शोषणवृत्ति पैदा होती हो, छुआछूत, भेदभाव या द्वेष बुद्धि दिल में जमे बैठे हों तो समझ लेना चाहिए कि अभी तक जीवन में शुद्ध धर्म नहीं आया है।

धर्म कोई दिखावे की चीज नहीं है। बाहर से धर्मात्मापन दिखाने से और जीवन में धर्म का आचरण न होने से धर्म जीवन में नहीं आ पाता। जिन व्यक्तियों को धर्म प्रिय है और जो शुद्ध धर्म का चमत्कार देख चुके हैं, उन्हें धर्म का दिखावा न करके आचरण करना चाहिए। परन्तु खेद है कि आजकल समाज में अधिकांश व्यक्ति ऐसे मिलते हैं, जो धर्म के विषय में जानते बहुत हैं, चर्चा भी दुनियाभर की कर लेते हैं, अनेक धर्मग्रथों को पढ़ भी लेते हैं लेकिन शुद्ध धर्म के आचरण से विमुख हैं। मेरा यह कहना है कि जैसे तैरने का ज्ञान कराने वाली पुस्तकों के पढ़ने भर से ही तैरना नहीं आ जाता है। रसोई विज्ञान की किताबें पढ़ लेने से रसोई बनाना नहीं आ जाता। वैसे ही धर्मग्रंथों को केवल पढ़ने भर से ही कोई धर्मात्मा नहीं बन जाता, अथवा उसमें धार्मिकता नहीं आ जाती। इसलिए केवल जानना ही नहीं है धर्म, जीवन जीना धर्म है।

पाप का परिवार

पिता	लोभ
माता	हिंसा
पत्नी	माया
पुत्र	अहं
पुत्री	तृष्णा
बहन	कुमति
भाई	झूठ

धर्म का परिवार

पिता	सन्तोष
माता	दया
पत्नी	सरलता
पुत्र	विनय
पुत्री	अनासक्ति
बहन	सुमति
भाई	सत्य

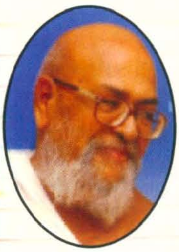

ગુર્જર જૈન જયોત

સંપર્ક-સંપાદક : **સુરેશ એચ. સંઘવી**
૧૦૬, શિવશક્તિ, એ.બી.સી. ટાવર, દેવ ચકલા,
જૈન દેરાસર સામે, નડીઆદ. જી. ખેડા.
મો. ૯૭૨૪૫ ૭૧૦૭૯

અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદ પેપરાલની સ્થાપના

યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય ડૉ. શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., તીર્થપ્રેરક વરિષ્ઠ મુનિરાજ શ્રી નિત્યાનંદ વિજયજી મ.સા. આદિ સાધુ-સાધ્વીજી મંડળની પાવન નિશ્રામાં ગત તા. ૨૧-૧૧-૨૦૧૫ ના રોજ અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક અને મહિલા પરિષદના વાર્ષિક સંમેલન નું શ્રી પેપરાલ તીર્થ ખાતે આયોજન કરાયું હતું. દરેક પરિષદના કાર્યોની ગતિવિધિ સંપન્ન કરાઈ હતી અને પૂજ્ય શ્રી દ્વારા દિન પ્રતિદિન પરષિદો તેમની સેવાના કાર્યની નેત્રદિપક કામગીરી કરી આગળ વધી વિકાસ કરતી રહે તે માટે પ્રેરણા કરી હતી. ૩૦૦ થી વધુ શાખા ધરાવતી પરિષદમાં શ્રી પેપરાલ પરિષદની નૂતન સ્થાપના કરાઈ હતી. ગુજરાત પરિષદ અધ્યક્ષ શ્રી અરવિંદભાઈ છોટાલાલ દેસાઈના નેતૃત્વ હેઠળ ગુજરાતની તમામ પરિષદ શાખાઓ કાર્યરત છે જ્યારે પેપરાલ પરિષદની શાખાની સ્થાપના થતાં ગુજરાતની પરિષદમાં એક વધુ ઉમેરો થયો છે. પેપરાલ પરિષદના હોદ્દેદારોની યાદી અત્રે પ્રસ્તુત છે.

પેપરાલ અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદ

અધ્યક્ષ : ધરૂ રમેશકુમાર છોટાલાલ
ઉપાધ્યક્ષ : વોરા અશોકકુમાર વાઘજીભાઈ
મહામંત્રી : ધરૂ મેહુલકુમાર ધીરજલાલ
ખજાનચી : ધરૂ રમેશભાઈ, વોરા અશોકભાઈ
સંગઠન મંત્રી : ધરૂ સુરેશકુમાર રાજમલભાઈ
સભ્ય : વોરા વસંતભાઈ વાઘજીભાઈ
સભ્ય : ધરૂ કિરીટકુમાર છોટાલાલ
સભ્ય : વોરા મૌલિકકુમાર શૈલેશભાઈ

છેલ્લા ૫૦ વર્ષના ઈતિહાસમાં જૈન શાસનને ગુંજતુ કરવામાં કોઈ પુણ્યાત્મા જો હોય તો ગર્વથી કહી શકાય કે એ સિધ્ધપુરુષ જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.

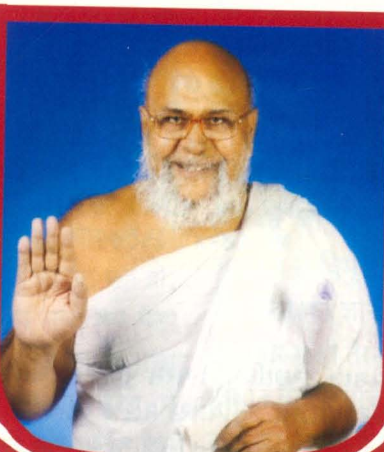

- આજે શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સમુદાયની આન-બાન અને શાન **જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા...** !
- ગુજરાત, રાજસ્થાન, મધ્યપ્રદેશ, આંધપ્રદેશ, તામિલનાડુ, કર્ણાટક, વિગેરે સ્થળોના જિનાલયમાં લહેરાતી ધજાના અનંત ઉપકારી **જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.... !**
- ઉગ્ર નહી અતિ ઉગ્ર વિહારી **જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.... !**
- ગામો ગામ નગરો નગર ધર્મપ્રેરણા આપી કઠોર તપશ્ચર્યા કરાવનાર **જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.... !**
- હજ્જારો લોકોને છરી પાલક સંઘની પ્રેરણા આપી યાત્રા કરાવનાર **જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.... !**
- સંખ્યાબધ્ધ મુમુક્ષુઓને દીક્ષા આપનાર **જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.... !**
- વર્તમાનમાં છ'રી પાલક સંઘની હારમાળા સાથે નવ્વાણુની યાત્રા કરાવી પુણ્ય બંધાવતા **જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.... !**

ગુરુજન્મભૂમિ શ્રી પેપરાલ તીર્થમાં ઓજસ્વી અને તેજસ્વી આભને આંબતા ઉત્સાહ સાથે ઐતિહાસિક, યશસ્વી અને અવિસ્મરણીય તપ આરાધના અને શાસન પ્રભાવક કાર્યક્રમો સાથે ચાતુર્માસ સંપન્ન...

ચાતુર્માસ પરિવર્તન...
જૈન શાસનના ઝળહળતા ઝવેરાતની વિદાયથી
શ્રી પેપરાલતીર્થ હીબકે ભરાયું

સૌધર્મ બૃહતપોગચ્છીય શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ તથા શ્રી જયંતસેન શાસન પ્રભાવક ટ્રસ્ટ પેપરાલ દ્વારા યુગપ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય ડૉ. શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., તીર્થ પ્રેરક વરિષ્ઠ મુનિરાજ શ્રી નિત્યાનંદ વિજયજી મ.સા., સમસ્ત તેજસ્વી શિષ્ય રત્નો અને વિશાળ સંખ્યામાં સાધ્વીજી ભગવંતોએ સંવત ૨૦૭૧ ના વર્ષનું શ્રી પેપરાલ તીર્થ ખાતે ઐતિહાસિક યશસ્વી અને અવિસ્મરણીય તપ આરાધના અને શાસન પ્રભાવક કાર્યક્રમો સાથે ચાતુર્માસુ સંપન્ન કર્યું હતું તેની યશોગાથા ચારેય જૈન ફીરકાઓમાં ગવાઈ રહી છે.

પૂજ્ય શ્રી આદિઠાણાના ચાતુર્માસ પ્રવેશથી જ શ્રી પેપરાલ તીર્થમાં ઓજસ્વી અને તેજસ્વી આભને આંબતો ઉત્સાહ વ્યાપી ગયો હતો.

સંવત ૨૦૭૨ ના કારતક સુદ-૧૫ ને બુધવાર તા. ૨૫-૧૧-૨૦૧૫ ના રોજ પૂજ્ય શ્રી આદિઠાણાના ચાતુર્માસ પરિવર્તન નિમિત્તે મિચ્છામિદુક્કડમની આપ લે કરતો વિદાય સમારંભ યોજાયો હતો. ચાર ચાર માસ સુધી ગોકુળીયા શ્રી પેપરાલ તીર્થમાંથી જૈન શાસનના ઝળહળતા ઝવેરાત સમા પૂજ્ય શ્રી આદિઠાણાની વિદાય જૈન જૈનેતર ભક્તોને ઘણી વસમી લાગી હતી અને રીતસર લોકો હીબકાં ભરી ધ્રુસકે ધ્રુસકે રડી પડ્યા હતા. અને દુ:ખતા હૈયે પૂજ્યશ્રીને વળાવવા વાજતે-ગાજતે જનમેદની ઉમટી પડી હતી. પૂજ્યશ્રીએ ચાતુર્માસ પરિવર્તન કરી પ્રથમ લવાણાની સ્કુલમાં સ્થિરતા કરી હતી. ત્યારબાદ બીજા દિવસે થરાદથી શ્રી શંખેશ્વર તીર્થના છ'રી પાલક સંઘમાં નિશ્રા પ્રદાન કરવા થરાદ ખાતે પધરામણી કરી હતી.

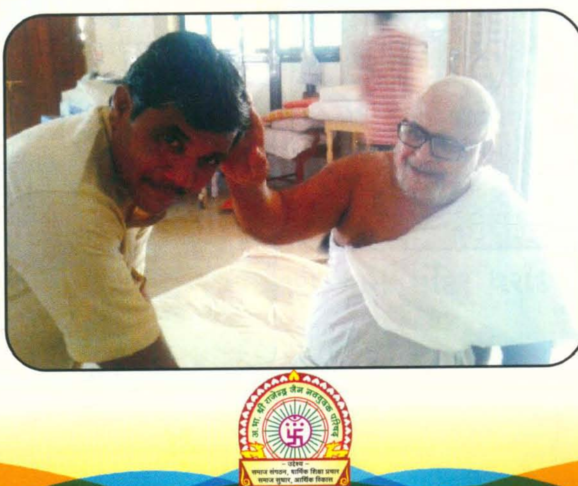

अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद

- उद्देश्य -
समाज संगठन, धार्मिक शिक्षा प्रचार
समाज सुधार, आर्थिक विकास

પૂજ્યશ્રીની નિશ્રામાં થરાદનગરના વરખડી ધામમાં નૂતન ધર્મશાળાનો ઉદ્‌ઘાટન અને મુખ્ય લાભાર્થી પરિવારોના સ્ટેચ્યુનો અનાવરણ વિધિ કાર્યક્રમ સંપન્ન.

વિશ્વમાં કોઈપણ ખૂણામાં વસતા થરાદવાસીઓ માટે તે સ્થળ માદરે વતન જેવું બની જાય છે તેમ છતાં પોતાના વતનને ક્યારેય ભુલતા નથી. થરાદ જૈન સમાજના સંખ્યાબધ્ધ પરિવારો દેશ-દેશાવર ખાતે ધંધાર્થે સ્થાઈ થયા છે અને વ્યવસાયિક સફળતા સાથે ધાર્મિક ક્ષેત્રે પણ સેવા પ્રદાન કરી શ્રી સંઘોમાં આગવી ઓળખ અપાવી રહ્યા છે.

મુંબઈ-સુરત સ્થિત અપ્રિતમ સફળતા હાંસલ કરનાર અદાણી ચુનીલાલ નાગરદાસ પરિવાર તેમજ નડીઆદ સ્થિત વોહેરા બાબુલાલ લલ્લુભાઈ પરિવારનું નામ શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘમાં અગ્રેસર છે.

ચાર વર્ષે પૂર્વે યુગ પ્રભાવક, સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમપૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ની પાવન નિશ્રામાં તેમના વરદ્ હસ્તે થરાદનગરના વરખડી ધામની પ્રતિષ્ઠા સંપન્ન થઈ હતી જે વરખડી ધામમાં નૂતન ધર્મશાળાનું નિર્માણ કરાયું હતું. જેનો ઉદ્‌ઘાટન અને શ્રી શત્રુંજય તીર્થના મુખ્ય લાભાર્થી અદાણી ચુનીલાલ નાગરદાસ પરિવારના શ્રી ચુનીબાપુ અને બબુબાના સ્ટેચ્યુ તથા મુખ્યધ્વારના લાભાર્થી વોહેરા બાબુલાલ લલ્લુભાઈ પરિવારના શ્રી બાબુકાકા અને કાંતાબાના સ્ટેચ્યુની અનાવરણ વિધિ કાર્યક્રમ સંપન્ન થયો હતો.

શ્રી પેપરાલ તીર્થ થી ચાતુર્માસ પરિવર્તન કરી પૂજ્યશ્રી આદિઠાણાએ સંવત ૨૦૭૨ ના કારતક વદ-૧ ને ગુરૂવાર તા. ૨૬-૧૧-૨૦૧૫ ના રોજ થરાદ ખાતે પધરામણી કરી હતી અને ઉપરોક્ત કાર્યક્રમ માટે વરખડીધામ ખાતે સ્થિરતા કરી ધર્મશાળા અને સ્ટેચ્યુ અનાવરણ વિધિનો કાર્યક્રમ સંપન્ન કરાવ્યો હતો. ત્યારબાદ નવકારશી કરી વાજતે-ગાજતે નગર પ્રવેશ કરી રાજેન્દ્રસૂરી જ્ઞાન મંદિર થરાદ ખાતે પાવન પધરામણી કરી હતી.

ભણસાળી પરિવારની પ્રતિષ્ઠામાં "સંઘવી" પદ નું છોગું ઉમેરાયું

ભણસાલી મણીલાલ જીતમલભાઈ પરિવાર દ્વારા આયોજિત થરાદથી શ્રી શંખેશ્વર તીર્થમાં છ'રી પાલક સંઘનું સમાપન માળા રોપણ પ્રસંગ ધર્મભાવનાથી દીપી ઉઠ્યો શ્રી રાજેન્દ્રસૂરી નવકાર મંદિર શંખેશ્વર ખાતે પૂજ્યશ્રીની પૂજનીય જીવંત પ્રતિમા બિરાજમાન કરાવાઈ

બનાસકાંઠા જીલ્લાના થરાદનગરના વતની અમદાવાદ સ્થિત ભણસાળી મણીલાલ જીતમલભાઈ પરિવાર દ્વારા આયોજિત જૈન શાસનની પ્રભાવનારૂપે થરાદથી શ્રી શંખેશ્વર તીર્થનો છ'રી પાલક યાત્રા સંઘ નિર્વિઘ્ને સુખરૂપ સંપન્ન થતાં શ્રી રાજેન્દ્રસૂરી નવકાર મંદિરમાં સંઘ માળાનો પ્રસંગ યોજાયો હતો.

યુગ પ્રભાવક, સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય ડૉ. શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ની પાવન પ્રેરણા અને નિશ્રામાં ભણસાળી પરિવાર દ્વારા આ નવદિવસીય છ'રી પાલક યાત્રા સંઘનું ભવ્ય આયોજન કરાયું હતું.

યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય ડૉ. શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., વરિષ્ઠ મુનિરાજ શ્રી નિત્યાનંદવિજયજી મ.સા. આદિ મુનિમંડળ અને વિશાળ સંખ્યામાં સાધ્વીજી ભગવંતો સહિત ૧૨૦૦ થી અધિક યાત્રિકો સાથે પરમાત્માની ઉત્તમ ભક્તિનો સાકાર કરતાં છ'રી પાલક યાત્રા સંઘે સંવત ૨૦૭૨ ના કારતક વદ-૨ ને શુક્રવાર તા. ૨૭-૧૧-૨૦૧૫ ની સુપ્રભાતે વાજતે-ગાજતે ધામધૂમપૂર્વક પ્રસ્થાન કર્યું હતું. પડાવના નક્કી કરાયેલા સ્થળોએથી થઈ સંવત ૨૦૭૨ ના કારતક વદ-૧૦ ને શનિવાર તા. ૫-૧૨-૨૦૧૫ ના રોજ છ'રી પાલક યાત્રા સંઘ શ્રી શંખેશ્વર તીર્થ પાર્શ્વનાથ દાદાના ધામે પહોંચ્યો હતો. પૂજ્યશ્રી આદિઠાણાની પાવન નિશ્રામાં શ્રી પાર્શ્વનાથ દાદાને ભેટવાનો પ્રસંગ હોઈ સૌ યાત્રિકોમાં હરખ સમાતો ન હતો. છ'રી પાલક યાત્રા સંઘમાં જોડાયેલા યાત્રિકો તથા આ પ્રસંગને દિપાવવા પધારેલા સગા-સ્નેહીઓ ધર્મભક્તિથી ભાવ વિભોર થઈ ઝુમી ઉઠ્યા હતા. શ્રી શંખેશ્વરતીર્થે પ્રવેશ કરતા સમયે વિશાળ મેદની એકત્ર થઈ હતી ભવ્યાતિભવ્ય સ્વાગત સામૈયું કરાયું હતું. ભણસાળી પરિવાર માટે યશસ્વી એવા થરાદથી શ્રી શંખેશ્વર તીર્થનો છ'રી પાલક સંઘ પૂર્ણ થતાં શ્રી રાજેન્દ્રસૂરી નવકારધામમાં સંઘ માળા રોપણનો કાર્યક્રમ સંવત ૨૦૭૨ ના કારતક વદ-૧૦ ને રવિવાર તા. ૬-૧૨-૨૦૧૫ ના રોજ યોજાયો હતો. જ્યાં છ'રી પાલક યાત્રા સંઘ આયોજક ભણસાળી પરિવારના સભ્યોને સંઘ માળા પહેરાવી બહુમાન કરાયું હતું.

થરાદથી શ્રી શંખેશ્વરતીર્થ ખાતે પહોંચતા રસ્તામાં આવતા મુકામો દરમ્યાન પૂજ્યશ્રી આદિઠાણા સહિત છ'રી પાલક યાત્રા સંઘનું સ્વાગત કરાયું હતું. અને સંઘની સ્થિરતા દરમ્યાન સેવા-પૂજા, રાત્રિ ભક્તિ ભાવનાના કાર્યક્રમો યોજાયા હતા.

છ'રી પાલક યાત્રા સંઘ આયોજક પરિવાર દ્વારા યાત્રિકોની તેમજ મહેમાનોની

સુંદર ભક્તિ કરાઈ હતી અને આ છ'રી પાલક યાત્રા સંઘ સુખ-રૂપ સંપન્ન થયો હતો. માળા રોપણ પ્રસંગ ધર્મ ભાવનાથી દીપી ઉઠ્યો હતો. આમ ભણસાળી મણીલાલ જીતમલભાઈ પરિવાર દ્વારા આયોજીત છ'રી પાલક યાત્રા સંઘ એક સંભારણું બની ગયો હતો.

સોનામાં સુંગંધ રૂપ આજના મંગલમય દિવસે યુગ પ્રભાવક, સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમપૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત ડૉ. શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ની પૂજનીય જીવીત પ્રતિમાને શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિ નવકાર તીર્થમાં બિરાજમાન કરાવાઈ હતી જેનો લાભ નડીઆદ સ્થિત વોહેરા કાંતાબેન બાબુલાલ લલ્લુભાઈ પરિવારે લીધો હતો. પૂજ્યશ્રીની પૂજનીય જીવંત પ્રતિમાના વંદન-દર્શન કરતા લાભાર્થી પરિવારજનો...

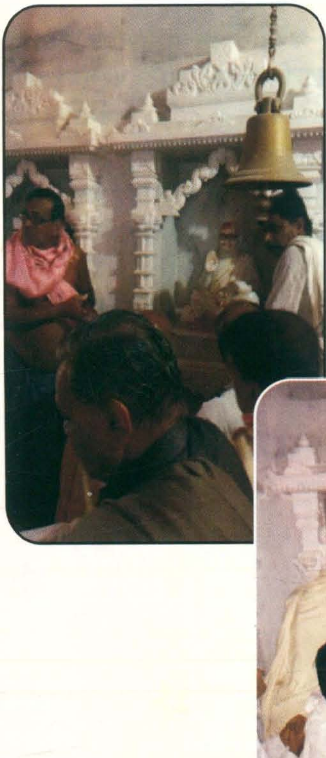

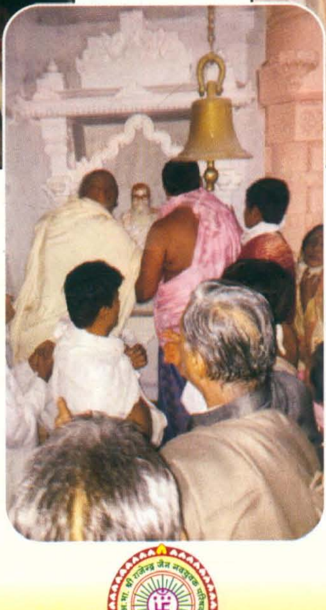

તાવી ખાતે પૂજ્યશ્રીના જન્મોત્સવની ભવ્યતાભવ્ય ઉજવણી

શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સમુદાયના આધાર સ્થંભ, અનંત ઉપકારી લાખો લોકોના હ્દય સમ્રાટ, યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમપૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય ડૉ. શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., વરિષ્ઠ મુનિરાજ શ્રી નિત્યાનંદ વિજયજી મ.સા. આદિ સાધુ-સાધ્વીજી મંડળએ શ્રી પેપરાલ તીર્થનું યશસ્વી ચાતુર્માસ સંપન્ન કરી થરાદથી શ્રી શંખેશ્વર તીર્થનો છ'રી પાલક સંઘ સંપન્ન કરાવી શંખેશ્વરથી વલ્લભીપુરના વિહાર દરમ્યાન રસ્તામાં આવતા તાવી ગામમાં યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય ડૉ. શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ના ૭૯મા જન્મોત્સવની ભવ્યાતિભવ્ય ઉજવણી કરાઈ હતી આ અવસરે ગુણાનુવાદ સહિત ભવ્ય કાર્યક્રમો સંપન્ન થયા હતા.

જય... જયકાર... જય... જયકાર રાષ્ટ્રસંતની જયકાર તેમજ જુગ જુગ જીવો અમારા ગુરૂજીના બુલંદ નારાઓ સાથે પૂજ્યશ્રીના દિર્ઘાયુષ્ય માટે પરમ કૃપાળુ પરમાત્માને પ્રાર્થના કરાઈ હતી અને ૭૯માં જન્મોત્સવ અને ૮૦મા વર્ષમાં પ્રવેશ નિમિત્તે વધાઈ અપાઈ હતી.

પૂજ્યશ્રીના જન્મોત્સવ નિમિત્તે તાવી ગામની પાંજરાપોળમાં ભક્તોએ સારી એવી રકમ લખાવી ધન્યતા અનુભવી હતી.

જૈને હૈયે શ્રી નવકાર તેની તરતી રહેશ નાવ ! આપશે મોતને એ પડકાર કરશે દિર્ઘાયુષ્યનો રણકાર પૂજ્યશ્રીના દિર્ઘાયુષ્યના રણકારની અડગ શ્રધ્ધા સહ ૭૯મા જન્મદિને ૧૦૦૮ વાર કોટી કોટી વંદન.

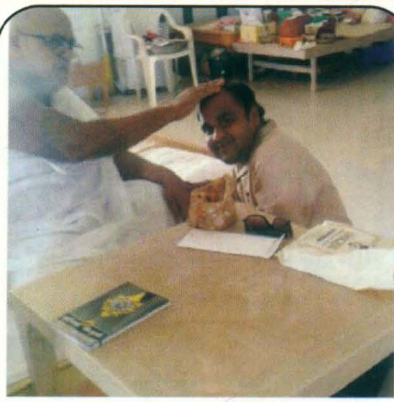

श्री सोधर्म बृहतपोगच्छिय
त्रिस्तुतिक श्रीसंघ के
षष्ठमें जैनाचार्य
गच्छाधिपति श्रीमद
विजय जयन्तसेन सूरीश्वर
जी मु.सा के 80वे
जन्मोत्सव 9 दिसम्बर
2015 पर हार्दिक बधाई
और शुभकामना देते हुए
आचार्य श्री के स्वास्थ व
दीघार्यु होने की
मंगलकामनाए करता हूं
वन्दनकर्ता_अभा श्री
राजेन्द्र जैन नवयुवक
परिषद पेपराल तीर्थ
शाखा के महामंत्री
मेहुल धरु

વોહેરા પરિવારની પ્રતિષ્ઠામાં "સંઘવી" પદ નું છોગું ઉમેરાયું
૨૬૦૦ યાત્રિકોની લાંબી સ્નેહની સાંકળ રચતા પ્રથમવાર....
વોહેરા નારણભાઈ ધરમચંદભાઈ પરિવાર દ્વારા આયોજીત
વલ્લભીપુરથી શ્રી શત્રુંજય મહાતીર્થનો છ'રી પાલક
યાત્રા સંઘ ઉત્સાહી માહોલ વચ્ચે સંપન્ન

એક જ સમાજના સ્નેહ વાત્સલ્યના પ્રવાહો અને નદીના બે કાંઠે નીર વહેતા હોય ત્યારે ભૂખ્યા તારે પણ ગીતો ગુંજતા થઈ જાય છે... !!!

થરાદના વતની અને ધર્મના પાયાને મજબુત બનાવવાની નામના મેળવેલ વોહેરા શ્રીમતી મથુરીબેન નરપતલાલ છોટાલાલ પરિવાર દ્વારા જૈન શાસનની પ્રભાવના રૂપે ૨૬૦૦ યાત્રિકોની લાંબી સ્નેહની સાંકળ રચતો પ્રથમવાર શ્રી વલ્લભીપુરથી શ્રી શત્રુંજય તીર્થાધિરાજનો છ'રી પાલક યાત્રા સંઘ નિર્વિઘ્ને અને સુખરૂપ સંપન્ન થતાં શ્રી આદિનાથ દાદાની છત્ર છાયામાં દાદાના દરબારમાં સંઘ માળાનો ઉત્સાહી માહોલ વચ્ચે પ્રસંગ યોજાયો હતો.

અનંત ઉપકારી, લાખો લોકોના હૃદય સમ્રાટ, બહુદીક્ષાના દાનેશ્વરી અઢળક પુણ્યના સ્વામી, યુગ પ્રભાવક, સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમપૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. એ જ્યારે સંઘમાળા પ્રસંગે આ સંઘપતિ પરિવારને સંબોધી અનુમોદનીય પ્રવચન આપી સહુને આશિર્વાદ આપ્યા ત્યારે વાતાવરણ ધર્મમય બની ગયું હતું.

આ છ'રી પાલક યાત્રા સંઘના સફળ આયોજન થકી વોહેરા શ્રીમતિ મથુરીબેન નરપતલાલ છોટાલાલ પરિવાર સભ્યોને ગૌરવપ્રદ સંઘવી તરીકેનો દરજ્જો મળતાં વોહેરા પરિવારની પ્રતિષ્ઠાની યશોગાથામાં સોનેરી છોગું ઉમેરાયું હતું.

સન્યાસીની જેમ ઉભા રહેલા ઘટાટોપ લીલાછમ વૃક્ષો... ખળભળ વહી રહેલા નદીના નીર... પ્રકૃતિએ બક્ષેલ રમણીય સ્થળ વચ્ચે સંભળાઈ રહેલા પક્ષીઓના ચહક... ચહક... કલરવ... ટમટમતા તારલા અને ચંદ્રના દર્શન થકી બિલકુલ સ્વચ્છ આસમાન નીચે જેના કાંકરે કાંકરો સિધ્ધ છે તેવો શ્રી શત્રુંજય તીર્થાધિરાજનો અતૂટ સ્નેહના તાંતણે ગુંથાયેલ સમાજના ૨૬૦૦ થી અધિક યાત્રિકો સાથેના વોહેરા નારણભાઈ ધરમભાઈ પરિવારનો પાંચ દિવસીય છ'રી પાલક યાત્રા સંઘ સુખરૂપ ઉત્સાહી માહોલ માહોલ વચ્ચે સંપન્ન થયો હતો. આયોજીત પરિવાર

સહીત સમાજજનો અને યાત્રિકોમાં ઓજસ્વી અને તેજસ્વી આભને આંબતો ઉત્સાહ વ્યાપી ગયો હતો.

સંવત ૨૦૭૨ ના માગસર સુદ-૨ ને રવિવાર તા. ૧૩-૧૨-૧૫ ના રોજ સવારે ૮-૧૫ કલાકે અમદાવાદથી યાત્રિકોએ ઉષ્માભેર વિદાય લઈ અંદાજીત ૫૧ લકઝરી બસો દ્વારા શ્રી વલ્લભીપુર તરફ જવા પ્રસ્થાન કર્યું હતું. ત્યાં સમસ્ત યાત્રિકો માટે ભોજન અને રહેવા માટેની સુંદર વ્યવસ્થા કરવામાં આવી હતી.

શ્રી વલ્લભીપુરથી સંવત ૨૦૭૨ ના માગસર સુદ-૩ ને સોમવાર તા. ૧૪-૧૨-૨૦૧૫ ના રોજ સંઘ સેનાપતિ યુગ પ્રભાવક, સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમપૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય ડૉ. શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., વરિષ્ઠ મુનિરાજ શ્રી નિત્યાનંદ વિજયજી મ.સા. આદિ મુનિ મંડળ તેમજ સાધ્વીજી મંડળ અને વિક્રમ સર્જક ૨૬૦૦ થી અધિક યાત્રિકો સાથે શ્રી વલ્લભીપુરથી શ્રી શત્રુંજય તીર્થાધિરાજના છ'રી પાલક યાત્રા સંઘે પરમાત્માના ઉતમ ભક્તિનો સાકાર કરતા વાજતે-ગાજતે વહેલી સવારે ઢોલ-નગારા અને બેન્ડના સુમધુર ધ્વની અને જય જય કારના ગગનભેદી બુલંદ નારાઓ સાથે મંગલમય પ્રસ્થાન કર્યું હતું. ત્યારે દોઢ કિલો મીટરના વિસ્તારમાં જાણે માનવ મેદનનીની ચાદર ફેલાઈ ગઈ હતી. આ દ્રશ્ય જોઈ ખુદ પૂજ્યશ્રી પણ આશ્ચર્યચકિત બની ગયા ગતા અને દરેક યાત્રિકોના મોઢે એક જ વાત ચર્ચાતી હતી આવા સંઘમાં અમે જોડાયા છીએ તે અમારૂં અહોભાગ્ય છે.

શ્રી વલ્લભીપુર થી આ વિરાટ છ'રી પાલક સંઘ ધર્મની છોળો ઉડાડતો નવાગામ ખાતે પહોંચ્યો હતો. જ્યાં પૂજ્યશ્રી સહિત છ'રી પાલક યાત્રા સંઘનું ભવ્યાતિભવ્ય સામૈયું કરાયું હતું દિવસ દરમ્યાન સેવા-પૂજા, પૂજયશ્રીનું પ્રવચન અને રાત્રિ ભક્તિભાવનાના કાર્યક્રમ યોજાયા હતા.

તા. ૧૫-૧૨-૨૦૧૫ ના રોજ વહેલી સવારે નવાગામથી પ્રસ્થાન કરી આ છ'રી પાલક યાત્રા સંઘ પીપરાલ ગોડીધામ ખાતે પહોંચ્યા હતો.

દિવસ દરમ્યાન પૂજ્યશ્રીનું પ્રવચન તેમજ ધાર્મિક કાર્યક્રમો યોજાયા હતા. હાથી, ઘોડા, બેન્ડ, ઢોલ-નગારા સાથે વાત્સલ્યસભર આત્યમિયકતા સાથે પૂજ્યશ્રી સપરિવાર સહિત યાત્રિકોને સુખશાતા પુછવાનો અદેકેરો કાર્યક્રમ ગોઠવ્યો હતો. વોહેરા નારણદાસ ધરમચંદભાઈ પરિવારના સભ્યોએ એ જ્યારે અંતઃકરણ પૂર્વક યાત્રિકોને સુખશાતા પુછી હતી ત્યારે દરેક યાત્રિકો ભાવવિભોર બની ગયા હતા અને સંઘપતિ પરિવારની ભુરીભુરી અનુમોદના કરી અભિનંદન પાઠવ્યા હતા.

તા. ૧૬-૧૨-૨૦૧૫ ના રોજ વહેલી સવારે પીપરાલ ગોડીધામથી પ્રસ્થાન કરી છ'રી પાલક યાત્રા સંઘ અઢીદ્રીપ ખાતે પહોંચ્યો હતો જ્યાં દિવસ દરમ્યાન પૂજ્યશ્રીનું પ્રવચન અને ધાર્મિક કાર્યક્રમો યોજાયા હતા.

તા. ૧૭-૧૨-૧૫ ના રોજ વહેલી સવારે અઢદ્વીપથી પ્રસ્થાન કરી છ'રી પાલક યાત્રા સંઘ પાલીતાણા ખાતે પહોંચ્યો હતો. પાલીતાણા ખાતે પૂજ્યશ્રી સપરિવાર સહિત છ'રી પાલક યાત્રા સંઘનું નવ્વાણું યાત્રાના લાભાર્થી પરિવાર દ્વારા જે રીતે ભવ્યાતિભવ્ય સ્વાગત સામૈયું કરાયું હતું તેનું વર્ણન શબ્દોમાં થઈ શકે તેમ નથી. આ સ્વાગત સામૈયા દરમ્યાન દરેકના હૈયામાં આનંદ સમાતો ન હતો જાણે આનંદનો મહાસાગર લહેરાઈ ગયો હતો. પૂજ્યશ્રી સપરિવાર સાથે શ્રી શત્રુંજય મહાતીર્થા ધિરાજની તળેટીએ જઈ તળેટી રાજને વધામણા આપી સહુએ ભાવભૂવક વંદન-દર્શન. ચૈત્યવંદન કરી ભરપેટ ભક્તિ કરી પુણ્યનું ભાથુ બાંધી ધન્યતા અનુભવી હતી. બપોરે પૂજ્યશ્રીનું પ્રવચન, બહુમાન અને ધાર્મિક કાર્યક્રમો સંપન્ન થયા હતા.

તા. ૧૮-૧૨-૨૦૧૫ ના રોજ પૂજ્યશ્રી સપરિવારની નિશ્રા હોઈ અને શ્રી શત્રુંજય તિર્થાધિરાજ પર્વત ઉપર બિરાજમાન પ્રથમ તીર્થંકર પરમાત્મા શ્રી આદિનાથ ભગવાન આદિ જિનબિંબોને ભેટવાનો મહામુલો અવસર હોઈ સૌ નાના-મોટા યાત્રિક ભાઈ-બહેનો હરખના હિલોળે ચડ્યાં હતાં. છ'રી પાલક યાત્રા સંઘમાં જોડાયેલા યાત્રિકો, નવ્વાણુ યાત્રામાં જોડાયેલા યાત્રિકો સંઘપતિ પરિવાર અને આ પ્રસંગને દિપાવવા ઉમટી પડેલા મહાનુભાવો ધર્મભક્તિથી ભાવવિભોર થઈ ઝુમી ઉઠ્યા હતા અને જયદાદા આદિનાથના જયઘોષ સાથે ડુંગર ચડવાની શરૂઆત કરી હતી. ડુંગર ચડવાના પ્રારંભે ૩૫૦૦ થી વધુ વિશાળ મેદની એકત્ર થઈ હતી. અને દાદા આદિનાથને ભેટવા આગળ ધપી હતી. દાદાના દરબારમાં ભક્તોની ભીડ જામી હતી જ્યાં આદિનાથ દાદાના જિનાલયના શિખર ઉપર સંઘપતિ પરિવાર દ્વારા નૂતન ધ્વજારોહણ વિધિ સંપન્ન થઈ હતી. તા. ૧૮-૧૨-૨૦૧૫ ના રોજ દાદાના દરબાર પરિસરમાં સંઘ પતિ પરિવારના સભ્યોને સંઘમાળા પહેરાવી બહુમાન કરાયું હતું.

આ છ'રી પાલક યાત્રા સંઘમાં ફોટોગ્રાફર, મંડપ ડેકોરેશન, રસોઈઆ, ડૉક્ટરો, ટેન્ટ, સુપ્રસિધ્ધ સંગીતકારો વિગેરે સુંદર સેવા આપી હતી. ઉલ્લેખનીય છે કે આ છ'રી પાલક યાત્રા સંઘ દરમ્યાન કોઈપણ યાત્રિકોને અગવડ ના પડે તે માટે પુરેપુરી તકેદારી રાખવામાં આવી હતી. બીયાસણા-એકાસણામાં અને મહેમાનો માટે ત્રણેય ટાઈમમાં ભોજનમાં રસવંતી રસોઈ પીરસાઈ હતી. સંઘ પતિ

પરિવાર અને સગા સ્નેહી દ્વારા યાત્રકોનું પ્રભાવના રૂપે બહુમાન કરાયું હતું. જ્યારે પ્રથમ ચરણે થેલો કીટ સંથારીયું વિગેરે જરૂરીયાત વસ્તુ આપવામાં આવી હતી.

આ છ'રી પાલક યાત્રા સંઘ દરમ્યાન યાત્રિકોને કોઈ જ અગવડ વેઠવી પડી ન હતી. યાત્રિકોએ આ સંઘપતિ પરિવારની ભાવનાને બિરદાવી હતી અને સમસ્ત નારણભાઈ ધરમચંદભાઈ વોહેરા પરિવાર પ્રથમવાર ૨૬૦૦ યાત્રિકોની લાંબી સ્નેહની સાંકળ રચવામાં સફળ થયો છે તે માટે આનંદ વ્યક્ત કર્યો હતો. આ છ'રી પાલક યાત્રા સંઘને અદ્‌ભુત સફળતા અપાવવા કુટુંબના સભ્યો સહિત સમાજના કાર્યકરો અને સગા-સ્નેહીઓએ ભારે જહેમત ઉઠાવી હતી. યાત્રિકોને લઈ જવા અને પરત લાવવા લકઝરી બસોની વ્યવસ્થા કરાઈ હતી. વલ્લભીપુથી પાલીતાણા સુધીની પૂજ્યશ્રી સપરિવારની વૈયાવચ્ચ ભક્તિનો લાભ પણ આજ પરિવારે લીધો હતો.

ખાસ નોંધનીય બાબત...

યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમપૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય ડૉ. શ્રીમદ્ વિજયજયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ના કૃપાપાત્ર પ્રખર ગુરૂભક્ત નટુ એટલે નરપતલાલ જે નરપતલાલ વોહેરા એ જીવનમાં ઘણી જ તડકી છાંયડી જોઈ છે. પણ ક્યારેય તેમને તેમનો ધર્મ છોડ્યો નથી. અત્યારે અત્યંત સમૃધ્ધિમાં આળોટવા છતાં ક્યારેય છુટે મોઢે ભોજન કર્યું નથી. તે જ્યારે સજ્જાય ગાય છે ત્યારે લોકો ડોલી ઉઠે છે. તેમના જીવન દરમ્યાન ૧૦૮ અઠમ, વરસીતપ, ૧૮ જેટલા ઉપધાનથી માંઠી કેટલીય કઠોર તપશ્ચર્યા કરી છે. જેમના તપ પુણ્યના પ્રભાવે યોજાયેલ આ છ'રી પાલક યાત્રા સંઘ અદ્‌ભુત સફળતાને વરી દીપી ઉઠ્યો છે. અઢળક સંપતિના સ્વામી નરપતલાલ છોટાલાલ વોહેરા આજેય સાદગી પૂર્વક જીંદગી વ્યતિત કરી જે ધર્મપ્રભાવના કાર્યો કરી રહ્યા છે. તે અનુમોદનીય છે નરપતલાલ વોહેરાના ધર્મપત્નિ શ્રીમતી મથુરીબેન વોહેરા પણ તેમની તપશ્ચર્યાઓને પુરતો સહકાર આપી એક આર્યનારીનું દર્શન કરાવી રહ્યા છે. જ્યારે તેમના આજ્ઞાકિંત સુપુત્રો શ્રી અરવિંદભાઈ, શ્રી પ્રકાશભાઈ અને શ્રી પ્રફુલભાઈ તેમના પિતાશ્રી ધર્મકાર્ય માટે જે ભાવના વ્યક્ત કરે છે તેને શિરોધાર્ય કરી તુરંત જ અમલમાં મુકવા તત્પર બની જાય છે. અભિમાન વગરના શ્રીમતી મથુરીબેન નરપતલાલ છોટાલાલ વોહેરા પરિવાર દ્વારા સંપન્ન થયેલ આ છ'રી પાલક યાત્રા સંઘ ઐતિહાસિક, યશસ્વી અને અવિસ્મરણીય સંભારણું બની ગયો છે.

વોહેરા ચુનીલાલ ખેમચંદભાઈ પરિવાર દ્વારા આયોજીત બે દિવસીય શ્રી ગિરનાર તીર્થાધિરાજનો કૌટુંબિક યાત્રા પ્રવાસ યોજાયો

થરાદ નિવાસી નડીઆદ સ્થિત અપ્રિતમ વ્યવસાયિક સિધ્ધિ હાંસલ કરનાર ઉદાર સખાવતી વોહેરા ચુનીલાલ ખેમચંદભાઈ પરિવાર દ્વારા આયોજીત બે દિવસીય શ્રી ગિરનાર તીર્થાધિરાજના કૌટુંબિક યાત્રા પ્રવાસનું ભવ્ય આયોજન કરાયું હતું.

યુગ પ્રભાવક, સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય ડૉ. શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. નો પડ્યો બોલ જીલી લેવા ગમે ત્યારે ઉત્સુક એવા પ્રખર ગુરૂભક્ત શ્રી રસિકલાલ ચુનીલાલ વોહેરા તેમના સુપુત્રો શ્રી અશોકભાઈ (દાદુ) શ્રી પિયુષભાઈ તેમજ પૌત્રો રાજ, પારસ, જિનય વિગેરેએ કૌટુંબિક યાત્રા પ્રવાસના આયોજન માટે ચર્ચા વિચારણા કરી હતી અને આ કૌટુંબિક યાત્રા પ્રવાસ માટે સંવત ૨૦૭૨ માગસર સુદ-૮/૯ શનિ-રવિ તા. ૧૯/૨૦ ૨૦૧૫ ના રોજ દરમ્યાન માટેનો સમય નક્કી કરાયો હતો.

વર્તમાન સમયમાં પ્રતિ વર્ષ થરાદના પરિવારો કૌટુંબિક યાત્રા પ્રવાસનું આયોજન કરતા હોય છે પણ વોહેરા પરિવારની એકતા અને ઉદાર ભાવના કેવી ? વોહેરા ચુનીલાલ ખેમચંદભાઈ પરિવારના કુટુંબીજનો બહેન-દિકરી ભાણેજ તો હોય જ પણ સાથે સાથે નડીઆદમાં વસતા તમામ થરાદવાસી પરિવારના સભ્યો પણ અમારો જ પરિવાર છે તેવી સમજણ સાથે નડીઆદ સ્થિત સમસ્ત થરાદવાસીઓને ભાવભર્યું આમંત્રણ આપી સહુનો સમાવેશ કરી પ્રથમવાર નવો ચિલો ચાતરી અખંડ એકતાની મશાલ જગાવી હતી જે અભિનંદનીય બની ગઈ હતી. આ યાત્રા પ્રવાસમાં ૨૫૦ જેટલા યાત્રિકો જોડાયા હતા. તા. ૧૮-૧૨-૨૦૧૫ ના મંગલમય દિવસની રાત્રીએ ૧૦-૧૫ કલાકે લાભાર્થી પરિવારના નિવાસ સ્થાનેથી પાંચ લકઝરી બસોએ ઉત્સાહી માહોલ વચ્ચે વાજતે-ગાજતે પ્રસ્થાન કર્યું હતું. તા. ૧૯-૧૨-૨૦૧૫ ની વહેલી સવારે શ્રી ગિરીરાજ તીર્થાધિરાજની છત્રછાયામાં પહોંચી નવકારશી કરી. ૧૦૮ અભિષેક કાર્યક્રમમાં યાત્રિકો જોડાયા હતા. સેવા-પૂજા વિગેરે કાર્યો સંપન્ન કરી બપોરે ૨ કલાકે યાત્રિકોએ સામૂહિક રીતે વાજતે-ગાજતે શ્રી તળેટી રાજને ભેટી ધન્યતા અનુભવી હતી. સાંજે પુન્ય પાપની ફિલ્મ જોઈ હતી અને રાત્રિ ભક્તિ ભાવના કાર્યક્રમમાં માતૃ-પિતૃ કાર્યક્રમે સૌને રડાવી દીધા હતા. ત્યારબાદ બહુમાન કાર્યક્રમ સંપન્ન થયો હતો.

તા. ૨૦-૧૨-૨૦૧૫ ની વહેલી સવારે પહાડ યાત્રા સંપન્ન કરી. શ્રી નેમિનાથ દાદાને ભેટીને સહુએ પોતાના મનોરથ સફળ બનાવ્યા હતા. અત્યંત આનંદ અને ઉત્સાહી માહોલ વચ્ચે આ યાત્રા પ્રવાસ સંપન્ન કરી તા. ૨૧-૧૨-૨૦૧૫ ની વહેલી સવારે યાત્રિકો નડીઆદ અને અમદાવાદ પરત આવ્યા હતા. આ યાત્રા પ્રવાસમાં જોડાયેલા યાત્રિકો માટે રહેવા-જમવા વિગેરેની આયોજક પરિવાર દ્વારા સુંદર વ્યવસ્થા કરાઈ હતી. આ યાત્રા પ્રવાસને સફળ બનાવવા વોહેરા પરિવાર સહિત નડીઆદના દરેક સભ્યોએ ખભેખભા મિલાવી જહેમત ઉઠાવી હતી. એકતા શિરોમણી નડીઆદની અખંડ એકતાને બુલંદ બનાવવાની ઉદારતા બતાવનાર વોહેરા ચુનીલાલ ખેમચંદભાઈ પરિવારની નડીઆદ સ્થિત થરાદવાસી પરિવારોએ ભુરીભુરી અનુમોદના કરી હતી.

યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમપૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય ડૉ. શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. દ્વારા પ્રેરીત અને નિશ્રામાં થરાદવાસીઓના છ'રી પાલક યાત્રા સંઘ સંપન્ન

(૧) સંવત ૨૦૩૫	થરાદથી શ્રી શંખેશ્વરતીર્થ વારીયા વાઘજીભાઈ અનોપચંદભાઈ પરિવાર
(૨) સંવત ૨૦૪૫	થરાદથી શ્રી શત્રુંજયતીર્થ ધરૂ ફુલચંદ પાનાચંદ પરિવાર
(૩) સંવત ૨૦૪૫	થરાદથી શ્રી જીરાવલાતીર્થ વોરા બાદરમલ ન્યાલચંદ પરિવાર
(૪) સંવત ૨૦૪૬	થરાદથી શ્રી શંખેશ્વરતીર્થ ભણસાળી માલાજી અણદાજી પરિવાર
(૫) સંવત ૨૦૪૭	અમદાવાદથી શ્રી શત્રુંજયતીર્થ વોહેરા દેવરાજભાઈ કપુરચંદ પરિવાર
(૬) સંવત ૨૦૫૪	થરાદથી જીરાવલા તીર્થ અદાણી કુંવરજીભાઈ દેવરાજભાઈ પરિવાર
(૭) સંવત ૨૦૬૦	નડીઆદથી શ્રી ખંભાતતીર્થ વોહેરા બાબુલાલ લલ્લુભાઈ, વોહેરા મણીલાલ જીતમલભાઈ અને વોહેરા ચુનીલાલ ખેમચંદ પરિવાર
(૮) સંવત ૨૦૭૨	થરાદ થી શ્રી શંખેશ્વર તીર્થ ભણસાળી મણીલાલ જીતમલભાઈ પરિવાર
(૯) સંવત ૨૦૭૨	શ્રી વલ્લભીપુરથી શ્રી શત્રુંજયતીર્થ વોહેરા નારણચંદ ધરમચંદ પરિવાર

कुमकुम सने पगलिये

धूमधान से मना गच्छाधिपति का 80 वाँ जन्म दिवस

(अशोक श्रीश्रीमाल)

जन कल्याण और प्राणीमात्र के कल्याण के लिए हमारा इस मानव रूपी देह में जन्म हुआ है। जन्म की सार्थकता तभी है जब यह आत्मा अपने परम लक्ष्य को प्राप्त करे, अन्यथा हमारा जन्म लेना निरर्थक होगा। जन्म दिवस की खुशी के बजाय चिन्तन यह होना चाहिए कि हमें न तो दुबारा जन्म मिले और न जन्मदिवस मनाने की भावना। जन्म तो तीर्थंकर के कल्याणक के रूप में ही मनाना चाहिए। क्योंकि सच तो यही है कि उन्होंने ही जन्म लेकर कल्याण किया है।

उक्त विचार सुविशाल गच्छाधिपति राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरिश्वरजी म.सा.ने उनके 80वें जन्म दिवस के संदर्भ में एक संदेश में व्यक्त किए। पूज्य गुरुदेवश्री ने कहा कि समय निरन्तर प्रवाहमान है। विचारों का प्रवाह भी गतिमान है। इसके अंश-अंश का उपयोग ही उद्देश्य की ओर ले जाएगा। जन्म दिवस का निमित्त लेकर समाज हित, राष्ट्रहित, मानव मात्र और प्राणी मात्र के लिए किए जा रहे कार्य ही प्रशंसनीय व अनुमोदनीय हैं। हम इस अवसर पर संकल्प लें कि हम माता-पिता, गुरुजनों का फर्ज निभाते हुए बच्चों को सु-संस्कारित कर उन्हें देव-गुरु-धर्म से जोड़ेंगे। बच्चे हमारे समाज का उज्जवल भविष्य हैं।

छःरिपालक संघ और नव्वाणु यात्रा में अपनी निश्रा प्रदान करने शत्रुंजय की ओर विहाररत पूज्य गुरुदेव तावी नगर में उपस्थित थे। यहाँ हजारों गुरुभक्तों ने आपश्री के स्वस्थ जीवन की शुभकामनाएं करते हुए 80वाँ जन्मदिवस मनाया।

अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् परिवार व श्री त्रिस्तुतिक श्वेताम्बर श्रीसंघ के निर्देशन में इस दिवस को स्वास्थ्य दिवस के रूप में आयोजित किया गया। भारत भर की विभिन्न शाखाओं ने गुरुदेवश्री के जन्मोत्सव को विभिन्न प्रकार की धार्मिक, सामाजिक एवं रचनात्मक कार्यों से जोड़ा। दक्षिण भारत की विजयवाड़ा शाखा, राजमहेन्द्री, बैंगलौर, मैसूर, हुबली, बीजापुर, दावणगिरि और यादगिरी में गुरुदेव का जन्मदिवस अन्नदान, स्वास्थ्य शिविर अनुकम्पादान और पूजन-सामायिक कर मनाया।

गुरुदेव के जन्मदिवस पर मालवा में अत्यन्त उल्लास व उत्साह था। सम्पूर्ण मालवा की शाखाओं में सप्ताह भर से गतिविधियाँ चल रही है। शाखाओं ने स्थानीय सुविधानुसार स्वास्थ्य शिविर के रूप में- हेल्थ चेकअप, हृदय रोग परीक्षण, रक्त परीक्षण, रक्तदान, विकलांगता निवारण, अंग प्रत्यारोपण, नेत्र-लेंस प्रत्यारोपण, दवाई वितरण, अस्पतालों में मरीजों में अन्न-वस्त्र, फलों के वितरण आदि कार्य किए। अन्य सामाजिक एवं रचनात्मक सेवाओं में ऊनी वस्त्र वितरण, आर्थिक सहयोग, पुस्तक-कापियाँ वितरण, धार्मिक यात्राएं, प्याऊ संचालन सहित नियमित एवं स्थायी गतिविधियों का संपादन किया गया।

पूजन, सामायिक, जप-तप-आराधना, आरती, दीप प्रज्वलन, धार्मिक प्रतियोगिताएँ, भजन संध्या आदि आयोजनों में एक दूजे को बधाई देते हुए शुभकामनाएं व्यक्त कीं।

अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक, महिला एवं तरुण परिषद् द्वारा गुरु-गुणानुवाद सभा का आयोजन लगभग सभी शाखाओं में रखा गया।

गुजरात की अहमदाबाद, सूरत, थराद व डीसा शाखा के अधिकांश कार्यकर्ता वैयावच्च में गुरुदेव के साथ विहार में हैं और उन्होंने गुरुदेव की निश्रा में ही जन्मदिन मनाया। गुरु गुणानुवाद सभा में गुरुदेव के गुणों की विस्तृत व्याख्या करते हुए पूज्य मुनि भगवंतों ने कहा कि हम अत्यन्त सौभाग्यशाली है कि हमें ऐसे तारणहार सच्चे गुरु मिले और उनका सान्निध्य लगातार हमें मिल रहा है। सरल, सरस, अनुशासनप्रिय, मधुर व्याख्यानी, दीक्षा दानेश्वरी, तीर्थ उद्धारक, तीर्थ निर्माता, परिषद् पौषक, साहित्यकार, चिंतक, लेखक, आशुकवि, कवि कुलशेखर, प्राणीमात्र के हित चिन्तक पूज्य गुरुदेव का 80 वाँ जन्मदिवस है। छोटे से गाँव पेपराल (गुज.) में जन्म लेकर आपश्री जैन जगत के विराट शासन पर विराजमान हैं।

त्रिस्तुतिक श्रीसंघ के प्रमुख श्री चैतन्यजी काश्यप, श्री वाघजीभाई, श्री सुरेन्द्रजी लोढ़ा, श्री शांतिलालजी रामाणी, श्री ओ.सी.जैन, श्री मनोहरलालजी पुराणिक सहित अन्य वरिष्ठगणों, परिषद् परिवार के श्री जे.के.संघवी, श्री रमेशजी धरू, श्री अरविंदजी देसाई, श्री रमेशजी नडियाद, श्री रमेशजी धारीवाल, श्री सेवंतीभाई, श्री अशोक श्रीश्रीमाल, श्री राजेन्द्र दंगवाड़ा, श्री सुधीर लोढ़ा, श्री सुशीलजी छाजेड़, श्री सुशील गिरिया, श्री प्रकाश हीराणी, श्री प्रकाश छाजेड़, श्री शशांकजी, महिला परिषद् की अंगूरबाला सेठिया, कोकिलाजी भारतीय, गुणमालाजी नाहर, तरूण परिषद् के श्री अभयजी बरबोटा सहित सम्पूर्ण परिषद् परिवार ने पूज्य

गुरुदेव के संयम जीवन की अनुमोदना करते हुए उनके स्वास्थ्य लाभ की मंगलकामना की।

इस अवसर पर उपस्थित गुरुभक्तों की ओर से गुरुदेव श्री की प्रेरणा से स्थानीय गौशाला के लिए पाँच लाख से अधिक राशि का योगदान दिया गया। जन्मोत्सव और उपधान तप की माला निमित्त खिमावत परिवार की ओर से तावी नगर के सभी घरों में मिठाई वितरित करने के साथ ही साथ गौशाला में दो लाख इक्कावन हजार रु. राशि भेंट की गई।

जन्मोत्सव के सम्पूर्ण दिन का लाभ थराद निवासी मथुरीबेन नरपतलाल वोरा परिवार की ओर से लिया गया। परिवार की ओर से गच्छाधिपति के शंखेश्वर से पालीताणा तक के विहार दरमियान वैयावच्च एवं साधार्मिक भक्ति का लाभ लिया गया है। इन्होंने भी स्थानीय गौशाला में इक्कावन हजार रु. राशि का लाभ लिया।

बड़ावदा । पूज्य गुरूदेव का जन्मदिवस यहाँ विभिन्न आयोजनों के साथ मनाया गया । महिला परिषद बड़ावदा द्वारा उपाश्रय में सामूहिक सामायिक एवं नमस्कार महामंत्र के जाप कर आचार्य श्री के दीर्घायु व उत्तम स्वास्थ की मंगल कामना की । इस अवसर पर परिषद अध्यक्ष मीना सकलेचा, मधुबाला सकलेचा, शालू बाफना, सुनीता सकलेचा, संगीता सकलेचा, प्रेमलता सकलेचा, साधना बाफना आदि मौजूद थे ।

हुबली:- पूज्य गच्छाधिपति गुरुदेव श्री का जन्मोत्सव हुबली के के.एम.सी. प्रांगण स्थित महावीर लिंब सेन्टर में विकलांगजनों को कृत्रिम अंग लगाने का शिविर आयोजित कर धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर हुबली-धारवाड़ के पुलिस उपायुक्त महोदय, लिंब सेन्टर के संस्थापक अध्यक्ष श्री महेन्द्र सिंघी, बीआईएस के राज्याध्यक्ष श्री गौतम बाफना, श्री राज-राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट अध्यक्ष श्री

अचलचंदजी माण्डोत मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। अतिथियों एवं परिषद् सदस्यों द्वारा नि:शक्त विकलांगजनों को कृत्रिम अंग लगाकर आचार्य महाराज के स्वास्थ्य की मंगलकामना की गई। इस अवसर पर संघ के सदस्य, गुरुदेव महिला मंडल के सदस्य गीता शेठ, शोभा वेदमुथा, पिंटू जैन, शुभम, परिषद् के सदस्यगण आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन श्री संजय शेठ ने किया।

बैंगलौर। अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् बैंगलौर शाखा द्वारा परिषद् प्रेरणादाता पूज्य आचार्यश्री का जन्मोत्सव 'स्वास्थ्य दिवस' के रूप में मनाया गया। परिषद् के सदस्यों द्वारा भगवान महावीर हॉस्पीटल प्रांगण में विकलांगों को कृत्रिम अंग लगाने का शिविर आयोजित किया गया। शिविर में 25 विकलांगों को कृत्रिम पैर लगाए

गए। कार्यक्रम में परिषद् के राष्ट्रीय मंत्री श्री प्रकाशजी हिराणी ने कहा कि पूरा देश आज पूज्य गुरुदेव का जन्मोत्सव पूरी आस्था एवं उत्साह से विभिन्न सामाजिक सेवाओं के साथ मना रहा है। गुरुदेव हमेशा स्वस्थ रहकर अपनी कृपादृष्टि हम सब पर बनाए रखें। इस अवसर पर दक्षिण भारत इकाई के अध्यक्ष श्री भेरूलाल सेठ, शाखा अध्यक्ष श्री बाबुलालजी, मंत्री श्री डूंगरमलजी चौपड़ा, सहमंत्री श्री दिलीपजी कांकरिया, श्री प्रकाशजी, श्री अशोकजी भंडारी, श्री विजयजी भंडारी, श्री राजेन्द्र हिराणी, श्री चम्पालालजी कांकरिया एवं श्री दिनेशजी ओसवाल आदि उपस्थित थे। यह जानकारी मंत्री श्री डूंगरमलजी चौपड़ा ने दी।

पारा। आचार्य देवेश तीर्थोद्धारक, संघनायक पूज्य गुरुदेव का जन्मोत्सव कार्यक्रमों के आयोजन के साथ मनाया गया। कार्यक्रम के दौरान श्री नरेन्द्र व्होरा परिवार की ओर से भक्तामर की प्रभावना वितरित की गई। समाजजनों द्वारा गुरुदेव का चित्र लेकर शोभायात्रा निकाली गई। पारा श्रीसंघ अध्यक्ष श्री मनोहरजी छाजेड़ और नवयुवक परिषद् महामंत्री श्री सुशील ने जानकारी में बताया कि गुरुवंदन श्रीसंघ के महामंत्री श्री राजेन्द्र कोठारी ने कराया और गुरुदेव के जीवन पर प्रकाश डाला। श्री विभाष अमृतलाल जैन ने स्वरचित स्तवन प्रस्तुत किया। संघ महामंत्री श्री राजेन्द्र कोठारी, परिषद् अध्यक्ष श्री आशीष कनकमलजी कोठारी ने भी गुरुदेव के महत्व को समझाया। इस अवसर पर यतीन्द्र ज्ञानपीठ पुरस्कारों का वितरण किया गया। पश्चात् पारा के नूतन गुरुमंदिर की पद्मशिला स्थापित की गई।पारा श्रीसंघ व परिषद् परिवार द्वारा सामूहिक स्वामीवात्सल्य रखा गया। सभा का संचालन श्री सुरेश जी कोठारी ने किया। दोपहर में महिला परिषद् द्वारा सामायिक, चौबीसी का आयोजन कर गुरुदेव के स्वास्थ्य के प्रति मंगलकामना की। मंदिर प्रांगण में आकर्षक रंगोली बनाकर प्रत्येक घर पर 5 दीपकों की रोशनी की गई।

कुक्षी। पूज्य आचार्यश्री के 80 वें जन्मोत्सव अवसर पर कुक्षी में प्रातः श्री रमणलाल मिश्रीलालजी के निवास पर मांगलिक प्रभातियों का कार्यक्रम रखा गया। तालनपुर तीर्थ पर महिला व बहू परिषद्

द्वारा पूजन एवं पूर्णिमा परिवार द्वारा स्वामीवात्सल्य का आयोजन किया गया। भैय्या स्वास्तिक एवं सुशील मुनीमजी द्वारा प्रत्येक घर में मोमबत्ती वितरित की गई। बालिकाओं ने आकर्षक रंगोली बनाई। शाम को सांस्कृतिक कार्यक्रमों में 80 दीपक प्रकटाकर गुरुदेव के स्वास्थ्य की मंगलकामना की गई। 'चालो भक्ति करीए रे..' पुस्तक का विमोचन श्री स्वस्तिक, रवीन्द्र जी, विजयजी एवं सुश्री सविता बहन द्वारा किया गया। 80 भाई-बहनों ने अनेक नियम लिए। कार्यक्रम का संचालन सुश्री सविता बहन व मनाली बहन ने किया। दूसरे दिन गुरुदेव की मंगलकामना हेतु श्री सुशीलकुमारजी कनकचंदजी परिवार द्वारा आयंबिल करवाये गए।

सूरत। श्री शासन प्रभावक पूज्य गुरुदेव का जन्मोत्सव सूरत में श्री.सौ.वृ.तपो.त्रिस्तुतिक जैन संघ, श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक, तरुण परिषद् सूरत द्वारा स्वास्थ्य दिवस के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर आयम्बिल तप के साथ नवकार महामंत्र की 11 माला की सामूहिक आराधना कर गुरुदेव के स्वस्थ जीवन की मंगलकामना की गई।

बड़नगर। युग प्रभावक, गच्छाधिपति, पूज्य गुरुदेव श्री के जन्मदिवस के अवसर पर प्रातः गुरुभक्तों द्वारा गोपाल गौशाला में गायों को आहार कराया गया। शासकीय चिकित्सालय में मरीजों को फल, बिस्किट वितरित किए गए। दोपहर में स्थानीय गीता भवन व अन्नपूर्णा मंदिर में दरिद्र नारायणों को भोजन कराया गया, पक्षियों को दाना डाला गया। सामूहिक सामायिक और नवकार महामंत्र का जाप किया गया। 80 दीपकों से सुसज्जित रंगोली बनाई गई। इसी क्रम में तरूण परिषद् द्वारा शासकीय कन्या छात्रावास में निम्न आयवर्ग की छात्राओं में मिठाई वितरित की गई एवं सिलाई मशीन भेंट की गई।

नीमच। राष्ट्रसंत के जन्मोत्सव पर गुरुभक्तों ने घरों के बाहर दीपक जलाये एवं श्री राजेन्द्र सूरि जैन ज्ञान मंदिर में गुरु गुणानुवाद किया। इस अवसर पर 80 दीपक प्रज्ज्वलित किए गए। दोपहर में सामायिक के आरम्भ में साध्वीजी द्वारा मांगलिक प्रदान की गई। खचाखच भरे हाल में श्री राजेन्द्र परिषद्, तरुण परिषद्, महिला परिषद् तथा श्रीसंघ के महानुभाव उपस्थित थे। श्री अशोकजी नान्देचा ने पू. आचार्यश्री के जीवन पर प्रकाश डाला तथा आचार्यश्री की महिमा का गुणगान किया। श्री अनिल पोरवाल एवं श्री गौरव बोकड़िया, श्रीमती आशा चौधरी, स्नेहलता पोरवाल, कुसुम मेहता ने गुरुदेव जन्मोत्सव पर गीत प्रस्तुत किए। श्री पारस पटवा ने गुरु की महिमा बताई। श्री किशोर कुलदीप मेहता द्वारा एक सौ आठ दीपक से गुरुदेव की आरती की गई। आभार श्री अशोकजी नांदेचा ने माना।

रतलाम। स्थानीय नीमवाला उपाश्रय में अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् द्वारा गुरुदेवश्री का जन्मोत्सव नवकार मंत्र के जाप, गुरु गुणानुवाद सभा के साथ मनाया गया। वक्ताओं ने आचार्यश्री के गुणों को जीवन में अंगीकार करने की प्रेरणा दी। परिषद् के राष्ट्रीय जनकल्याण मंत्री श्री सुशील छाजेड़, तरूण परिषद् अध्यक्ष श्री अभय बरबोटा,प्रो. श्री वी.के.जैन, परिषद् अध्यक्ष श्री पंकज राठौड़, श्री गेंदालाल सकलेचा, श्री सोहनलाल मूणत, श्री अभय सकलेचा, श्री चितरंजन लुणावत, श्री प्रवीण संघवी, श्रीमती कांता आंचलिया, श्रीमती मधुबाला गंग, श्री अभिषेक खाबिया आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। परिषद् परिवार ने पूज्य गुरुदेव के स्वस्थ व यशस्वी जीवन की मंगलकामना की। संचालन श्री राजेश खाबिया ने तथा आभार श्री प्रवीण संघवी ने माना।

राजगढ़। पूज्य गुरुदेवश्री के जन्मोत्सव अवसर पर परिषद् भवन पर गुरुपूजन किया गया। पश्चात् बस स्टेण्ड पर 80 किलो मिठाई का वितरण किया गया। शासकीय चिकित्सालय में मरीजों को फल एवं बिस्किट के पैकेट व मिठाई का वितरण परिषद् परिवार द्वारा किया गया। दोपहर में श्री राजेन्द्र भवन में श्री मांगीलाल नेमचंदजी मामा की ओर से राजेन्द्रसूरि अष्टप्रकारी पूजन पढ़ाया गया एवं महिला परिषद् की ओर से सामूहिक सामायिक एवं नवकार जाप का आयोजन किया गया। रात्रि में बालिका परिषद् द्वारा गुरुदेव की आरती उतारी गई और 80 दीपकों से सुसज्जित आकर्षक रंगोली बनाई गई। इस अवसर पर श्रीसंघ, परिषद् परिवार के सदस्य, श्री राजेन्द्र जैन पाठशाला के विद्यार्थी उपस्थित थे, जो रैली में कतारबद्ध होकर नगरभ्रमण करते हुए श्री राजेन्द्र भवन पहुँचे थे।

इस अवसर पर सामाजिक सेवाकार्यों में नवयुवक परिषद् द्वारा गरीब बच्चों को गर्म टोपियाँ वितरित की गईं। तरुण परिषद् द्वारा जीवदया के कार्य में मछलियों एवं चीटियों को दाना दिया गया। श्री दिलीप राजमलजी भण्डारी द्वारा धान्य से 80 स्वस्तिक की गहुली बनाकर पक्षियों को चुगने हेतु रखी गई। श्री जयन्तसेन म्यूजियम परिसर में ट्रस्ट मंडल द्वारा सकल श्रीसंघ का स्वामीवात्सल्य आयोजित किया गया।

खाचरौद। श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के तत्वाधान में परिषद् द्वारा संचालित श्री राज राजेन्द्र विद्या मंदिर हायर सेकण्डरी एवं श्री राज राजेन्द्र जयन्तसेन विद्यापीठ में पूज्य गुरुदेव का 80 वाँ जन्मोत्सव गरिमा एवं उत्साहपूर्ण वातावरण में मनाया गया। इस अवसर पर संस्था भवनों में सजावट की गई, रंगोली बनाई गई व दीपमालाएं प्रज्ज्वलित की गईं। विद्यार्थियों में मिठाई वितरित की गई। मुख्य समारोह शिक्षण समिति अध्यक्ष श्री ज्ञानचन्द मेहता की अध्यक्षता में आयोजित किया गया।

विद्यार्थियों ने सामूहिक नवकार मंत्र की आराधना के पश्चात् गुरुदेव के चित्र का पूजनकर नृत्य व गीत की प्रस्तुति कर प्रशंसा प्राप्त की। समिति के श्री धर्मचन्द नांदेचा व श्री चन्द्रप्रकाश चौरड़िया एडव्होकेट ने पूज्य गुरुदेव के जीवन एवं समाज व धर्म के लिए उनके द्वारा किए गए महती कार्यों से विद्यार्थियों को परिचित कराया। श्री अनिलजी वागरेचा, श्रीमती शैफाली ओझा (प्राचार्य विद्यापीठ), श्री जितेन्द्र जैन (प्राचार्य, विद्यामंदिर) ने भी गुणानुवाद सभा में भाग लिया। डायरेक्टर श्री श्यामसुन्दर भट्ट ने संस्थाओं में विद्यार्थियों को दी जा रही संस्कार प्रधान शिक्षा और उनके सुसंस्कृत एवं अनुशासित आचरण के लिए शिक्षकों का आभार प्रकट किया। समारोह में श्री अजय भण्डारी, श्री पंकज डूंगरवाल, विद्यालयों के शिक्षक एवं विद्यार्थीगण बड़ी संख्या में उपस्थित थे। सभी ने पूज्य गुरुदेव के दीर्घ एवं सक्रिय जीवन की शुभकामनाएं प्रकट कीं। इस अवसर पर भंडारी परिवार ने स्वर्गीय बालचन्दजी भंडारी की स्मृति में संस्था के मेरिट में स्थान बनाने वाले प्रत्येक विद्यार्थी को 80 ग्राम चांदी का सिक्का पुरस्कार स्वरूप प्रदान करने की घोषणा की।

मन्दसौर। श्री राजेन्द्र विलास के श्री जयन्तसेन आराधना हाल में श्रीसंघ, श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक, महिला, तरुण एवं बालक परिषद् के तत्वावधान में राष्ट्रसंत साहेब का जन्मोत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। सर्वप्रथम गुरुदेव के चित्र पर दीप प्रज्ज्वलन एवं माल्यार्पण त्रिस्तुतिक श्रीसंघ के राष्ट्रीय महामंत्री श्री सुरेन्द्र लोढ़ा, श्रीसंघ अध्यक्ष श्री गजेन्द्र हिंगड़, परिषद् के राष्ट्रीय मंत्री श्री राजेन्द्र सुराणा, राष्ट्रीय प्रचारमंत्री श्री सुधीर लोढ़ा, श्री मनोहर सोनगरा, श्री देवेन्द्र चपरोत, सकल जैन समाज के महामंत्री श्री हेमन्त हिंगड़ ने किया। प्रतीकात्मक 80 दीप जलाकर सुन्दर रंगोली सजाई गई।

सभी अतिथियों ने गुरुदेव के जीवन पर प्रकाश डाला और उनके दीर्घायु होने की कामना की। राष्ट्रीय महामंत्री श्री सुरेन्द्र लोढ़ा ने बताया कि गुरुदेव के प्रत्येक आदेश का पालन जैन समाज श्रद्धाभाव रखकर करता है। आचार्य श्री नमो आयरियाणं के पद पर तीर्थंकर पट्टाधिकारी माने जाते हैं। गुरुदेव ने अपनी 'जीवन कैसा हो ?' नामक पुस्तक में माता-पिता एवं दादा-दादी का सम्मान पूरी श्रद्धा से करने की प्रेरणा दी है। श्रीमती शिल्पा चपरोत, श्री राजेन्द्र सखलेचा, श्री

पारस लोढ़ा, श्री हस्तीमल चपरोत, श्री पारस चपरोत, श्री मनोहर सोनगरा, श्री वीरेन्द्र डोसी, श्री अभय जेतावत, श्री अपूर्व डोसी, श्रीमती शकुंतला सोनगरा ने भी अपने विचार व्यक्त किए। सभा का कुशल संचालन श्री अशोक खाबिया ने किया।

दोपहर में महिला मंडल द्वारा अष्टप्रकारी पूजा पढ़ाई गई। नवयुवक परिषद् के तत्वावधान में गरीब-असहायजनों को भोजन करवाया गया। महिला परिषद् द्वारा विकलांग छात्रावास में बच्चों को स्वल्पाहार कराया गया। तरुण परिषद् की ओर से मिष्ठान्न वितरण किया गया। श्री राजेन्द्र जयन्त जीवदया समिति द्वारा गौवंश को गुड़ की लापसी व हरी घास का आहार करवाया गया।

जावरा। युग प्रभावक गुरुदेव श्री का 80 वाँ जन्मोत्सव श्रीसंघ, अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् एवं परिषद् परिवार में संयुक्त रूप से मनाया गया। प्रातः 6 बजे पक्षियों को दाना खाचरोद नाका जीवदया सोसायटी द्वारा दिया गया। लाभार्थी डूंगरवाल परिवार रहा। प्रातः 7 बजे भक्ताम्बर का पाठ एवं नवकार मंत्र का जाप पीपली बाजार उपाश्रय में किया गया। पश्चात् गुणानुवाद सभा का आयोजन हुआ जिसमें श्रीसंघ के अध्यक्ष बाबुलाल तांतेड़, परिषद् के प्रदेश प्रवक्ता सुरेश चौरड़िया, महिला परिषद् की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्रीमती पारसमणि मारवाड़ी, परिषद् के परामर्शदाता डॉ. सुरेश मेहता, परिषद् अध्यक्ष यशवंत चौरड़िया ने गुरुदेव के जीवन पर प्रकाश डाला एवं उनके दीर्घायु, स्वस्थ जीवन की मंगल कामना की। गुरुदेव की सामूहिक आरती पश्चात् प्रभावना का वितरण महेन्द्रकुमार बाबुलालजी कोलन परिवार द्वारा किया गया।

प्रातः 11.30 बजे अन्नक्षेत्र में गरीबों को नवयुवक परिषद् द्वारा भोजन कराया गया। लाभार्थी सुजानमलजी प्रदीपकुमारजी दसेड़ा परिवार था। दोपहर 2 बजे जीवदया सोसायटी में नवयुवक एवं बहु परिषद् द्वारा गायों को चारा, गुड़ एवं रोटी खिलाई गई। लाभार्थी दिलीपकुमार वैभवकुमारजी डुंगरवाल परिवार था। दोपहर 3 बजे सिविल एवं महिला हॉस्पिटल में मरीजों को फल एवं बिस्कुट वितरण का कार्य महिला एवं नवयुवक परिषद् द्वारा कर मरीजों के अच्छे स्वास्थ्य की कामना की गई। रात्रि 8 बजे महावीर सेवालय में तरुण परिषद् द्वारा मरीजों को निःशुल्क दवाई वितरित की गई।

सभी कार्यक्रमों में सर्वश्री बाबुलाल तांतेड़, राधेश्याम सुराना, अशोक बोरदिया, अशोक नवलक्खा, महेन्द्र कोलन, प्रकाश मोदी, जितेन्द्र मेहता, मांगीलाल चत्तर, प्रवीण कोलन, प्रकाश कांठेड़, मनोज रूनवाल, नगीन सकलेचा, अनिल दसेड़ा, सचिन चत्तर, सुनील तांतेड़, श्रीपाल चपड़ोद, निलेश दसेड़ा, तेजमल मेहता, संजय धारीवाल, पारस सकलेचा, यशवंत चौरड़िया, श्रीमती पारसमणि मारवाड़ी, श्रीमती पारस संघवी, श्रीमती नीलम कर्नावट, श्रीमती अंगूरबाला मूणत के साथ बड़ी संख्या में श्रीसंघ एवं परिषद् परिवार के सदस्य उपस्थित थे। उक्त जानकारी परिषद् अध्यक्ष श्री यशवंत चौरड़िया ने दी।

मेघनगर। तरुण परिषद् के प्रचारमंत्री श्री तनु भंडारी ने जानकारी में बताया कि गुरुदेव के जन्मोत्सव पर प्रातः शुभ बेला में फेरी के रूप में पूरे नगर में ढोल और थाली बजाकर हर्ष सूचना अध्यक्ष श्री दिविक कावड़िया और केन्द्रीय प्रतिनिधि श्री महावीर भंडारी द्वारा दी गई। पश्चात् ज्ञान मंदिर में भक्तामर, गुरु गुणानुवाद, पूजन के कार्यक्रम सम्पन्न हुए। सेवाकार्यों में तरुण परिषद् द्वारा मूक एवं श्रुति बधिर विद्यालय में 80 मूक एवं श्रुति बाधित बच्चों को गर्म टोपी, स्टेशनरी, फल एवं बिस्किट वितरित किए गए। शास. स्वास्थ्य केन्द्र में मरीजों को भी फल, बिस्किट का वितरण किया गया। डॉ.श्री अमित मेहता के क्लिनिक पर पूरे दिन मरीजों का उपचार निःशुल्क किया गया। उल्लेखनीय है कि नगर में प्रतिदिन गरीबों एवं भिक्षुओं को भोजन करवाया जाता है। दोपहर में गुरुदेव की पूजन श्री सुभाषचन्द्रजी लोढ़ा परिवार द्वारा पढ़ाई गई। शाम को संघ का स्वामीवात्सल्य का आयोजन भी किया गया जिसका लाभ श्री शांतिलालजी राकेशजी आदिश जी लोढ़ा परिवार ने लिया।

टांडा। पूज्य गुरुदेव के जन्मोत्सव पर टांडा में एक चल समारोह मुख्य मार्गों से गुरुदेव के जयकारों के साथ निकाला गया। जिनमंदिर पहुंचकर चल समारोह गुरु गुणानुवाद सभा में परिवर्तित हुआ, जहाँ राष्ट्रसंत म.सा. की सामूहिक वंदना की गई। उपस्थित गुरुभक्तों ने गुरु महिमा का वर्णन किया एवं अपने-अपने संस्मरण सुनाए। संचालन श्री निर्मल जैन ने किया।

श्री संघ सौरभ

ज्ञान पंचमी पर्व उत्साह से मना

पारा। ज्ञान पंचमी पर्व को बड़े ही हर्षोल्लास से धार्मिक आयोजनों के साथ मनाया गया। पर्व के दिन सुबह भक्तामर के साथ हर घर से सभी तरह के धान, फल, नैवेद्य, घी, ज्ञान के उपकरण, ज्ञान की अष्टप्रकारी पूजन के साथ प्रक्षाल, वासक्षेप पूजन, चंदन पूजन के बाद आरती उतारी गई। प्रातः 10 बजे देववंदन हुआ एवं 30 लोगों ने उपवास एवं एकासना की तपश्चर्या की। यह जानकारी परिषद् महामंत्री सुशील छाजेड़ ने दी।

स्वाध्यायियों को भेंट मिलेगी

थाने। स्वाध्याय में रूचि रखने वाले महानुभावों को श्री जे.के.संघवी द्वारा संकलित-संपादित नवीन कृति 'अवधू आतम ज्ञान में रहना' पुस्तक भेंट की जाएगी। भावार्थ सहित 133 अध्यात्मपदों का यह अनुपम संकलन है। पुस्तक के नाम के साथ अपने पते का एसएमएस मो.नं. 09892007268 पर या पोस्ट कार्ड लिखने पर भेंट भेजी जाएगी। पता-जे.के.संघवी, कल्पतरू प्रकाशन, 305, स्टेशन रोड़,संघवी भवन, शंकर मंदिर के सामने, थाने(वेस्ट) 400601 (महा.)।

चातुर्मासिक बहुमान समारोह सम्पन्न

रतलाम। सामायिक व जाप के फल अनंतानंत हैं। साधु भगवन्तों के सतत् मार्गदर्शन के बिना पूरे चातुर्मास में इतनी आराधना हो तो वह अनुकरणीय है। 504 पौषध, 2709 सामायिक, 3114 प्रतिक्रमण की तपस्या का लाभ करना, करन्ता और अनुमोदना सभी के लिए लाभकारी है। आराधना मानव जीवन में ही संभव है और आराधना का यह क्रम टूटना नहीं चाहिए। 51 लाख जाप पुण्य का उदय और शुभ्रता के प्रतीक हैं।

साध्वीश्री डॉ. प्रीतिदर्शनाश्रीजी म.सा. ने नीमवाला उपाश्रय पर गरिमामय तपस्वी बहुमान समारोह में प्रवचन के दौरान अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि समाज की एकता में जो बल होता है, उसमें जरा सी भी दरार समाज को कमजोर कर देती है। युवा शक्ति का सदुपयोग और बड़ों का मार्गदर्शन ही समाज को ऊँचाई पर ले जा सकता है। धर्माचरण का जीवन जी कर सभी आत्मकल्याण के मार्ग पर चलते रहें। जैन

समाज के वयोवृद्ध समाजसेवी कालूरामजी पारख, नथमलजी पितलिया व श्रीसंघ अध्यक्ष डॉ. ओ.सी. जैन ने तपस्वियों की अनुमोदना करते हुए कहा कि धर्म के मार्ग पर निरंतर चलते रहने के लिए शुभता के भाव जरूरी हैं। इतनी तपस्याएं अनुमोदनीय हैं। इस अवसर पर श्री झमकलालजी रितेषकुमारजी औरा, श्रीमती निर्मलाजी, डॉ. ओ.सी. जैन, श्री सुरेशचन्द्रजी हस्तीमलजी बरमेचा, श्री अनोखीलालजी अंकितकुमारजी भटेवरा, श्री लोकेशकुमारजी पारसमलजी ओस्तवाल, श्रीमती शांतादेवी निर्मलजी कटारिया, श्री महावीरकुमारजी रखबचन्दजी पोरवाड़, श्री सौभाग्यमलजी सोहनबाई डांगी, श्री प्रदीपकुमारजी रोशनलालजी पुंजावत, श्री जुहारमलजी सम्पतदेवी बोराना, श्री धनसुखजी मोहितकुमारजी भंडारी द्वारा 13 तपस्वियों का बहुमान किया गया।

उपाश्रय में श्री सुजानमल सोनी, श्री सोहनलालजी मूणत, दाखाबाई पारख की कई वर्षों से अनवरत पौषध, प्रतिक्रमण व नवकार आराधना करने की विशेष अनुमोदना की गई। साध्वीश्रीजी को श्रीसंघ की ओर से वरिष्ठतम श्राविका दाखाबाई पारख, सोहनजी अम्बोर, महिला परिषद् की राष्ट्रीय संगठन सचिव सरोज कांसवा, महोत्सव प्रभारी ममता धनसुख भंडारी ने कामली ओढ़ाई। श्री पारख, श्री पितलिया, जैन श्वेताम्बर सोशल ग्रुप अध्यक्ष प्रदीप डांगी का बहुमान डॉ. ओ.सी.जैन, ट्रस्टी श्रेणिक घोचा, महोत्सव सह संयोजक द्वय सुरेश बोराना व अनोखीलाल भटेवरा ने किया। इसके पूर्व प्रातः 8.30 बजे साध्वीश्री डॉ. प्रीतिदर्शनाश्रीजी, रुचिदर्शनाश्रीजी, तृप्तिदर्शनाश्रीजी म.सा. ने उपाश्रय पधारकर बहुमान समारोह में निश्रा प्रदान की। इस अवसर पर श्रीसंघ के श्रावक-श्राविकाएं उपस्थित थे। संचालन महोत्सव संयोजक पारसमल खेड़ावाला ने किया। गुरुमंदिर की दूसरी वर्षगांठ मनी

ध्वजारोहण सम्पन्न

नीमच। श्री शांतिनाथ जैन मंदिर की वर्षगांठ अवसर पर श्री राजमल, राजेन्द्र डूंगरवाल परिवार की ओर से ध्वजारोहण कार्यक्रम साध्वी श्री विनयरत्नाश्रीजी आदि ठाणा की पावन निश्रा में सम्पन्न हुआ। श्री विजय देवीलाल सगरावत द्वारा संघ पूजा की गई। पश्चात् डूंगरवाल परिवार की श्रीमती शर्मिला डूंगरवाल नवीन ध्वजा को सिर पर रख, नगरभ्रमण कर जैन मंदिर पहुँचे, जहाँ विधि विधान से मंदिर शिखर पर ध्वजा फहराई गई। श्री राजेन्द्र महिला परिषद् द्वारा सत्तर भेदी पूजन पढ़ाई गई। साध्वीजी द्वारा ध्वजा के महत्व पर प्रकाश डाला गया। इस अवसर पर त्रिस्तुतिक श्रीसंघ अध्यक्ष श्री अजय चौधरी, सचिव श्री विजय बोकड़िया, श्री माणक नागौरी आदि पदाधिकारी तथा श्रीसंघ के सभी सदस्यगण उपस्थित थे।

बदनावर। साध्वीश्री प्रियदर्शनाश्रीजी म.सा. की निश्रा में श्री वासुपूज्य स्वामी राजेन्द्रसूरि गुरुमन्दिर की द्वितीय वर्षगांठ धूमधाम से मनाई गई। लाभार्थी परिवार श्री महावीर कुमार चौरड़िया के निवास से 30 नवम्बर को प्रातः ध्वजा का चल समारोह निकाला गया। मंदिर पहुंचकर विधिकारक श्री राजेशजी वनवट इन्दौर एवं मन मधुकर ग्रुप नागदा जं. द्वारा संगीतमय सत्तरभेदी पूजा पढ़ाई गई। इसके पश्चात् लाभार्थी परिवार द्वारा ध्वजा चढ़ाई गई। मूर्तिपूजक संघ की नवकारसी का आयोजन किया गया।

कुक्षी। कुक्षी में चातुर्मास के दौरान प्रत्येक वदी दशमी को सामूहिक रूप से एकासणे व आयंबिल किये जाते हैं । पर्युषण पर्व में धार्मिक खेल एवं श्री पुराणिकजी द्वारा प्रवचन, पाठशाला के बच्चों को पुरस्कार, संघ व समाज को समर्पित सुश्री सविता दीदी का बहुमान संघ एवं परिषद् परिवार द्वारा किया गया। दीपावली पर्व पर बच्चों द्वारा पटाखों का परित्याग किया गया। पेपराल के वार्षिक सम्मेलन में राष्ट्रीय व प्रांतीय महिला परिषद् द्वारा 'जयंतसेन गीतांजली' पुस्तक का विमोचन किया गया। महिला परिषद् से सुश्री सविता बहन को जे.के. संघवी पुरस्कार से सम्मानित किया गया जिससे कुक्षी श्रीसंघ गौरवान्वित हुआ।

परिषद प्रांगण से

पेपराल। नवयुवक परिषद् के वार्षिक सम्मेलन में विभिन्न परिषदों को श्रेष्ठता के पुरस्कार प्रदान किए गए। जो इस प्रकार हैं:-

* सर्वश्रेष्ठता पुरस्कार	–	डीसा शाखा
* श्रेष्ठ प्रथम पुरस्कार	–	सूरत शाखा
* श्रेष्ठ द्वितीय पुरस्कार	–	राजगढ़ शाखा
* श्रेष्ठ तृतीय पुरस्कार	–	मुंबई प्रार्थना समाज शाखा
* चिकित्सा क्षेत्र में	–	आलिराजपुर शाखा
* सेवा क्षेत्र पुरस्कार	–	विजयवाड़ा शाखा
* रचनात्मक कार्य पुरस्कार	–	जावरा शाखा
* श्री यतीन्द्र जयंत ज्ञानपीठ पुरस्कार	–	भायन्दर शाखा
* शाश्वत् धर्म प्रचार प्रसार	–	विपुलजी डोसी, सूरत
* केन्द्रीय कार्यालय से सम्पर्क पुरस्कार	–	हुबली शाखा
* शाखा कार्यों के लिए पुरस्कार	–	मंदसौर शाखा
* व्यक्तिगत लेखन पुरस्कार	–	दिनेशजी मामा राजगढ़
* वैयावच्च के क्षेत्र में पुरस्कार	–	पारा शाखा
* अहिंसा पुरस्कार	–	अहमदाबाद शाखा
* जीवदया पुरस्कार	–	खाचरौद शाखा
* पर्यावरण पुरस्कार	–	निम्बाहेड़ा पुरस्कार
* सर्वाधिक उपस्थिति पुरस्कार	–	डीसा शाखा

महिला परिषद् पुरस्कार

* प्रथम पुरस्कार	–	निम्बाहेड़ा शाखा
* द्वितीय पुरस्कार	–	डीसा शाखा
* तृतीय पुरस्कार	–	पिपलौदा शाखा
* सामायिक पुरस्कार	–	झाबुआ शाखा
* शिक्षा क्षेत्र पुरस्कार	–	कुक्षी शाखा
* सर्वाधिक उपस्थिति पुरस्कार		थराद शाखा

श्री पारसजी जैन को परिषद् रत्न सम्मान

उज्जैन। स्थानीय नमक मंडी उज्जैन शाखा द्वारा म.प्र. शिक्षामंत्री एवं परिषद् के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री पारसजी जैन को 'परिषद् रत्न' सम्मान प्रदान किया गया। यह सम्मान सात्विक जीवन शैली और समाज एवं परिषद् में विशेष योगदान देने हेतु प्रदान किया गया है। इस अवसर पर श्रीसंघ अध्यक्ष श्री राजबहादुर मेहता, श्री मदनलाल रूनवाल, परिषद् अध्यक्ष श्री अभिषेक सेठिया, श्री नितेश नाहटा, श्री रितेश खाबिया, श्री दीपक डागरिया, डॉ. श्री संजीव जैन, श्री वीरेन्द्र गोलेचा एवं श्री मनोज पगारिया ने मंत्रीजी का अभिनंदन किया।

तरुण परिषद् की राष्ट्रीय कार्यकारिणी घोषित

गुजरात स्थित गुरु जन्मभूमि पेपराल तीर्थ पर अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन तरुण परिषद् के वार्षिक सम्मेलन में राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरिश्वरजी म.सा. द्वारा परिषद् की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की घोषणा की गई। इसमें अध्यक्ष श्री अभय बरबोटा रतलाम, महामंत्री श्री अर्पित खाबिया बड़नगर, उपाध्यक्ष श्री भाविक महाजनी अहमदाबाद, श्री करण मोरखिया सूरत, श्री किरण वाणीगोता बीजापुर, मंत्री श्री राजेन्द्र पटवा उज्जैन, सहमंत्री श्री पीयूष संघवी झाबुआ, कोषाध्यक्ष श्री हर्ष बाफना राजगढ़, संगठन मंत्री श्री विशाल गोखरू निम्बाहेड़ा, शिक्षामंत्री श्री साकेत गिरिया बड़नगर, प्रचारमंत्री श्री पवन कटारिया जावरा को जिम्मेदारी सौंपी गई है।

नवीन कार्यकारिणी गठित

नागदा।तरुण परिषद् के केन्द्रीय महामंत्री श्री अर्पित खाबिया के नागदा शाखा के दौरे के दौरान श्री शान्तिनाथ जिनालय में बैठक सम्पन्न हुई। इसमें परिषद् के राष्ट्रीय प्रचारक श्री ब्रजेश बोहरा व स्थानीय नवयुवक परिषद् के अध्यक्ष श्री विनयजी के मार्गदर्शन में नवीन कार्यकारिणी का गठन किया गया।

नवीन कार्यकारिणी में अध्यक्ष श्री आयुष बोहरा, सचिव श्री यश नागदा, उपाध्यक्ष श्री विरल, श्री ऋषभ वागरेचा, कोषाध्यक्ष श्री आलोक ओरा, संगठन मंत्री श्री अनिकेत नाहटा, सांस्कृतिक मंत्री श्री ऋषभ बोहरा, मीडिया प्रभारी श्री निक्षित नांदेचा को चुना गया।

जैन विश्व

संतों के चरणों में नतमस्तक होने से नई ऊर्जा का संचार होता है– श्रीमती राजे

अजमेर। राजस्थान की मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे अजमेर में संतश्री पुलकसागरजी म.सा. का आशीर्वाद लेने पहुंची और मुनिश्री को श्रीफल अर्पित किए। दोनों के मध्य लगभग आधे घंटे विचार–विमर्श हुआ।

मुख्यमंत्री ने हाथ जोड़कर निवेदन किया कि महाराज जी जब भी मेरे जीवन में कोई उतार आया, मैं संतों के चरणों में चली जाती हूँ, संतों ने ही मुझे पुनः उबारा है। मुनिश्री के चरणों में नतमस्तक होने से एक नई ऊर्जा का संचार होता है। उनकी कृपा सदा ही मुझ पर एवं पूरे राज्य पर बनी रहे। श्रीमती राजे ने कहा कि सीकर प्रवास के दौरान आपने कहा था कि 'सीकर से शिखर तक पहुँचाऊंगा ' और मैं पहुँची। मुझे आप ऐसा ही आशीर्वाद दीजिए।

चर्चा के दौरान मुनिश्री ने फरमाया कि हम जैन संतों का जीवन ही 'जल संरक्षण' का संदेश देता है, क्योंकि हम जैन संत केवल एक कमंडल जल से पूरे दिन की क्रियाएं कर लेते हैं। हम संत पानी का उपयोग बहुत कम मात्रा में करते हैं।

बैंकाक (थाईलैंड)। यहाँ साध्वीश्री चारित्र्यप्रज्ञाजी की प्रेरणा से जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा को अधिकारिक रूप से जेटीएसटी नाम से रजिस्टर किया गया है।

अनुकरणीय पहल

* हैदराबाद। इस वर्ष सातवें दीपावली स्नेह मिलन के आयोजन में श्री सिवांची जैन संघ ग्रेटर हैदराबाद में खान–पान व्यवस्था (अल्पाहार) में सीमित 11 आयटम, मध्यान्ह भोजन में 15 आयटम एवं सायंकाल भोजन में 11 आयटम रख संस्था द्वारा भोजन करवाया गया। सभी समाजों के लिए यह अनुकरणीय पहल है। उपस्थित सभी जन इस व्यवस्था से पूर्ण संतुष्ट एवं प्रसन्न थे।

* कालधड़। अजैन ग्राम कालधड़ में श्री विनयमुनिजी म.सा. एवं श्री मधुरमुनिजी म.सा. के सान्निध्य में ऐतिहासिक चातुर्मास सम्पन्न हुआ। चातुर्मास अन्तर्गत जैनेत्तर धर्मावलंबियों ने भी उपवास– तपस्याओं में बढ़ चढ़कर भाग लिया। समकित महोत्सव का आयोजन भी हुआ।

* इन्दौर। श्री ज्ञानमती श्री माताजी एवं चन्दनामती श्री माताजी की सान्निध्यता

में जैन तीर्थ निर्देशिका की 75 हजार वीं प्रति का लोकार्पण शरद पूर्णिमा को किया गया।

* गूंटूर। श्री सिवांची जैन संगठन समस्त आंध्रप्रदेश का वार्षिक स्नेह मिलन समारोह कुलपाकजी तीर्थ में आयोजित हुआ जिसमें सिवांची क्षेत्र के सदस्यों एवं अतिथियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

* चैन्नई। सकल श्री जैन संघ, चैन्नई के तत्वावधान में श्री जैन दादावाड़ी अयनावरम पर दि.12 नवंबर को आचार्यश्री नवरत्नसागर सूरिश्वरजी म.सा. द्वारा नूतनवर्ष की बड़ी महामांगलिक प्रदान की गई।

* बैंगलौर। आचार्य श्रीमद् विजय जिनोत्तमसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में दि. 23 नवंबर से 1 दिसम्बर तक प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव हर्षोल्लास से सम्पन्न हुआ।

* नगपुरा। शिवनाथ, तटीय, नगपुरा के तीर्थोद्धार की अर्द्ध शताब्दी वर्ष पर 'नगपुर महोत्सव' का आयोजन दि. 4 जनवरी 2016 को किया जाएगा। इसमें श्री पूर्णचन्द्रसूरिजी म.सा. आदि ठाणा 6 तथा साध्वी प्रियदर्शनाश्रीजी आदि ठाणा 5 सान्निध्यता प्रदान करेंगे।

* उदयपुर। जैनीजम फिलेटेली ग्रुप का अखिल भारतीय द्वितीय वार्षिक अधिवेशन 11 एवं 12 दिसम्बर 2015 को उदयपुर में सम्पन्न हुआ, जिसमें कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए।

* खार। साध्वी वैभवश्री जी 'आत्मा' ठाणा 4 का ऐतिहासिक चातुर्मास खार स्थित अहिंसा हाल में पंजाब जैन भातृ सभा के सौभाग्य में सम्पन्न हुआ। इसमें नित्य प्रवचन, स्वाध्याय कक्षा एवं अनेकों शिविर एवं सेमिनार का आयोजन किया गया।

नमस्कार से मिटे अहंकार का अंधकार

शाजापुर। नगर में प्रथम बार चतुर्विध श्रीसंघ की निश्रा एवं सकल जैन समाज के तत्वावधान में श्री गौतम स्वामी केवलज्ञान पर्वोत्सव (नववर्ष) के प्रसंग पर प्रातःकाल

मंगलवेला में श्री वीर निर्माण एवं गौतम स्वामी केवलज्ञान मोदक चढ़ाने के पश्चात् जैन उपाश्रय में मुनिश्री संयमरत्न विजयजी ने गौतम रास को सुन्दर स्वरों में गाकर रास में निहित रहस्य एवं भावों को समझाया।

मुनिश्री ने कहा कि जहां अंधकार है, वहां तर्क है और जहाँ तर्क हैं वहाँ नर्क हैं। नमस्कार में इतनी ताकत है कि वह अहंकार के अंधकार को नष्ट कर देता है। मान, ज्ञान प्राप्ति में रुकावट है और मोह-मोक्ष प्राप्ति में रुकावट है। चाहे गौतम स्वामी हों या बाहुबली, चाहे चंदनबाला हों या मृगावती, सभी ने विनय गुण के कारण ही केवलज्ञान और मोक्ष को प्राप्त किया।

मुनिश्री के प्रवचन पश्चात् आचार्य श्री आनंदऋषिजी के शिष्य अक्षयऋषिजी ने उत्तराध्ययन सूत्र का मूल वाचन किया एवं उसके महत्व को बताया। तदन्तर मुनिश्री संयमरत्न विजयजी द्वारा रचित 'कालिदास के नाम पर प्रचलित लोकोक्तियाँ' नामक पुस्तक का विमोचन डॉ.सागरमलजी जैन एवं सकल जैन समाज के अध्यक्षों के कर कमलों से सम्पन्न हुआ। विमोचन के पश्चात् 'क्षमापना अपना बनाती' ओपन बुक एक्जाम के परिणाम घोषित किए गए। उक्त जानकारी सकल जैन समाज के शाजापुर अध्यक्ष श्री सपन भंसाली ने दी।

ऐतिहासिक चातुर्मास सम्पन्न

राजगढ़। गुरुदेव की अंतिम साधना स्थली पर विगत 6 वर्षों से चातुर्मास का सूखा था। धर्मक्रियाएं होती थीं किन्तु तपरूपी गंगा का अभाव था। अतः श्रीसंघ की विनंती पर गुरुदेव ने यहां साध्वी श्री काव्यरत्नाश्रीजी आदि ठाणा 3 के रूप में ज्ञानरूपी गंगोत्री प्रदान की थी। साध्वीजी ने चातुर्मास में ज्ञान आलोक की धारा बहा चातुर्मास को ऐतिहासिक कर दिया। चातुर्मास के दौरान प्रभु कल्याणक सामायिक मंडल का गठन हुआ। गुरुदेव की पुण्य स्थली पर हस्तलिखित श्री अभिधान राजेन्द्र कोष की स्थापना गुरुपाट पर की गई। गुरुदेव की ऐसी ही कृपा श्रीसंघ एवं समाज पर निरंतर बनी रहे, यही कामना है।

जयंतसेन-अमृतवाणी

वट वृक्ष केवल ग्रीष्म का संताप मिटाता है, किन्तु नमस्कार महामंत्र जन्म-जन्म के भ्रमण का सन्ताप मिटाता है । सरोवर एक समय की प्यास थोड़े समय के लिए बुझाता है, परन्तु महामंत्र जिज्ञासा की अनादिकालीन प्यास अनन्त समय के लिए बुझाता । थकावट मिटाने वाला विश्रान्ति-भवन अमुक समय बाद छोड़ना पड़ता है, परन्तु महामंत्र आत्मरमण रूपी ऐसे विश्रान्ति भवन में पहुँचाता है, जहां से कभी लौटना नहीं पड़ता ।

शाश्वत धर्म के संरक्षक

- शा. ओटमल वेलाजी कांकरिया-सुरा निवासी।
- शा. ताराचंद फुटरमल फौजमल, भानाजी वेदमुथा-आहोर निवासी।
- कटारिया संघवी भवरलाल, उगमचंद, वीरेन्द्र कुमार, राजेन्द्रकुमार, आशीष, गौरव पुत्र पौत्र-तोलाजी, धाणसा निवासी (फर्म-मेन्स एवेन्यु-बाई मिलन, बैंगलौर)
- शा. तिलोकचंद, नरसिंगमल, पुखराज, परखचंद, सांवलचंद, पुत्र, पौत्र प्रतापचंदजी सूरत निवासी।
- संघवी मिश्रीमल, हस्तीमल, समरथमल, हीरालाल, शांतिलाल, दिलीपकुमार जैन, पुत्र-पौत्र कन्नाजी कटारिया-जाखल नि.
- नैनावा श्री जैन श्वेताम्बर सकल संघ, गुरूभक्तगण-नैनावा।
- श्री समकितगच्छीय जैन श्वे. संघ-धानेरा।
- स्व. मायाचंद धुलाजी की स्मृति में धर्मपत्नी धापुबाई, सुपुत्र कुशलराज, भ्राता निहालचंद एवं श्रीमती जड़ावबेन कातरेला बोहरा-आहोर निवासी।
- मेहता तेजराज, जयन्तीलाल, राजेन्द्रकुमार, अरविंदकुमार, पुत्र पौत्र रायचंदजी जसराजजी भूती निवासी।
- मोरखिया चंदुलाल, बाबूलाल, रसिकलाल, महेशकुमार, परेशकुमार अल्पेशकुमार, रूपेश कुमार, पुत्र-पौत्र स्व. मौरखिया नानचंद मूलचंद थाई-थराद निवासी।
- स्व. मुणोत रिखबचंदजी की स्मृति में धर्मपत्नी ढेलीबाई सुपुत्र बाबूलाल, सुमेरमल, अशोक कुमार, रमणिया निवासी।
- स्व. रामाणी शेषमलजी की स्मृति में मांगीलाल, फुटरमल, शांतिलाल, किशोरकुमार पुत्र-पौत्र खुशालजी रामाणी, गुडा बालोवान (फर्म-सूर्यलोक ज्वेलर्स, नैल्लोर)
- श्री राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, चैन्नई।
- शा. मोहनलाल, पारसमल, सुरेश कुमार, किशोर कुमार, कमलेश कुमार, अरविन्द कुमार पुत्र, पौत्र साकलचंद जेरूपजी भैंसवाडा नि.फर्म-गोल्डन ज्वेलर्स, नेल्लोर।
- स्व. सुगीबाई धर्मपत्नी अचलजी की स्मृति में पुत्र-कांतिलाल, प्रपोत्र-रमेशकुमार बागरा निवासी।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ चौराऊ।
- श्री श्वेताम्बर जैन संघ, सियाणा।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ, थराद।
- दोशी सोमतमल, गुमानमल, सुखराज सांवलजी हस्ते-गुमानमल सांवलजी चेरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई।
- सुशीला बहन की स्मृति में भीमराज, हिमांश कुमार, श्रेणिक कुमार पुत्र पौत्र बेचरदासजी छाजेड़, नैनावा निवासी हाल मु.सांचोर, राज.
- श्री गोडी पार्श्वनाथ जैन देरासर पेढ़ी, सोनारी, सेरी थराद, प्रतिष्ठा प्रसंगे गुरूभक्तों द्वारा।
- स्व. जेठमलजी खुमाजी की स्मृति में, चंदनमल, कैलाशचंद हंसराज, शीतलकुमार, अश्विन कुमार परिवार, बागरा निवासी (राजस्थान फायनेन्स कॉरपोरेशन काकीनाडा)
- श्री विमलनाथ जैन दोशी दहेरासर, थराद।
- श्री सौधर्म बृहत्तपागच्छ जैन संघ, आनन्द (गुजरात)
- श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक श्री संघ थलवाड (राजस्थान)
- श्री सौधर्म बृहत्तपोगच्छीय जैन संघ जावरा (म.प.)
- श्री सौधर्म बृहत्पोगच्छीय जैन संघ वासणा (गुजरात)
- श्री महाविदेह तीर्थधाम नवागाम, सूरत (गुजरात)
- आहोर निवासी संघवी जुगराज, कांतिलाल, महेन्द्र, सुरेन्द्र, दिलीप, धीरज, संदीप, राज, जैनम पुत्र पौत्र शा. कुन्दनलालजी भुताजी श्रीमाल वर्धमान गोत्रिय परिवार-थाणे (महा.)
- श्री जैन श्वेताम्बर संघ-सामलकोट।
- श्री जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, सूर्यरावपेटा-काकीनाडा (आन्ध्र प्रदेश)
- श्री सिमंधर राजेन्द्र जैन श्वे. मंदिर, मामुलपेट, बेंगलोर।
- श्री मुनिसुव्रत - राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर मंदिर, (एवेन्यु रोड बैंगलोर)

- श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- शा. अनराजजी छोगालालजी बुरड, सांचोरा वाला,फर्म-सोनू स्टील, सिकन्दराबाद, आ.प्र.
- शा. उत्तम, रमेश, हरीश, खुशालचंदजी, गेबाजी डामराणी, मैंगलवा वाला, फर्म पाक्षाल पावर किंग इलेक्ट्रीकल, हैदाराबाद (आ.प्र.)
- श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरिजी जैन ट्रस्ट, गुंटूर
- कोशिलाव निवासी शा. भूनतमलजी, मगराजजी ललवाणी फर्म-पारस एजेन्सीज, हैदराबाद
- बागरा निवासी शा. शेषमलजी, गुलाबचंदजी फर्म जैन एण्ड कं., एलुर
- शा.अम्बालाल, दलीचन्द, बाबूलाल, शांतिलाल, प्रकाशचंद, नैनमल, उत्तमचंद, रमेशकुमार पुत्र पौत्र चमनाजी बुगामवाला-सुरापुर (कर्नाटका)
- शा. शांतिलालजी देवीचंदजी भंडारी, फर्म-स्वस्तिक ट्रेडिंग कं., हैदराबाद (आ.प्र.)
- स्व. कबदी हेमराजजी पूनमचंदजी की स्मृति में पुत्र नरेन्द्रकुमार दिलीपकुमार, पौत्र विनोद, अमीत, जसवंत, लोकेश और हरेश सायला निवासी, फर्म प्लायवुड सेन्टर, विजयवाड़ा
- मातुश्री सजनबाई स्व. श्री राजमलजी वीरचंदजी सेक्रेटरी पुत्र-पौत्र-प्रपौत्र शाह दिलीपकुमार, सचिनकुमार, सर्वेषकुमार, हार्दिक कुमार, रोशनकुमार, समस्त सेक्रेटरी परिवार कुक्षी (म.प्र.) फर्म- पक्षाल प्रोडक्ट, मूनलाईट रिचार्जेबल टॉर्च के निर्माता।
- जैन संघ - लाखणी
- भीनमाल निवासी श्री शोभालालजी भागचंदजी धोकड़ के पुत्र राजेन्द्रकुमार, पौत्र विक्रम, अभिषेक, परेश द्वारा,फर्म गौतम वस्त्र भंडार, गणेश चौक, भीनमाल जालोर (राज.)
- धाणसा निवासी संघवी स्व. सुखराजजी पिताजी की स्मृति में धर्मपत्नि-शांतिदेवी, पुत्र-सुमेरमल, अशोककुमार श्रीपाल, संजय, आकाश, अमृत
- कटारिया परिवार,फर्म शा. सुखराज पिताजी, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- सौधर्मवृहद तपोगच्छीय जैन श्वे. त्रि. श्री जैन संघ दाधाल
- आहोर निवासी संघवी मोहनलाल, तेजराज, प्रवीणकुमार, यतीन्द्र, राजेन्द्र, आशीष पुत्र-पौत्र वक्तावरमलजी हीराचन्दजी कुहाड़ परिवार आहोर नि. फर्म-राजेन्द्र पेपर्स, बैंगलौर
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. दरजमलजी, स्व. उकचन्दजी, स्व. हस्तीमलजी, स्व. तगराजजी की स्मृति में : हिराणी परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. शा. भारतमलजी भगाजी एवं धर्मपत्नी पातीबाई, पुत्र-मांगीलाल, गणपतराज, रमेशकुमार, कैलाशकुमार एवं समस्त संघवी वेदमुथा परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी संघवी पारसमल, नेमीचन्द, जितेन्द्र, संजय, रितेश, वेदमुथा परिवार
- थराद निवासी थरू फूलचंद, पानाचंद परिवार द्वारा आचार्यश्री जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. के चातुर्मास निमित्त
- स्व. मुनिराज श्री हरिशचंद्रविजयजी म.सा. की पुण्य स्मृति में आहोर नि.मुकेशकुमार गौतम गुलेच्छा, पुत्र पौत्र मोहनलालजी हिम्मतलालजी फर्म-अरविन्द टेक्सटाईल, राजमुद्री
- रेवतड़ा निवासी संघवी सोकलचंद, कानराज, अशोककुमार, अरविन्दकुमार, चन्द्रकान्त, अखिलकुमार पुत्र-पौत्र शा. इन्द्रमलजी भगाजी परिवार

  फर्मःशा. इन्द्रमलजी सुखराजजी, बैंगलोर
- उज्जैन निवासी शा. श्री चांदमलजी, नवीनकुमार, मुकेशकुमार, अंकितकुमार पुत्र-पौत्र श्री सेवारामजी बाफणा परिवार
- यतीन्द्र भवन जैन धर्मशाला-पालिताणा
- स्व. मातुश्री अमीयाबाई एवं स्व. भाई ओटमलजी की स्मृति में पुत्रवधु प्रसन्नदेवी पुत्र हेमराज पौत्र रोहित, मितेश चत्तरगोत्रा हस्तीमलजी धनाजी परिवार चौराऊ निवासी फर्म-पद्मावती मार्केटिंग-बेंगलौर (कर्नाटक)
- श्री सौधर्म वृहद तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ, सूरत

कीर्ति स्तंभ के साथ ही मोहनखेड़ा तीर्थ पर निर्मित

श्री जयन्तसेन म्युजियम

कश्मीर से कन्याकुमारी तक परिभ्रमण करने वाली
गुरु राजेन्द्र शताब्दि अखण्ड ज्योत यात्रा
रथ में विराजित दादा गुरुदेव

श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

की परम प्रभावशाली प्रतिमा
इस म्युजियम में स्थापित है....
त्रिस्तुतिक संघ के प्रत्येक गांव से स्पर्शित एवं
लाखों गुरुभक्तों द्वारा पुजित इस भव्य प्रतिमा के
दर्शन मात्र से निश्चित आनन्द की अनुभूति होती है।
दर्शनार्थ अवश्य पधारें...

सम्पर्क : **श्री जयन्तसेन म्युजियम**
पोस्ट मोहन खेड़ा, राजगढ़ जिला धार (म.प्र.)
दूरभाष : 07296-235320, मो. 94253-94906

गुरु जन्मभूमि हमारी तीर्थभूमि..... दर्शनार्थ अवश्य पधारिये.....

राष्ट्रसंत, शासन सम्राट, सुविशाल गच्छाधिपति, वचनसिद्ध आचार्यदेव
श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. जन्म भूमि पेपराल महातीर्थ में दर्शनार्थ अवश्य पधारिये...

तीर्थ प्रेरक

शासन सम्राट आचार्य श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न मुनिराजश्री नित्यानंद विजयजी म.सा.

साथ ही आप करेंगे मूलनायक मधुकर महावीरस्वामी भगवान की ६१ इंची विशाल प्रतिमाजी आदि जिनबिंम्ब की मनोहारी प्रतिमाजी, दादा गुरुदेव की विशाल ५१ इंची प्रतिमाजी आदि गुरु परंपरा एवं आचार्य श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. की जीवित प्रतिमा जी के दर्शन। विश्व का प्रथम ऐसा मंदिर जिसकी स्पर्शना हेतु सीढी नहीं रेम्प के माध्यम से पहुँचा जा सकता है। सिद्धार्थ-त्रिशला, ऋषभ-केशरी एवं स्वरूप-पार्वती मातृ स्मृति मंदिर के दर्शन का लाभ।

तीर्थ परिसर में निर्माण हो चुका है....

साधु भगवंतों के ठहरने का उपाश्रय
श्री जयन्तसेनसूरि चैतन्य आराधना भवन
आचार्यश्री जन्मभूमि स्थित कुटिया पर विशाल स्मारक
जामराणी चबूतरा

तीर्थ परिसर में निर्माणाधीन है....

- मधुकर शान्ति यात्रिक भवन
- मधुकर उत्तम आराधना भवन
- मधुकर यतीन्द्र आराधना भवन

निवेदक : गुरु जयन्तसेनसूरि जन्मभूमि जैन शासन प्रभावक ट्रस्ट पेपराल (गुज.)

भारत सरकार पंजीयण क्रमांक 13067/57
Regd. News Paper Under Regn. No. CPMG KA/BG (S) 2005/2006-08
एल/RNP/MP/MANDSAUR/113/15-17
Posting Date at Mandsour on 3rd Day of Every Month. कुल पृष्ठ कवर सहित 96

दुनिया से सहारा क्या लेना, तेरा एक सहारा काफी हैं ।
देखूं तो क्या देखूं गुरुदेव, तेरा एक नजारा काफी हैं ।।

सुविशाल गच्छाधिपति, जैनाचार्य, परिषद् प्रेरणापुंज
राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.
के चरण कमलों में संघवी शेषमलजी रामाणी परिवार का
कोटी - कोटी वंदना

संघवी शांतिलाल रामाणी

राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष : अ.भा. श्री सौधर्म वृहत्तपोगच्छीय जैन श्वेतांबर त्रिस्तुतिक श्रीसंघ
राष्ट्रीय परामर्शदाता : अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद्
राष्ट्रीय संयोजक : शाश्वत धर्म
चीफ आर्गनैजर : आ.प्र. बुलियन गोल्ड सिल्वर एंड डायमंड मर्चन्ट्स एसोसिऐशन
शाश्वत अध्यक्ष : नेल्लोर डिस्ट्रीक्ट बुलियन एंड डायमंड मर्चन्ट्स एसोसिऐशन
अध्यक्ष : श्री जैन श्वेताम्बर मूर्ति पूजक संघ - नेल्लोर

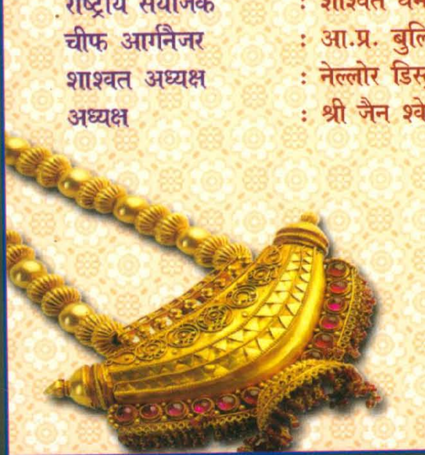

SHANTILAL & SONS
JEWELLERS
DIAMONDS • GOLD • SILVER
Nellore - 524 001 (A.P)

If undelivered please Return to Shaswat Dharma, Dhanmandi, Mandsaur-458001